लोक साहित्य समिति-ग्रन्थमाला —२

# उत्तर प्रदेश
के
# लोकगीत

*

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक
सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ

शक संवत् १८८१

मूल्य
२ रुपये ५० नये पैसे
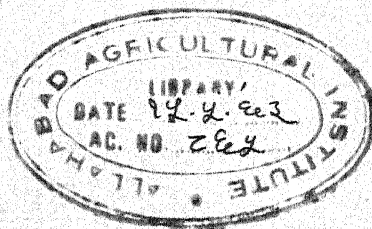


मुद्रक
तेजकुमार प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ

# लोक साहित्य-समिति

(किसी भी देश का लोक-साहित्य उस देश के जन-मानस का प्रतिबिम्ब है लोक साहित्य में जनता के जीवन का, उसके हास-विलास का, उसकी कृतियों और अनुभूतियों का यथार्थ और सरल अंकन होता है। लोक-कवि देश, काल और परिस्थिति को देखकर निर्द्वन्द्व और सहज भाव से साहित्य रचना करता है। इसका प्रमाण इतस्ततः बिखरे हुए लोकगीतों, लोककथाओं, लोकोक्तियों, लोक-गाथाओं आदि में हमें प्राप्त है। ये रचनाएँ हमारी साहित्यिक निधियाँ हैं, इतिहास की कड़ियां हैं, जीवन के चित्रों की रेखाएँ हैं। ये हमारी संस्कृति की परिचारिकाएँ हैं। इन कवियों और रचनाकारों ने अपने साहित्य में कृत्रिम, अलंकृत और संश्लिष्ट होने की चेष्टा नहीं की है। अतः इन सरल और ग्रामीण कृतियों का संकलन, अध्ययन, संरक्षण और इनके विविध रूपों का निर्धारण परमावश्यक है।

इसी दृष्टि से लोक-साहित्य के उन्नयन-तत्त्वों का अधिकाधिक समावेश करने, लोक-कलाकारों से सम्पर्क बढ़ाने तथा इनके माध्यम से जनता में अपने राष्ट्र और समाज के लिए दृढ़ता, आशा और विश्वास की भावना जागरित करने के उद्देश्य से) सूचना विभाग के अन्तर्गत लोक-साहित्य-समिति की स्थापना की गयी है। यह समिति प्रदेश की प्रमुख उपभाषाओं अथवा बोलियों के कवियों, लेखकों, गायकों और कलाकारों से और उनके प्रतिनिधियों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित कर (इतस्ततः बिखरे हुए लोक-साहित्य का संचयन) करेगी। (साथ ही लोकगीतों के विभिन्न मौलिक स्वरों की धुनों को भी सुरक्षित करने के दिशा में) आवश्यक प्रयास करेगी।

प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशन-क्षेत्र में लोक साहित्य-प्रेमी पाठकों के लिए समिति का दूसरा उपहार है।

**भगवती शरण सिंह**
संचालक, सूचना विभाग

# उत्तर प्रदेश के लोक-गीत

भारतीय आर्य भाषा
(प्राचीन वैदिक बोली)
उदीच्य
केकय, भद्र टक्क आदि
वाचड अपभ्रंश
शौरसेनीसे प्रभावित
सिन्धी
पश्चिमी पंजाबी या लहंदी
पूर्वी पंजाबी
उत्तर की पहाड़ी भाषाएँ मूलतः खश वा दर्द
खश अपभ्रंश
पहाड़ी भाषाएँ
पश्चिमी (कुल्लुई, चमेआली)
मध्य (गढ़वाली, कुमायूँनी)
पूर्वी (खसकुरा या नेपाली)
प्रतीच्य (दक्षिण–पश्चिम)
लाटी, शौरसेनी, आभीरी, अवंती
नागर अपभ्रंश
राजस्थानी
पश्चिमी
मारवाड़ी
गुजराती
जयपुरी, हाड़ौती
मेवाती, गूजरी
मालवी और निमाड़ी
मध्यदेशीय
शौरसेनी
शौरसेनी अपभ्रंश
पश्चिमी हिन्दी
कौरवी
बाँगरू
ब्रजभाषा
कनउजी
बुन्देली
प्राच्य
अर्ध-मागधी
अपभ्रंश
छत्तीसगढ़ी
बघेली
अवधी
मागधी
अपभ्रंश
पश्चिमी
भोजपुरी
मगही
मैथिल
पूर्वी
उड़िया
बंगला
असमिया
दाक्षिणात्य
महाराष्ट्री
म० अपभ्रंश
मराठी तथा कोंकणी
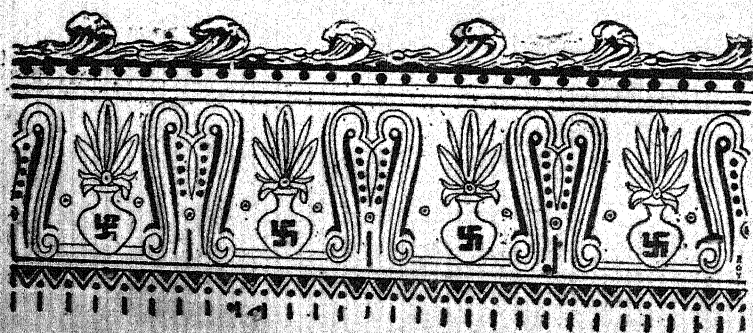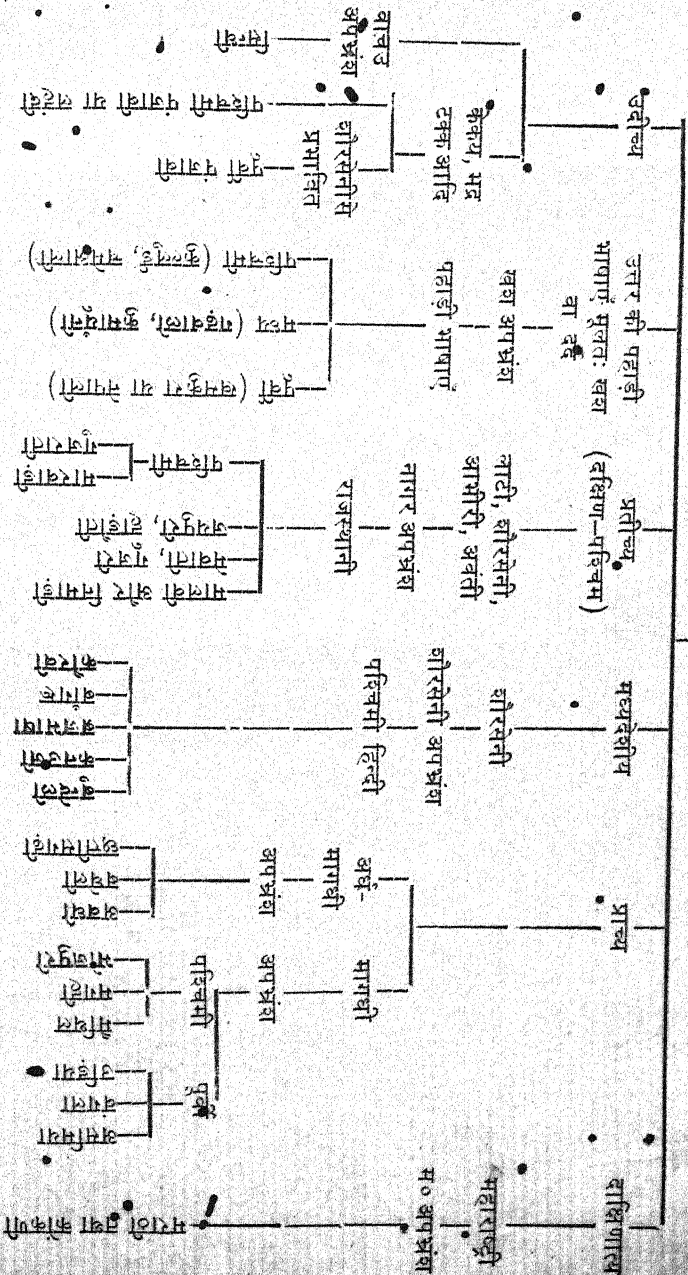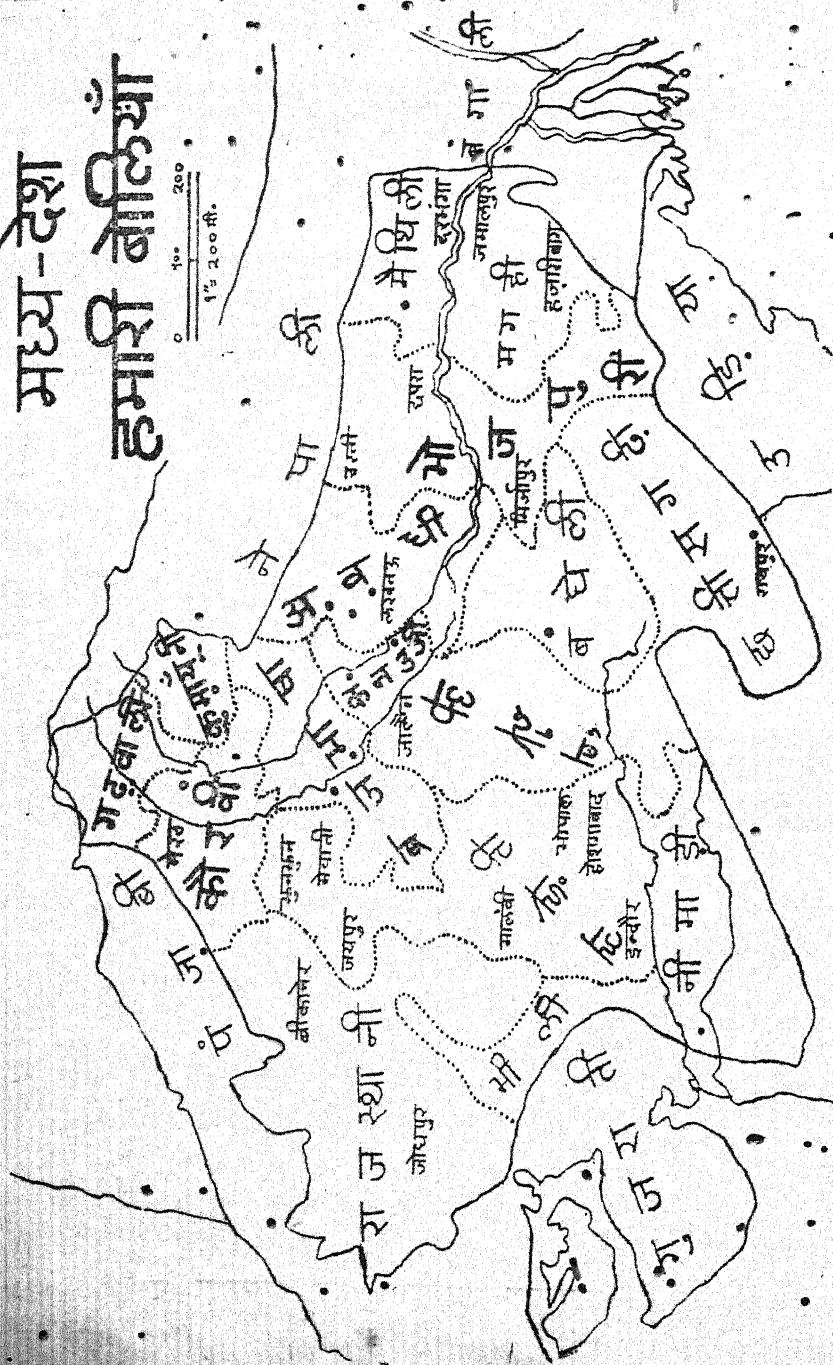
# ये लोक गीत

लोक-साहित्य की अलग मर्यादा पहले शायद स्वीकृत न भी रही हो परन्तु आज किसी न किसी रूप में इसका विशिष्ट स्वरूप सर्वमान्य ढंग से स्वीकार कर लिया गया है। वैसे तो प्राचीन काल से ही गीतों, उक्तियों और कथाओं की दो प्रकार की परम्पराएँ चली आ रही हैं, एक लिपिबद्ध और दूसरी मौखिक। यों तो लिपिबद्ध साहित्य का भी मौखिक पाठ होता आया है किन्तु शुद्ध रूप से जो मौखिक परम्परा पर आश्रित साहित्य था, उसको लिपिबद्ध करने के प्रयत्न नहीं किये जाते थे। अधिक से अधिक उद्धरण के रूप में कभी-कभी वे साहित्य ग्रन्थों में, लिपिबद्ध ग्रन्थों में दे दिये जाते थे। किन्तु यन्त्र-युग ने यह सुविधा भी हमें दी कि हम इन मौखिक परम्पराओं को भी ध्वनि और लिपि में आबद्ध कर लें। इन्हें लिपिबद्ध करने के साथ ही साथ इनकी विशिष्टताओं का अध्ययन भी होने लगा और धीरे-धीरे लोक-साहित्य की एक विशिष्ट मर्यादा बन गयी।

(संक्षेप में हम कहने को तो कह सकते हैं कि जैसी लोकतन्त्र की परिभाषा इस रूप में की जाती है कि ऐसा शासन-तन्त्र जो लोक के द्वारा लोक के लिए और लोक का होकर परिचालित हो उसे लोकतन्त्र कह सकते हैं, उसी प्रकार लोक-साहित्य की परिभाषा यों की जा सकती है कि वह साहित्य जो लोक के द्वारा, लोक के लिए और लोक का अर्थात् लोक की भाषा का साहित्य हो उसे लोक-साहित्य कहा जा सकता है।) इस परिभाषा में लोक-साहित्य की तीन मर्यादाएँ स्वतः स्थापित हो जाती हैं। पहली तो यह कि लोक-साहित्य की रचना लोक द्वारा होती है। इसका अर्थ यही है, कि लोक-साहित्य का रचयिता कोई व्यक्ति नहीं हुआ करता, वह एक विशिष्ट समूह होता है जो सामूहिक आकांक्षा के घनीभूत होते ही गीतों, उक्तियों या कथाओं में फूट

पड़ता है। वैसे तो यह मान लेना चाहिए कि किसी भी गीतकथा या उक्ति का प्रथम दर्शन किसी व्यक्ति को हुआ होगा पर उस व्यक्ति ने अपने को अपने तक इस नये साक्षात्कार को सीमित न करके अपने समूह की सम्पत्ति बना देने के लिए उतावलापन दिखाया होगा। समूह ने मिलकर उस अनुभव को अपने और अनुभवों का रंग देकर एक बिलकुल विलग अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर दिया होगा। उस अभिव्यक्ति के पीछे न केवल अनेक व्यक्तियों का अनुभव और कल्पना का परिष्कार है बल्कि अनेक कण्ठों का स्वर मेल भी है। एक उदाहरण से इसे हम स्पष्ट कर सकते हैं। एक तरंगी व्यक्ति फाग का गीत लिखता है; पर फाग का गीत अकेले गुनगुनाने के लिए नहीं है वह मण्डली में गाने के लिए है। जब वह मण्डली के साथ गीत गाने के लिए बैठता है तो उसके साथ दूसरे गाने वाले अनेक संशोधन करते हैं और अपने-अपने ताल-लय के साथ इस गीत के ताल-लय को मिलाने की कोशिश करते हैं। तब आवश्यक हो जाता है कि उस गीत के बोल कहीं-कहीं बदलें, लय कहीं-कहीं बदले और भाव भी कहीं-कहीं बदले। इन (सबके सम्मिलित प्रयत्न से वह गीत नया रूप धारण कर लेता है और तब वह व्यक्ति का गीत न होकर लोकगीत हो जाता है। कहा जा सकता है कि विद्यापति के नाम से, तुलसी के नाम से और भी अनेक रससिद्ध कवियों के नाम से बहुत से ऐसे मंगल गीत प्रचलित हैं जिनकी रचना उन कवियों द्वारा प्रमाणित नहीं है।)

इन गीतों को किस श्रेणी में रखा जाय? हमारी समझ में ये गीत भी लोक गीतों की श्रेणी में आते हैं क्योंकि तुलसी, विद्यापति आदि का नाम केवल तुलसी, विद्यापति के लोक-जीवन में अधिव्याप्त महत्व को सिद्ध करता है न कि उनके इन गीतों के कर्तृत्व को। इसी प्रकार ईसुरी, रंगपाल, छोटकन जैसे लोक-कवियों की कुछ ऐसी रचनाएँ जरूर होंगी जो इनका नाम वहन करते हुए भी परिवर्तनों और परिवर्धनों के कारण लोक की सम्पत्ति बन गयी होंगी। (यद्यपि इनकी अधिकांश रचनाएँ अब भी शुद्ध लोक-साहित्य नहीं कही जा सकतीं, अधिक से अधिक इन्हें लोक-भाषा का साहित्य कह सकते हैं) जब तक व्यक्तित्व बिलकुल विगलित न हो जाय तब तक लोक-साहित्य की रचना सम्भव नहीं होती और यह व्यक्तित्व सबसे अधिक छाया रहता है रचना के कर्तृत्व पर। अपनी रचना के कर्तृत्व के साथ व्यक्ति का बहुत विशिष्ट मोह होता है। इसे छोड़ सकना उसके लिए सम्भव नहीं होता। इसलिए जो व्यक्ति इस मोह को छोड़ कर लोक के लिए अपना कर्तृत्व अर्पित करता है वह लोक

से किसी भी माने में अभिन्न नहीं कहा जा सकता, उसकी कृति इसीलिए लोक-कृति बन जाती है।

लोक-साहित्य की दूसरी मर्यादा है कि वह लोक के लिए होता है। लोक-साहित्य का प्रयोजन लोक का ही मंगल, लोक का ही सुख-दुख-निरूपण, लोक के ही उत्सव और लोक की ही आकांक्षा की अभिव्यक्ति है। वेद के मन्त्रों की तरह प्रत्येक लोक-गीत का एक विशिष्ट विनियोग होता है और इसीलिए सर्वोत्कृष्ट लोक-साहित्य हमें संस्कार गीतों में प्राप्त होता है। ये संस्कार गीत हमारे प्रत्येक धार्मिक विधि के अनिवार्य अंग बन गये हैं। लोक-मानस का सबसे अधिक उदात्तीकरण इन गीतों में मिलता है। इनकी भाषा के ऊपर भी उपनिषदों के सहज चिन्तन और प्राचीन ऋषियों की आनन्दानुभूति की गहरी छाप है। जिस तरह उपनिषदों में एक वाक्य को समझाने के लिए उसे बार-बार उसी रूप में दुहराया जायगा और स्मृति पर चढ़ाया जायगा उसी तरह संस्कार गीतों में भी एक ही वाक्य के अर्थ की पुष्टि करने के लिए बार-बार उसे दुहराया जायगा। जिस तरह उपनिषदों की बिम्बानुबिम्ब शैली से बात समझाने की कोशिश की जाती है उसी तरह इन गीतों में भी मार्मिक प्रसंगों की अभिव्यक्ति प्राकृतिक जीवन से प्रतिबिम्ब लेकर की जाती है। इन संस्कार गीतों में इसी कारण संस्कृति की पवित्रतम धरोहर सुरक्षित है। इसमें मनुष्य की दृष्टि इतनी विशद और व्यापक है कि राम-सीता, शिव-पार्वती, कृष्ण और राधा सभी का ऐश्वर्य पिघल कर मानवीय बन जाता है। लोक-साहित्य में इसीलिए कला की विलक्षणता नहीं मिलती। सहज सौन्दर्य का बोध तो मिलता है पर छेनी की तराश का आभास नहीं मिलता क्योंकि लोक-साहित्य के रचयिता अचेतन कलाकार हैं। ठीक-ठीक कहें तो वे कलाकार भी नहीं बल्कि वह शुकदेव की तरह विश्वसत्ता की अंगभूत उपाधि से निरावृत मानव हैं। उन्हें दुःख का ज्ञान और अनुभव नहीं है और सुख की लालसा में तृप्ति है। दुःख उनकी स्मृति में है, सुख उनकी मुट्ठी में। इसी से गहन से गहन संघर्ष के बीच उनका विश्वास अडिग है, उनकी मंगल कामना अप्रतिहत है, उनका आनन्द-बोध अमन्द है। बबूल के नीचे मण्डप छाने का उत्साह, अभाव के घर में दूध-दही की नदी बहाने की कामना, धूल और गन्दगी के बीच चन्दन के छिड़काव की वासना, ननद और सास के दुर्व्यवहार का उत्तर, पुत्रोत्सव के उल्लास में अपनी उदारता से देने का संकल्प, अचेतन जगत् में अपने चेतन जगत् की परछाईं पाकर उसके प्रति मानवीय करुणा का उमड़ाव,

गहन से गहन पंक में भी अपने मन को कमल की तरह ऊँचा रखने का व्रत इस लोक-साहित्य ही ने पाला है और हमें एक जीवित जाति के रूप में आज गतिशील रखा है। उस उदात्त लोक-जीवन की परम्परा को ही इसका श्रेय है कि हमारी संस्कृति गंगा की तरह प्रवहमान सत्य बनी हुई है, क्योंकि हमारे ज्ञान के सूर्य के अस्त होते-होते आती किरणों की जाली समेटकर वे लोक-साहित्य के चन्द्रमा को सौंप गये।

इन संस्कार गीतों के अलावा लोक-साहित्य के दूसरे रूप भी हैं। ऋतु-गीत, क्रीड़ा-गीत, क्रिया-गीत, लोकोक्ति, लोक-कथा, आख्यान-गीत या लोक-गाथा इनमें भी लोक-साहित्य की मंगल प्रयोजकता स्पष्ट है। सामाजिक अन्याय के विरुद्ध विद्रोह, वैषम्य के प्रति गहरा व्यंग और प्रेम, न्याय, त्याग की प्रतिष्ठा यही इनका मुख्य रूप से प्रतिपाद्य है। जँतसार, सोहनी और रोपनी के गीतों में प्रायः एक ऐसी कहानी मिली है जिसमें कोई कामी पुरुष किसी स्त्री को प्रलोभित करने का प्रयत्न करता है। वह स्त्री बड़े कौशल से उसका प्रतिकार करती है और बड़े मीठे शब्दों में उसकी भर्त्सना करती है। सावन के गीतों में और सुवटा या चकई-चकवा के गीतों में भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध का दिग्दर्शन प्रायः कराया गया है। हमारे समाज में भाई-बहन का निश्छल और पवित्र प्रेम जो इन लोक-गीतों में मिलता है वह हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी और ऊँची विरासतों में से है। इनमें बहन अपना दुःख केवल भाई से कहती है, अपनी आस केवल भाई से पुजाती है और अपना सर्वस्व भाई के मंगल के लिए अर्पित करती है। केवल दो-तीन प्रकार के ऐसे गीत हैं, जैसे कजली, होली, और रसिया, जिनमें परकीया भाव के भी चित्र मिलते हैं और रूपाकर्षण के ग्राम्य संस्करण दृष्टिगोचर होते हैं। कहीं-कहीं तो खाली वर्णन होने के नाते इनमें उत्तान शृंगार का भी रूप आ जाता है। कुछ लोग कह सकते हैं कि यह तो शिव नहीं है, पर यह स्मरण रखने की बात है कि इन गीतों के अवसर उन्मुक्त उल्लास के अवसर होते हैं; उस समय लोग अपने को प्रकृति के साथ निर्बन्ध आनन्द की स्थिति में पहुँचा देना चाहते हैं। संकोच, दुराव, सामाजिक भेद-उपभेद इन सबको भुलाकर यह उद्दाम आवेग या तो वर्षा में आता है या बसंत में, बसंत से अधिक वर्षा में क्योंकि वर्षा ऋतु सबसे अधिक प्राणवान् और मनोहर होती है। यह अस्वाभाविक नहीं है कि सहज और मुक्त आनन्द के अवसर का कलुषित भावना वाले व्यक्ति अनुचित लाभ उठा लें। इनकी मनस्तुष्टि के लिए उन्हीं की तरह

लोक शिव परामुख गायक उद्दाम उद्दीपक रचनाएँ भी प्रस्तुत कर दें यह भी स्वाभाविक है परन्तु उनकी रचनाओं से, प्रवृत्तियों से, लोक-मानस का परिमापन करना समीचीन न होगा।

लोक-साहित्य की तीसरी मर्यादा है लोक का साहित्य होना अर्थात् लोक की भाषा में उसका रचा जाना। यह तो स्वतः सिद्ध बात है कि लोक-मानस से जो चीज निकलेगी, और सहज ढंग से निकलेगी, लोक की अभिव्यक्ति और लोक के अभ्युदय की आकांक्षा से निकलेगी, वह निश्चय रूप से लोक के माध्यम से निकलेगी और भाषा की कसौटी पर उसका खरा उतरना सबसे पहला लक्षण है और यहीं ठीक ठीक पहचान हो जाती है कि यह लोक-साहित्य खरा है या खोटा, इसमें मिलावट है या शुद्ध है, पुराना है या गढ़ा हुआ है। (भाषा की लोच, मुहावरों की बन्दिश, प्रतीकों की ताजगी, प्रतिबिम्बों की सादगी और लय की विविधता लोक-साहित्य की भाषा के प्रमुख गुण हैं।) जो लोग मिलावट करने की कोशिश करते भी हैं उनकी गलती बहुत जल्द पकड़ी जाती है क्योंकि उनका सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रयत्न भी भाषा का सहज प्रवाह अवरुद्ध कर देता है। जिन लोगों ने अपने गीतों को लोक-साहित्य से टहनी की टहनी तोड़ कर हरियाली देनी चाही उनके गीत पनप नहीं सके और लोक-साहित्य की भाषा शिष्ट साहित्य से भिन्न इस माने में है कि वह केवल लोक-भाषा नहीं है। शिष्ट साहित्य को लोक-भाषा में लिखा जा सकता है पर उसकी लोक-भाषा भी लिखित भाषा की ही तरह प्रयत्न पूर्वक सँवारी और माँजी हुई होती है, उसमें अनगढ़पन नहीं होता। यह कहना कि लिखे-पढ़े आदमी जब साहित्य रचेंगे तब वह कृत्रिम साहित्य रचेंगे और जब अनपढ़ आदमी साहित्य रचेंगे तो उसकी भाषा सहज होगी, केवल अंश-सत्य है। व्यक्ति जब अपने अहम् में रहकर साहित्य रचेगा तो चाहे जिस भाषा में रचे, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या न हो, वह सुनी हुई या जानी हुई साहित्य परम्परा के आधार पर ही प्रयत्नपूर्वक ही अपनी बात अधिक अच्छे ढंग से कहने की कोशिश करेगा। (लोक-साहित्य की सहजता का कारण उसका अशिक्षित जनता में प्रचार या अशिक्षित जनता द्वारा रचा जाना नहीं, बल्कि उसकी सहजता का मर्म है उसकी लोककण्ठ द्वारा स्वीकृति, उसकी कसौटी है लोगों की लय मिला देना। उसे अलंकार की परवाह नहीं है, उसे चिन्ता है समताल की और इसीलिए उसकी चिर नवीनता सुरक्षित है। वह पुनरुक्ति से नहीं डरती बल्कि उल्टे पुनरुक्ति से और भी बल प्राप्त करती है। शब्द की तो

बात ही क्या, पंक्ति की पंक्ति इसीलिए दुहरायी जाती है कि दुहराये जाने के कारण वह और भी अर्थवती हो जाय। वही मूर्त्त प्रतीक ध्यान में लाया जाता है जो प्रत्येक घर में सामने आता है। इन्हें बदलने की कोशिश नहीं की जाती क्योंकि उससे लय नष्ट होती है। अपने आप लय-माधुरी से उसका सहज अलंकरण उसी प्रकार हो जाता है जिस प्रकार टहनी पर खिले हुए फूल को किसी टीके की जरूरत नहीं होती कि उसको चमकाये या दीपक की लौ को किसी रेशमी परिधान की जरूरत नहीं होती कि उसे और द्युतिमान् बनाये। लोक-साहित्य की भाषा प्रातःकाल के निराभरण गगन की जीती-जागती भाषा है, उसमें प्रकाश है, प्रत्यग्रता है, अविमृष्ट सौरभ है और पक्षियों के कलालाप का माधुर्य। कहा जा सकता है कि भाषा तो समाज के संस्कार की देन है, उसका प्राकृतिक रूप क्या होगा ? इसका समाधान यही है कि जब वे थोड़ी ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं तो वे हलके हो जाते हैं, जब अनुभूति गहराई पर पहुँच जाती है तो वह शून्य हो जाती है अर्थात् वह आडम्बर-विहीन हो जाती है और एक व्यक्ति की नहीं समग्र जाति की, एक क्षण की नहीं बल्कि युगों-युगों की अनुभूति जिसमें उतरे वह भाषा सीधी-सादी और अर्थवान् क्यों न हो, क्यों न उसमें जीवन का उच्चतम ज्ञान और गहनतम अनुभव एक साथ प्रतिध्वनित हों। यह समझना कि लोक साहित्य की रचना असंस्कृत जीवन की रचना है सबसे बड़ा प्रमाद होगा क्योंकि संस्कृत का जो शाश्वततम राग हो सकता है वही लोक-जीवन का श्वास बनकर मुखरित होता है। संस्कृति का क्षणभंगुर उपकरण लोकजीवन तक नहीं पहुँच पाता और इसीलिए लोक जीवन के श्वास-प्रश्वास से मुखरित होने वाला स्वर जिस राग को गुंजरित करता है वह संस्कृति का सबसे मर्मभूत, सबसे अनश्वर और सबसे शिवप्रद राग होता है। हमारा लोक-साहित्य हमारे उस उदात्त और महान् संस्कृति का अंकुर सींचता रहा है जिन्हें आँधी-पानी से लोक-जीवन में ओट मिल सका।

लोक-साहित्य का अध्ययन विगत शताब्दी से ही प्रारम्भ हुआ। अध्येताओं की दृष्टि तीन प्रकार की रही है। एक तो शुद्ध संकलन की या भाषान्तर की। संकलन का अभिप्राय भाषा-विज्ञान के अध्ययन या लोक-जीवन का परिचय कराना रहा है। इन अध्येताओं में सर जान ग्रियर्सन, श्री लाल बिहारी दे, श्री रामनरेश त्रिपाठी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। दूसरे प्रकार के अध्येता वे रहे हैं जिन्होंने लोक-साहित्य की व्याख्या देने की कोशिश की है और तीसरे प्रकार के वे लोग हैं जिन्होंने लोक-साहित्य के वैज्ञानिक

विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है और व्याख्या से ऊपर जाकर लोक-साहित्य में संचित सामग्री के आधार पर इतिहास, समाज-शास्त्र और नृ-तत्व के सम्बन्ध में नया प्रकाश पाने की कोशिश की है।

लोक साहित्य के मुख्यतया चार प्रकार हैं।

१—लोक-गीत

२—लोक-कथा

३—लोकोक्ति

४—लोक-गाथा अर्थात् लोक-आख्यानक।

उक्त लोक-गीत स्वयं ४ प्रकार से विभाजित किये जा सकते हैं—

(क) संस्कार गीत—जन्म, मुण्डन, जनेऊ, विवाह आदि अवसरों के गीत।

(ख) ऋतु गीत—सावन, कजली, होली, चैता, बारहमासी, राछरा आदि।

(ग) क्रिया गीत—जंतसार, निराई, रोपनी, बुआई और फसल कटाई के गीत।

(घ) शिशु एवं क्रीड़ा गीत—शुद्ध मनोरंजन के गीत।

इन गीतों के प्रकारों की टेकनीक अलग होती है। टेकनीक के साथ-साथ विषय और मूल-भाव भी अलग होते हैं। संस्कार के गीतों में मंगल की आकांक्षा सबसे अधिक बलवती होती है। अधिकतर उनमें समृद्धि के स्वप्न संचित रहते हैं। पूर्वजों से आशीर्वाद लेने की विनम्रता दिखायी जाती है, या जिस अवसर का वह गीत है उस अवसर की सामाजिक व्यवस्था पर अत्यन्त मधुर ढंग से भाव व्यक्त किया जाता है। क्रिया गीतों में प्रायः जो तान ली जाती है वह सम्बन्धित क्रिया के लय के अनुरूप होती है, जैसे जाँते के गीत में जितना समय लगता है उतने में एक कड़ी पूरी उतर जाती है और गीत का विराम अत्यन्त स्वल्प होता है। निराई के गीतों में बड़ी लम्बी तान ली जाती है। रोपनी के गीतों में लय ऐसी चलती है कि मानों एक ऊँची लहर गिर रही हो और फिर उठ रही हो। क्रीड़ा-गीतों में बाल-सुलभ चपलता का प्रदर्शन ही मुख्य लक्ष्य रहता है। बहुत से ऐसे गीत होते हैं जो गेय नहीं होते। यद्यपि लय-बद्ध वे भी होते हैं, पर उनके उच्चारण भी कभी-कभी बहुत जल्दी-जल्दी होते हैं। ऋतु-गीतों का मुख्य उद्देश्य है ऋतु के साथ मनुष्य के जीवन के उल्लास के स्वर मिलाना। इनकी लयों का प्रभाव ऋतुओं से सम्बद्ध शास्त्रीय रागों पर भी पड़ा है जैसे कजरी का प्रभाव मल्हार पर, होली का बसंत पर।

आख्यानक गीत बड़े लम्बे होते हैं और जिनमें कोई न कोई प्रेम-कहानी वीरता के कीर्ति-गान के साथ संग्रथित मिलती है। ये अवकाश के समय गाये जाने वाले गीत होते हैं। प्रायः जाड़े में या वर्षा में जब किसान को अपने काम से फुरसत रहती है तब देवी के स्थान पर, चौपाल में या कहीं पीपल के पेड़ के नीचे ये लम्बे आख्यान गीत हफ्तों तक चलते हैं। इनमें चढ़ाव-उतार बड़ा विषम होता है। बहुत मन्द गति से प्रारम्भ होकर ये अत्यन्त द्रुत गति में चले जाते हैं। जैसे-जैसे ओज आता है वैसे-वैसे द्रुत की गति और तीव्र होती जाती है और फिर एकाएक उतार हो जाता है जब करुणा का प्रदर्शन अभिप्रेत होता है।

वस्तुतः लोक-साहित्य के अध्ययन की सही दृष्टि संकलन या व्याख्या नहीं है; सही दृष्टि है उसके द्वारा लोक-मानस के मर्म का संस्पर्श, उसके द्वारा लोक-मानस के ऊपर युगों-युगों से पड़े हुए प्रभावों का आकलन। इसमें सन्देह नहीं कि इधर १०-१५ वर्षों से लोक-साहित्य के अध्ययन की दिशा में हिन्दी में सही दिशा में प्रयत्न हुए हैं। हिन्दी के सभी प्रमुख लोक-भाषाओं में संकलन और अध्ययन के द्वारा लोक-मानस के साक्षात्कार का प्रयत्न किया गया है। यहाँ सबका नाम गिनाना अप्रासंगिक होगा पर उल्लेखनीय बात यह है कि इन सभी अध्ययनों के पीछे भारतीय लोक-जीवन की एकता और उदात्तता मुख्य प्रेरक शक्ति है। यह एक शुभ लक्षण है और यद्यपि अब इस दिशा में कार्य करने को बहुत अधिक शेष है, तब भी यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि लोक-साहित्य के अधिकांश अध्येताओं में लोक-साहित्य की सच्ची परख है और वे लोक-जीवन के मर्मभूत सत्य को मथ कर निकालने की कोशिश कर रहे हैं।

(यों तो हिन्दी के अंचल में मैथिल, मगही, भोजपुरी, अवधी, बघेलखण्डी, छत्तीसगढ़ी, बुन्देली, ब्रज, कनउजी, कौरवी, गढ़वाली, कुमायूंनी, मारवाड़ी, मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी, बाँगड़ू, हरियाणी आदि अनेक लोक-भाषाओं का विस्तार है परन्तु उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली ६ लोक-भाषाएँ हैं, जिनका क्षेत्र-विस्तार इस प्रकार है—

भोजपुरी—गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया, वाराणसी, बस्ती (हरैया तहसील को छोड़कर), जौनपुर (केवल केराकत), मिर्जापुर (दुद्धी और चुनार)।

अवधी—हरैया तहसील (जिला बस्ती), फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, बाराबंकी, लखनऊ, रायबरेली, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर (शेष भाग), मिर्जापुर (शेष भाग), इलाहाबाद, फतेहपुर, बाँदा (पूर्वी), कानपुर (अधिकांश), उन्नाव ।

कनौजी—फर्रुखाबाद, हरदोई, इटावा (उत्तरी अंश), मैनपुरी (पूर्वी), कानपुर (दक्षिणी-पश्चिमी) ।

ब्रज—आगरा, मथुरा, अलीगढ़, एटा, इटावा (शेष) बुलन्दशहर (दक्षिण), मैनपुरी (पश्चिमी)।

बुंदेली—जालौन, झाँसी, हमीरपुर, बाँदा ( अधिकांश )

कौरवी—बुलन्दशहर (शेषभाग), मेरठ, मुजफ्फरनगर, बँदायूँ, सहारनपुर, बिजनौर, देहरादून (दून वाला भाग)

गढ़वाली—देहरादून (पहाड़ी ), टेहरी, गढ़वाल ।

कुमायूँनी—अलमोड़ा, नैनीताल ।

रुहेली—बरेली, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, रामपुर, पीलीभीत, हरदोई ।

इन लोक-भाषाओं में भी सबसे अधिक कार्य भोजपुरी, बुन्देली, अवधी, और ब्रज में हुआ है । शेष में अभी संकलन का कार्य भी यथेष्ट मात्रा में नहीं हुआ है । परन्तु यह भी सत्य है कि अभी इन सभी कार्यों को समन्वित करने और इनके आधार पर उत्तर प्रदेश के लोक-जीवन को एक अखण्ड रूप देने की कोशिश नहीं की गयी है ।

(अभी तक जो भी प्रयत्न हुए हैं उनका उद्देश्य आंचलिक संस्कृति पर बल देना रहा है । वस्तुतः ध्यान से देखने पर यह पता चलेगा कि सर्वत्र एक-सा उल्लास है, एक-सी मंगलाकांक्षा है, एक-सा अन्याय के प्रति विद्रोह है और एक सा अजर-अमर विश्वास है । यही नहीं, अर्थ की अनुहारता के साथ ही साथ लय की अनुहारता स्पष्ट रूप में लक्षित होती है । आज आवश्यकता इसी दृष्टि से अध्ययन करने की है । इसके साथ ही लोक-साहित्य के संरक्षण की भी समस्या हमारे सामने बड़े दुरन्त रूप में है, विशेष रूप से लोक-गीतों के । न केवल मूल लयों में अपमिश्रण हो रहा है, बल्कि बाजारू रुचि की पूर्ति के लिए ऐसे भरती के शब्द और भाव भरे जा रहे हैं कि लोक-साहित्य के मूल स्वर के विकृत हो जाने की बड़ी तीव्र आशंका उपस्थित हो गयी है ।)

प्रस्तुत प्रयत्न उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लोक-साहित्य के संरक्षण और अभिवर्धन के लिए नियुक्त लोक-साहित्य समिति की दूसरी भेंट है । लोक-

साहित्य समिति ने सबसे अधिक इस पर बल दिया है कि लोक-जीवन का प्राणवान् और मांगलिक रूप उभरे; साथ ही उसके मूल रागों की रक्षा हो। इस संग्रह में जो गीत संकलित किये गये हैं वे प्रकाशित सामग्री के आधार पर नहीं बल्कि कई स्थानों में उस गीत को सुनकर और उन विभिन्न संस्करणों की सम्यक परीक्षा करके ही ये गीत चुने गये हैं। हमारा विचार था कि हम इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्वर-लिपि और भारतीय स्वर-लिपि में कुछ प्रसिद्ध लोक-प्रचलित धुनों का रूपान्तर भी देते परन्तु वह स्वल्प समय सम्भव न हो सका।

इस संग्रह में भोजपुरी, अवधी, व्रज, बुन्देली, कौरवी, गढ़वाली, कुमायूँनी केवल इन सात लोक भाषाओं के गीत संकलित किये गये हैं। गीतों के चुनाव में लय, अवसर और शैली की विविधता का ध्यान भी रखा गया है। साथ ही तुलनात्मक अध्ययन के लिए सामान्य या तुल्य अवसर के गीत देने की कोशिश की गयी है। कुमायूँनी और गढ़वाली गीतों को छोड़कर शेष लोक-भाषाओं का मूल पाठ ही केवल दिया गया है। खड़ी बोली में रूपान्तर देना अनावश्यक समझा गया, क्योंकि इन गीतों की भाषा बहुत स्पष्ट और बोधगम्य है। पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में, पाठकों की सुविधा के लिए गीतों में प्रयुक्त कुछ शब्दों के अर्थ और गीतों के नाम तथा उनकी रूपरेखा का संक्षिप्त वर्णन भी प्रस्तुत कर देने की चेष्टा की गयी है।

इस संग्रह के प्रकाशन में समिति के अध्यक्ष श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, मेरे पूर्ववर्ती सचिव श्रीविद्यानिवास मिश्र, श्रीकृष्णानन्द गुप्त तथा अन्य सदस्यों और संकलनकर्त्ताओं से जो सहयोग मिला है, उसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

इतनी लोक-भाषाओं के लोक-गीतों का एक साथ ऐसा संकलन अभी सम्भवतः यह पहला होगा। हमें विश्वास है कि इस संग्रह का हिन्दी लोक-साहित्य प्रेमी आदर करेंगे और समिति के कार्य को आगे बढ़ाने में प्रोत्साहन देंगे।

**काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर'**
सचिव
लोक साहित्य समिति

---

# भोजपुरी लोकगीत
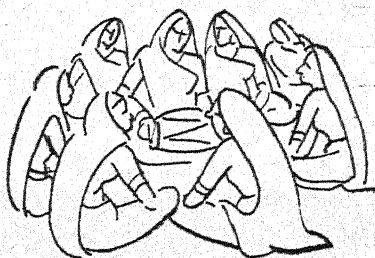
संकलनकर्ता

डा० उदयनारायण तिवारी

श्री रामविचार पाण्डेय

श्री विद्यानिवास मिश्र

## गीतानुक्रमणी

# सोहर

## १

[ इन गीतों में स्वप्न को प्रतीक रूप में ग्रहण किया गया है ]

सूतल रहलीं अटरियाँ सपन एक देखेलीं,
सासु सपना के करहु विचार सपन सुठि सुन्नर।
बभना में देखलीं पतरा लिहले पनवा ढेपारल,
दियना तऽ देखलौं तखत तरे, अमवा घवदिया हो।
चुप रहु ए बहुअरि चुप रहु, दुश्मन न सुने
बहुअर पाँच बलक तुहरे होंइहें अजोधिया के नायक हो।
बभना त हउएँ नरायन, पनवा सोहाग तोरे,
दियना त हई तोरे लछिमी अमवा सन्तति तोरे।

—गोरखपुर, तरगँवा गाँव से

२

सुन लागे दिया बिनु मन्दिर, ताल कँवल बिनु हो।
सुन लागे महल अटरिया जगह जिमीदरिया,
वोइसे सुन तिरिया के गोद, त एकरे होरिलवा बिनु।
बड़ बड़ भइलें जतनवा अउर उपचरवा हो,
अरे दीनदयाल भइलें राम त गोदिया बलक खेलें।
बँसवा के जरी जनमें बाँस, तऽ रेंड़वा के रेंड़ि जनमें।
अरे देवी कोखि जनमें दे बलक त देश के कामें आवें।
होनहर बिरवा के पात चिकन भल लागे,
अरे पुतवा के वोइसे लछनवा, नित उति बाढ़ेला।
कोरवाँ के लेइके होरिलवा, तऽ देवता मनावेली,
पुतवा के देबें भारत जननी के पूत
अइहें देसवा के काम, त जिन्दगी सफल होइहें।

—चम्पारन, मंझरिया गाँव से

## ३

[ हरिनी के इस प्रसिद्ध सोहर का यह भोजपुरी संस्करण अपनी अलग विशिष्टता रखता है । इसमें हरिणी का अन्तिम वचन बहुत ही मार्मिक है ]

मोरे पिछवरवा जमीरिया के बगिया हो, अरे जमिरी के लम्बे लम्बे पात,
जमरिया मोरे मन भावे, तेहितर ठाढ़ हरिनिया मन वैराग कइले हो ।
किया तोरे ताल झुरइलें किया र चारा थोर भइलें,
हरिनी तोरे मोरे बन भइलें, खाखर मन वैराग कइलें ।
नाहि मोरे ताल झुरइलें नाहिन चारा थोर भइलें,
हरिना नाहीं मोरे बन भइलें, खाखर मन वैराग कइलें ।
आजु रमइया जी के छठिया बहेलिया लोगवा मारि डरिहैं,

जाहु हरिनी घर आपन तू हम नाहिं भावेलू।
परवऽ रमइया जी के छठियां तरन तरि जइवै।
इतना वचन हरिनी सुनली, सुनहि नहि पावेली,
हरिनी पछवा उलटि जब चितवेली, बहेलिया लोगवा ठाढ़ भइलें।
कर जोरि विनवैं हरिनिया, सुनीं ए बहेलिया लोगवा,
हमहि के मारि गिराव, हरिन जान बकसऽ हो।
हरिनी के माँस गुमसाइन और भकसाइन,
अरे हरिना के मास सुमाँस, हरिन हम मारब।
एतना वचन हरिनी सुनली, सुनहि नहि पावेली,
पछवा उलटि जब चितवेली, हरिना मोरि जुझि गइलें।
कर जोरि विनवै हरिनिया सुनीं ए बहेलिया लोगवा,
माँस तऽ सिझे जेवनार, खलरिया मोरे बकसऽ हो।
जाहु हरिनी घरे आपन, तु हमें नहीं भावेलू,
हमरे मालिक राजा दशरथ, उनसे जा पूछऽ हो।
कर जोरि विनवै हरिनिया, सुनीं राजा दशरथ,
राजा माँसु मोरी रिझे जेवनार, खलरिया हमें बकसहु हो।
जाहु हरिनी घरे आपन, तू हमें नही भावेलू,
हमरो मलिकिनि कौसिल्या रानी उनसे जा पूछऽ हो।
कर जोरि विनवै हरिनिया, सुनीं ए कौसिल्या रानी,
माँसु मोर सिझे जेवनार, खलरिया मोर बकसहु हो।
जाहु हरिनी घर आपन तू हमें नाहीं भावेलू,
खलड़ी के खँजड़ी छवइबे रमइया हमरे खेलिहें हो।
बन बीच बोलेला पपिहा, पपिहा बोली मारेला,
हरिनी तबके तू सिह मढ़ी गरजेउ, अबे दूख रोवेलू।
का तू पपिहा बोली मारेलऽ, हमें नाहीं भावेलऽ,
एक दिन सब पर बितिहे सभै दुख रोवला।
आँगन सुन्न चउक बिनु चउक कलस बिनु,
रानी बोइसे सुन वृन्दावन, एकरे हरिन बिनु,
रानी बोइसे सुन होइहें अजोध्या, एकरे रमइया बिनु।

—चम्पारन, तुरहापट्टी गाँव से

## विवाह के गीत

### ४

### ( द्वारचार )

बाजत आवेला रुनझुन बाजन, घुमरत आवेला निशान,
नाचत आवै पतरेंगवा समधिया विहँसत दुलरू दमाद।
कँहवा बइठइबें में आजन-बाजन, कँहवा हनइबें निशान,
कँहवा बइठइबें पतरेंगवा समधिया कँहबा ई दुलरू दमाद।
बगियाँ बइठइबें में आजन बाजन, दुर खेत हनइबें निशान,
दुअरे बइठइबें पतरेंगवा समधिया, मँड़वे में दुलरू दमाद।
का ले समधवों में आजन बाजन, का ले समधवों निशान,
का ले समधवों पतरेंगवा समधिया, का ले दुलरू दमाद।
दही दे समधवों में आजन बाजन, दूध दे समधवों निशान,
दान दहेज पतरेंगवा समधिया, कन्या दे दुलरू दमाद।

—गोरखपुर, सोहगौरा गाँव से

५

एक ही बंसवा के दुई करइली, एक ही बँसुरिया एक बाँस रे,
एक ही मयेरिआ के दुई लड़किवा, एक बहिन एक भाइ रे।
भइया लिखल बाबा चउपरियाँ बहिनी लिखल दूर देश रे,
भइया कहेल बहिनी काशी म बिअहवें नित उठि करे अस्नान।
भउजी कहेली ननदा मोरँग बिअहवें न केहु आवै न जाइ,
बाबा त दिहलें अनवन सोनवा, मइया जो लहरा पटोर।
भइया जो दिहल चढ़ने के घोड़वा भउजी महुरवा के गाँठ,
बाबा के सोनवा उठि-पठि जइहैं, फाटि जइहैं लहरा पटोर।
भइया के घोड़वा मैं नगर कुदइबें, भउजी के अपजस होइ,
आउ ननदोइया पलँग चढ़ि बइठहु, ले जाहु बैरिनि मोर।
बैरिनि बैरिनि जनि कहु, सरहजि, बैरिनि प्राण अधार,
एही बैरिनिया के कारन सरहजि देखलीं नगर तोहार।
कि आ तो भउजी नुनवा चोरवलीं, कि आ तेल दीहलीं ढरकाइ,
कि आ तोर भउजी भइया गरिअवलीं काहे भइली बैरिनि तुहार।
नाहीं मोर ननदा हो नून चोरवलू, नाही तेल दीहलू ढरकाइ,
नाही मोर ननदा हो भइया गरिअवलू,
एक रसोइया के कारन ननदा भइलू बैरिनि मोर।

—गोरखपुर, परतावल गाँव से

## भोर

६

[ यह गीत विवाह के पाँच दिन पूर्व पितृ-निमंत्रण के रूप में गाया जाता है ]

ए भोर रे भइलें भिनुसार चिरइया एक बोलेले मिरूग बन चूंगेले,
ए भोरे खेतवन हर लेके चलें हरवहवा त बहुवर जाँते।
ए जाइ रे जगावहु कौन बाबा जासु दुहावन,
ए नाहीं मोरे धेनु न गाभिन सब मोरे ऊसर।
ए दुधवा न आवेला बँहिगवा त मठवन नारि बहै।

—गोरखपुर, पकड़डीहा गाँव से

## संझा

### ७

[ यह गीत विवाह के पाँच दिन पूर्व सन्ध्या समय गाया जाता है ]

कत्थी कइ दियना कत्थी कइ बाती कत्थी कइ तेलवा जरेला सारी राती,
सोने कइ दियना रूपै कइ बाती सरसों के तेलवा जरेला सारी राती।
जरिउ दीप जरिउ दीप सारिउ राती जबले दुलहा दुलहिन खेलें चौपर,
जरिभइलें तेलवा सँपूरन भइली बाती जँघिया लागलि दुलहिनदेइ गइली अलसाइ।

—देवरिया, सिरजम गाँव से

## जोग

८

बँसहर घरवा ए ऊधो, रामा, झिलिमिल बाती,
पिया ले के सूतलीं ए ऊधो, रामा अँचरा डसाई।
जो हम जनितीं ए ऊधो, रामा पिय जइहें पराई,
रेसम के डोरिया ए ऊधो, रामा घींचि बान्हि बन्हितीं।
रेसम के डोरिया ए ऊधो, रामा फाटि फूटि जइहें,
नयन के बान्हल पियवा, ऊधो से काहाँ पइबों।
जवनी डहरिया ए ऊधो, रामा पिया गइलें चोरी,
तवनी डहरिया ए ऊधो, रामा बगिआ लगइबों।
बगिया का कोने ए ऊधो, केरा अउ नरियर,
बिचवा में चन्दन लगाई, रामा पिया के मनइबों।
अंगना भसुर जी ए ऊधो, दुअरा ससुर जी,
कइसें बाहर जाइँ ऊधो, रामा बाजेला नुपुरवा।
गोड़ के नुपुरवा ए ऊधो, रामा फाँड़े बान्हि लेबों,
अलप जोवनवाँ ए ऊधो, हियरा में सटाई।
पात मधे पान ए ऊधो, फर मधे नरियर,
तिरिया मधे राधा ए ऊधो, पुरुख में कन्हाई।

—बलिया, पीपरपाँती से

९

नदिया का तीरे मालिनि दोना लगावेली
दौना के घनी फुलवारी ए।
साँझे के छूटलि कन्हइया के गइया
चरि गइली घनी फुलवारी ए।
गइलि चरि गईली बेइलि चरि गइली
चरि गइली चंपा के डाढ़ ए।
तीनू फूल मोरा चरि गइली गइया रे
मउरेला चंपा के डाढ़ ए।
बरिजऽ कन्हइया तूँ आपन गइया
चरि गइली घनी फुलवारी ए।
झरा रे झरोखा चढ़ि सासु निरेखेली
कँत दल आवे बरिआति ए।
हथिया अचास आवे, घोड़वा पचास आवे
कत्थक आवेला बईस ए।
कत्थक कत्थक जनि करऽ सरहजि
कत्थक राउर बरिआति ए।
मुहें पटुक देके बोलेले कवन दुलहा
सासु जी से अरज हमार ए।
हाथी से घोड़ा सासु कुछऊ ना लेवों
सरहज लेवे हम आइ ए।
एतना बचन सरहज सुनहीं ना पावेली,
चलली ससुर दरबार ए।
अइसन बर ससुर कतहीं ना देखेलीं
माँगेला पूत बहुआरि ए।
जनि बहु हरकहु, जनि बहु झनकहु
जनि मन करहु उदास ए।
सोनवा रुपाना बहु बरखा लदाइवि
पूत बहु रखबों छिपाइ ए।

—बलियाँ से

## गौने का गीत

१०

सुगना जै भोरवेलें आपन सुग्गी, सुग्गी चलवू हमारे ही देश
अनन्दबनवा छोड़ देहु।
जाहू तूही सुग्गा चलवें रउरे देस सुगना कवन सुख देइब
अनन्दबनवा भोर होइहैं।
आम पकेला, महुआ टपकेला, सुग्गी ववदन फरेला अनार
अनन्दबनवा भोर होइहैं।
दुलहा जो भोरवैलें अपने दुलहिनी के से दुलहिन चलऽ हमारे ही साथ
मयेरिया कोरवाँ छोड़ देहु।
जो तुइ दुलहा चलबें रउरे देस कवन कवन सुख देब
मयेरिया कोरवाँ भोर होइहैं॥
फुलवा के सेजिया बिछइबे में अतर फुहरबें,
दुलहिनी सारी रति बेनिया डोलइबें मएरिया कोरँवा भोर होइहैं॥

—गोरखपुर, बँसडीला से

## कजली

### ११

रुन झुन खोलऽ ना देवरिया, हम विदेसवाँ जइबो ना।
जो मोरे सइयाँ तूँ विदेसवाँ जइबऽ हो, तूँ बिदेसवाँ जइबऽ हो,
हमरा भइया कें बोलाइ दऽ, हम जाईबि नइहरवाँ ना।
जो तुहूँ धनिया नइहरवा जइबू हो, नइहरवा जइबू हो,
जेतना लागल बा रुपइया, ओतना दे के जइहऽ हो।
जो मोरे सैंया तूहूँ लेबऽ अब रुपइया, तूहूँ लेबऽ अब रुपइया,
जइसन बाबा घरवाँ रहलों ओइसन, कइ के देहु ना।

—बलिया से

## फगुआ

### १२

सजनी हो मन मोर मनावैं बसन्त ना आवैं । (टेक)
फूलैं फूल फरै जनि तरुवर राग फाग कोउ गावैं,
रहत उदास मोर मन दिन भर छिनहूँ नहि धीरे धरावैं ।
अम्बा मउर कूच महुआ मँह कोइलि कुहुक मचावैं,
दखिन बयारि बहत जिय जारत पीतम मोंहि जो दरसावैं ।

—देवरिया, भेंड़ी से

## झूमर

### १३

पटना सहरिया से सोना मँगवले
देखऽ यार नथिया गढ़ावें हरि अपने
देखऽ यार नथिया गढ़ावें हरि अपने।
नथिया पहिरि हम सुतली ओसरवाँ
देखऽ यार चोरी करेलें हरि अपने,
देखऽ यार चोरी करेलें हरि अपने।
चोर चोर कहि हम हरि के पकड़लीं
देखऽ यार पइयां परेलें हरि अपने,
देखऽ यार पइयां परेलें हरि अपने।
कासी सहरिया से साटन मँगवलें
देखऽ यार चोली सिआवें हरि अपने।
देखऽ यार चोली सिआवें हरि अपने।
चोलिया पहिरि हम सुतली ओसरवाँ
देखऽ यार चोलिया खोलेलें हरि अपने,
देखऽ यार चोलिया खोलेलें हरि अपने।
चोर चोर कहि हम हरि के पकड़लीं
देखऽ यार पइयां परेलें हरि अपने,
देखऽ यार पइयां परेलें हरि अपने।

—बलिया से

## निर्गुन

१४

एक तऽ मैं बारी भोरी, दोसरे पिआ का चोरी,
कि आहों मोरे रामा, तिसरे बिरह के देहिया मातल ए राम।
फूल लोढ़े गइलीं बागी, चुनरी मोरी अँटकेली,
कि आहो मोरे रामा, पिया बिना केहू ना छोड़ावेला ए राम।
सिकिया से बोरि बोरि कइलीं हाँ कजरवा हो
कि आहो मोरे रामा, टपकत लोरवा चोलिया भीजेला हो राम।
एक दिन चढ़लीं बारी पिया के अटरिया हो
कि आहो मोरे रामा, मनवा में करेली बिचार नु ए राम।

—बलिया से

# क्रीड़ा गीत

## १५

यह क्रीड़ा-गीत शरद् ऋतु के अन्त में लड़कियों की क्रीड़ा के साथ चलता है। इसमें भाई के प्रतीक के रूप में चकवा, बहिन के प्रतीक के रूप में खिड़रिच (खंजन), भउजी के प्रतीक के रूप में श्यामा और बहनोई के प्रतीक के रूप में चुँगला होता है। इन चार पक्षियों की प्रतिकृति बनायी जाती हैं और इनके साथ ही "बिन्द्राबन" और पहाड़ भी बनाये जाते हैं। कार्तिक में गोधन के दिन डाले में इन्हें रखकर लड़कियाँ किसी कुएँ या परती में चराने जाती हैं। डाले में रखने का पहला गीत है—

## पहला गीत

डाल ले बहुरी भइली खिड़रिच बहिनी चकउआ भइया डाला ले ले
छोर त ए राम सजनी ।
सभवा ही बइठल बाबा हो बढ़इता मोर डाला देहूँ दिआई त ए राम सजनी ।
कथीअन के तोरे डलवा ए बेटी कथुवे के लागल चार पात ए राम सजनी ।
सोनवन के मोर डलवा ए बाबा रुपवा लगेला चारु पात ए राम सजनी ।
देईं डारऽ पूता धिया कर डलवा धिया मोर दस दिन पाहुन ए राम सजनी ।

( भाई और बहन के नाम यथा स्थान लेकर गीत बढ़ाया जाता है । )

इसके बाद इन गीतों को गाती हुई लड़कियाँ चराने को चलती हैं—

## दूसरा गीत

माई आन दीन्हें चकउआ भइया, गँगवट मटिया बनाइ दीहें श्यामा
भउजी श्याम रे चकउआ ।
माई खेले जइबें खुने जइबें बाबा के नगरियाँ
माई खेलि खुनी बहिनी लवटें अँगनवा ।
जिअ हो चकउआ भइया लाख बरिसवा ।

## तीसरा गीत

वोहि पार चकवा भइया खेलेलें शिकार
एहि पार खिड़रिच बहिनी ओरहनवाँ लिहले ठाढ़ ।
तुहरो ओरहनवाँ रे बहिनी पटुकवा लेबें हो पसार,
बाबा के संपतिया रे बहिनी आधा देबे बाँटि ।
बाबा के संपतिया हो भइया तुहरे के बाढ़ो,
हम परदेसी बहिनियाँ मोटरिया कै हो आस ।
आव दे अगहन मसवा कटइबों बेलउर धान,
चिउरा कसरवा दे बहिनी रखबें तोरो मान ।
भार लिहलें भरइत भइया डोली लिहलें कहार,
छाता लिहलें चकवा भइया बहिनिया बोलवले जांय ।

## चौथा गीत

श्यामा खेले गइलों श्यामा भउजी के आँगन अरे श्यामा भउजी देली
लुलुआइ छोड़हु नन्दा आँगन।
कइसे में छोड़ीं भउजी आँगन,
भउजी जौ लग माई बाप राज तौ लग श्यामा खेलब।
भउजी छुटि जइहें माई वाप राज छुटिहें श्यामा खेलल।

## पाँचवाँ गीत

श्यामा खेले गइलों चकउआ भइया टोल,
दियवा धराइल ए मह्ल चकउआ ले हो गइलें चोर।
चोरवा के नइया ए भइया चुँगला बड़ा हवे चोर,
चोरवा के घींचि बान्ह बन्हिहऽ हो भइया रेशमवा कइ हो डोर।
रेशम के डोरिया ए भइया टुटि फाटि जाई,
पयना चारि मरिहऽ, हो भइया करेजवे साले हो मोर।

(बहनोई-भाई का नाम लेकर गाया जाता है)

## छठा गीत

कोठी नाही आउर-चाउर पनिघटवा नाहीं पानी,
अरे माई कवने विधि रखवे चकउआ भइया के मान।
कोठी बाढ़े अउरा-चउरा, पनिघटवे बाढ़े हो पानी,
अरे माई भले विधि रखबों चकउआ भइया के मान।

## सातवाँ गीत

भँवरा बन विन्द्रा कर बास रे भँवरा,
भँवरा ताही बाँसे छाइले चकउआ के मंदिलवा रे भँवरा।
भँवरा ताही पैठि सूतेलें चकउआ भइया रे भँवरा।
भँवरा कोरवाँ श्यामा भउजी रानी रे भँवरा,
भँवरा पैइठि जगावेली खिड़िरिचि बहिनी भँवरा,
भँवरा उठ भइया भइलें भिनुसार रे भँवरा।

भँवरा सातो इयरवा दुवरा ठाढ़ भइलें भँवरा ,
भँवरा दुअरे ढुरेला जोड़ी हंस रे भँवरा ।
भँवरा अइसन बहिनी छुलाछन रे भँवरा ,
भँवरा आधी राति बोले भिनुसार रे भँवरा ।

## आठवाँ गीत

भइया भइया चकउआ भइया रे भइया हाटे-बाटे पोखरा खनादऽ
चम्पा फुलवा लाइ देहु ।
बहिनी से बहिनी खिड़िरिच बहिनी रे बहिनी गुनि देहु गजमोती
हार बहेलिया फुलवा गमकि रही ।
भउजी से भउजी श्यामा भउजी रे भउजी सोइ रहु भइया जी के
सेजि बेइलिया फुलवा गमकि रही ।
( भाई, बहन और भौजाई का नाम लेकर गीत बढ़ता है )

## नवाँ गीत

भँवरा एहीं गाँव में लोहरा नाव का रे भँवरा ,
भँवरा श्यामा जइहें ससुरें कजरौटा चाही रे भँवरा ।
भँवरा एही गाँव में कनेल वा बसे नाव का रे भँवरा ,
भँवरा श्यामा जइहें ससुरे कलसवा चाही रे भँवरा ।
भँवरा एही गाँव में अहिरा बसे नाव का रे भँवरा ,
भँवरा श्यामा जइहें ससुरे दहेड़िया चाही रे भँवरा ।
भँवरा एही गाँव में रँगरेजवा बसे नाव का रे भँवरा ,
भँवरा श्यामा जइहें ससुरे चुनरिया चाही रे भँवरा ।
( इन्हें जमीन पर रख कर चराने का यह गीत है )

## दसवाँ गीत

डीमी चरु डीमी चरु चकउआ भइया रे ।
भइया इहो डिभिया बोवेले कवन भइया ,
डीभिया लहसि जामें डीभिया लफरि जामें ।

( इसी प्रकार श्यामा, खिडरिच और चुँगला के नाम लेकर उनसे
डीभी चरायी जाती हैं । )

पानी पिलाने का गीत यह है—

## ग्यारहवाँ गीत

भँवरा सूतल नयन माता कि जागल रे भँवरा,
भँवरा पानी के पियासल चकवा ठाढ़ भइलें भँवरा ।

( इसी प्रकार श्यामा, खिड़रिचि और चुँगला को पानी पिलाया जाता है )

पानी पिलाने का दूसरा गीत—

## बारहवाँ गीत

पानी पीउ पानी पीउ चकउआ भइया,
भइया रहो पोखरा खनेले कवन भइया,
पनिया हिलोर मारे पनिया कलोर मारे ।

( इसी प्रकार सबके नाम की पुनरावृत्ति होती है, इसके बाद चुँगला की दाढ़ी में आग लगती है । उसका यह गीत ह )

## तेरहवाँ गीत

चुंगला के दाढ़ी रे केहू ना बुतावै रे,
अकसर चकउआ भइया केतना बुतावें रे ।
वन बिन्द्रावन आगि लागल केहू ना बुतावें रे,
अकसर चकउआ भइया केतना बुतावें रे ।

[ आग बुझाने के बाद डाले में रखकर लड़कियाँ चकवा, श्यामा, खिड़रिच, चुँगला और बिन्द्रावन को कहीं पोखरे या नदी में सिरवा देती हैं । इस गीत में शरद् की चहचहाती प्रकृति और भाई-बहन के निश्छल प्रेम का अनूठा चित्रण किया गया है । ]

—मंझरिया, (चम्पारन) से प्राप्त

## जंतसार

१६

राम बगिया में पाँच पेड़ अमवा,
पचीस गो महुअवा बाड़े हो राम।
राम तबहूँ ना बगिया गमदेले,
एकली बेइलिया बिनु हो राम।
राम पाँच पात खईलों में पान ना,
पचीस गो सोपरिया खइलों हो राम,
राम तबहू ना मुँह भइले लाल,
त एकली खयरिया बिनु हो राम।
राम सेर भरि सोनवा पहिरलों,
पसेरी भरि चनिया हो राम।
राम तबहूँ ना देहिया सोहावनि,
एकली सेनुरिया बिनु हो राम।
राम सासु घरे पाँच गो देवरवा,
पचीस गो भसुरवा बाड़े हो राम।
राम तबहू ना ससुरा सोहावन,
एक रे कन्हैया बिनु हो राम।

—श्री कृष्णदेव उपाध्याय से प्राप्त

१७

बाबा काहे के लगवलऽ बगइचा
काहे के फुलवरिया लगवलऽ ए राम।
बाबा काहे के कइलऽ मोर बियहवा,
काहे के गवनवा ए राम।
बेटी आमवा चीखन के बगइचा
लोढ़े के फुलवरिया ए राम।
बेटी चुभुते क कइलों तोर बियहवा
दिन सोचि गवन कइलों ए राम।
बाबा सिर मोर रोवेला सेन्नुर बिनु,
नयना कजरवा बिनु ए राम।
बाबा गोद मोरा रोवेला बलक बिनु,
सेजिया कन्हैया बिनु ए राम।
बेटी लागे देहु हाजीपुर के हटिया
करम तोर बदलि देवों ए राम।
बाबा काँसवा पीतर सभ बदली
करम कइसे बदली ए राम।
बेटी सिर तोर भरबों रे सेन्नुर लेइ
नयना कजरवा लेइ ए राम।
बेटी गोद तोर भरबों रे बालक लेइ
सेजिया कन्हैया लेइ ए राम।

—श्री कृष्णदेव उपाध्याय से प्राप्त

## सोहनी का गीत

### १८

ननदी अँगनवाँ लँवग गाछि बिरवा हो,
लँवग चुएला सारी रात हो राम।
लँवग बीनि बीनि सेजिया डँसवली हो
सोवन चलेले कुँवरवा हो राम।
आगे हटु आगे हटु राजा के कुँवरवा हो
पातर चोलिया भीजेला पसेनवा हो राम।
भीजता त भीजें देहु ननदी ए भऊजी हो,
धोबी घरवा देबि हम धोवाई हो राम।
धोबिया के पुतवा जे बड़ा रँगरसिया हो
चोलिया मरोरि रस लूटे हो राम।
एताना बचनिया प्रभु सुनही ना पवलें हो
चलि भइले पुरुब मोरँग देसवा हो राम।
मचिया बइठलि तुहूँ सासु बढ़इतिनि हो
आपन बेटा देहु ना बोलाइ हो राम।
फिरू चलु फिरू चलु बबुआ अब घरवा हो
बिरही कोइलिया सेजिया बोल हो राम।

—श्री कृष्णदेव उपाध्याय से प्राप्त।

## १६

अमवा महुअवा के घनी घनी बगिया से तेही बीचे राह परी,
रामा तेहि तर ठाढ़ि एक तिवई तऽ मन में वियोग भरी।
पूछे सभ बाट बटोहिया अकेली धनी काहे रे खड़ी
भैया चलि जाहु बाट के बटोहिया हमें तोहिं कारे परी।
कि रे तोरे सासु ससुर दुख नइहर दूर बसे
नाहीं मोरे सासु ससुर दुख नइहर दुर नहीं।
भैया मोरे बालम परदेस तउ मन में वियोग भरी
बहिनी तोहरे बलमु परदेस तोहे कछु कहि के गये।
भैया देइ गइलें कुपवन तेल हरपवन सेनुर हो
भैया देइ गइलें चनन चरखवा उठाइ गज ओवरिं हो।
भैया देइ गइलें अपनी कीरिअवा कि सत जनि छोड़ेउ हो
भैया चूके लगलें कुपवन तेल हरपवन सेनुर हो।
भैया घूने लगलें चनन चरखवा ढहइ गज ओवरि हो
भैया बीते लगलीं मोरी उमरिया हरी जी नाहीं अइलनि हो।

—बलिया से

## रोपनी के गीत

### २०

बाबा मोर रहितें त नीक बर खोजीतें,
भइया खोजेलें बर गदेलवा हो राम।
से हो गदेलवा देखि धइलीं धीरजवा,
कुछ दिन में.उ गइलें परदेसवा हो राम।
बाट के बटोहिया तुहूँ मोर भइया हो,
एहि बाटे देखुअऽ मोर गदेलवा हो राम।
देखुई से देखुई बहिना हाजीपुर के हटिया,
हिरि फिरि रतन बेसाहे हो राम।
कहवाँ गँववलऽ प्रभु ठीक दुपहरिया,
कहवाँ गवँवलऽ निसुराति हो राम।
जूआ में गँववलीं हम ठीक दुपहरिया,
तासावा खेलत निसुराति हो राम।
तोहार कहलका प्रभु में ना पतिअइबों,
तुलसी के चउरवा छुई आव हो राम।
तुलसी के चउरवा छुवत हम मरबों,
सिर के सेनुरवा दुरलभ होई हो राम।
सिर के सेनुरवा प्रभु हम बलु तजबों,
सवती बिरहिया ना सहाले हो राम।
काँटवा सालेला प्रभु घरी रे पहरवा,
सवती सालेले भरि जिनगी हो राम।

—श्री कृष्णदेव उपाध्याय से प्राप्त।

## पूर्वी

### २१

सइयाँ मोर गइलें रामा पुरुबी बनिजिया,
से लेइ हो अइलें ना रस बेंदुली टिकुलिया,
से लेइ हो अइलें ना।
टिकुली मैं साटि रामा बइठलीं अटरियाँ,
से चमके लगलें ना, मोर बेंदुली टिकुलिया,
से चमके लगलें ना।
घोड़वा चढ़ल आवैं राजा के छोकड़वा,
से धड़कै लागै ना, मोर कोमल रे करेजवा,
से धड़क लागै ना।
खोलु खोलु धनिया रे बजर केवरिया,
से आजु तोरा ना, अइले सँइया परदेसिया,
से आजु तोरा ना।

# अवधी के लोकगीत
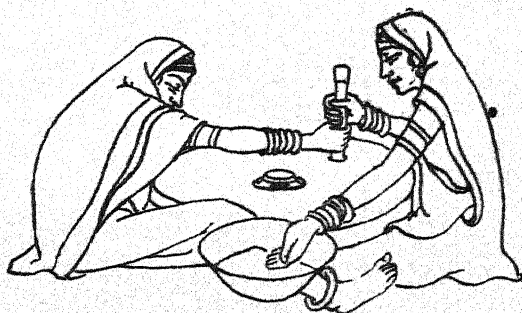
संकलनकर्त्ता
श्री श्रीकृष्ण दास
श्री रूपनारायण त्रिपाठी
श्री सत्यव्रत अवस्थी

## गीतानुक्रमणी

## सोहर

१

कवने गुना हरिअर अमवा त न जाने कवन गुना हो
ललना, न जानौ मलिया के सीचें गुना न जानै भुँइ गुना हो।
न ओहिं मलिया के सीचें से न तौ भुँइ गुना हो
ललना, रिमिकि झिमिकि दैवा बरिसइँ त ओनही के बूँद गुना हो।
पूछइँ सासु बढ़इतिनि होरिल बड़ सुन्दर हो
बहुअरि न जानी माई के सँवारे त न जानी कोखि गुना हो।
न तौ माई के सवाँरे से न तौ कोखि गुना हो
सासु, पिया मोर तप व्रत कीन्हे त ओनके धरम गुना हो।
बारह बरिस गुरू घर रहें वेद पढ़ि आयेनि हो
सासु तब घर बबुआ जनम लिहें सोहर सुनुबइ हो।
पूँछइ ससुरू बढ़इता त न जानी कवने गुना हो
बहुअरि कवन कवन तप किहेउ होरिल बड़ सुन्दर हो।
सासु कै बचन न टारेउँ न ननद तुकारेउँ हो
ससुरू, कबहू न लाई लुकी लायेउँ त न जानी ओहि गुना हो।
सुपेली खेलत कै ननदिया त भौजी से पूँछइ हो
भौजी कवन कवन ब्रत किहेउ होरिल बड़ सुन्दर हो।
स्वामीजीकै मानेउँ हुकुमवा देवर के दुलारेउँ हो
ननदी, सब कर लिहेउँ असीसवा त न जानी ओहि गुना हो।

२

जँउ मैं जनतेउँ ए लवँगरि एतना महँकबिउ
लवँगरि, रँगतेउँ छयलवा कै पागि सहरवाँ में महकत।
अरे अरे कारी बदरिया, तुहइँ मोरि बादरि हो
बादरि, जाइ बरसु वहि देस जहाँ पिय छाइ रहे।
बहइ बयारि पुरवइया त पछुआँ झकोरत हो
बहिनी दिहेउँ केवड़िया ओठँगाय सोवउँ सुख नीदरि।
कि तुहूँ कुकुरा बिलरिया, सहर सब सोवइ हो
कि तुहुँ ससुरू पहरुआ किवरिया भुड़कावहु।
ना हम कुकुरा बिलरिया न ससुरू पहरुआ हो
धनि, हम अहीं तोहरा नयकवा बदरिया बोलायेसि।
आधि राति बीति गइ बतियां तिआई राति चितिया हो
बारह बरिस कै सनेहिया जुरत मुर्गा बोलइ।
तोरबेउँ मुरुगवा कै पखना गटइया मरोरबेउँ हो
मुर्गा काहे किहेउ भिनसार त पियहिं जनायेउ।
काहे के तोरबेउ पखनवा गटइया मरोरबिउ हो
रानी, होइ गइ धरमवा कै जूनि भोर होत बोलइ।

३

छापक पेड़ छिउलिया तपत वन गहबर हो
रामा, तेहि तर ठाढ़ि हरिनियां मन अति अनमनि।
चरतइ चरत हरिनवा त हरिनी से पूछइ हो
हरिनी कि तोर चरहा झुरान न पानी बिन मुरझिउ।
नाही मोर चरहा झुरान न पानी विनु मुरझिउँ हो
हरिना, आजु राजा जी के छट्ठी त तोहइ मारि डरिहइँ।
मचियै बैठी कौसिल्या रानी हरिनि अरज करइ हो
रानी मसुवा त सीझहिं करहिया खलरिया हम्मै देतिउ।
पेड़वा से टँगबेउ खलरिया त हेरि फेरि देखतेउँ हो
रानी, देखि देखि मन समुझउतिउँ जनुक हरिना जियतइ।
जाहु हरिन घर अपने खलरिया नाहि देबइ हो
हरिनी खलरी कइ खझड़ी मिढ़उबइ त राम मोर खेलिहइँ।
जब जब बाजइ खझड़िया सबद सुनि अनकइ हो
हरिनी ठाढ़ि ढकुलिया के पेड़ हरिन के बिसूरइ।

४

पनवा की नइयाँ राम पातरि, सुपरिया अस ढुरहुर
फुलवा वरन हलुकइया, केसर अस महकै।
समुझौं मोरे राम उहै दिन, जेहि दिन जनम भये
बिन रे सूप बिन आखत भुँइया परि लोटेउ।
समुझौं मोरे राम उहै दिन जेहि दिन तिलक चढ़ी
सोने के खरौआँ मोरे बाबा, मोतिन के अच्छत।
समुझौं मोरे राम उहै दिन जेहि दिन ब्याह भये
निहुरि निहुरि भरेउँ अँगुठवा सेंदुरि पहिरायौं।
समुझौं मोरे राम उहै दिन जेहि दिन गौन लायउँ
खोली खोली पान कुँचायउ, मुसुकियन बिँहसेउ।
समुझौं मोरे राम उहै दिन जेहि दिन बन गयेउ।
बिन रे लोटा बिन डोरी पिअसवन मरि गयेउ।
समुझौं मोरे राम उहै दिन जेहि दिन बिपत परी।
कुस रे ओढ़न, कुस डासन, बनफल भोजन।

५

सुखिया दुखिया दूनों बहिनिया
दूनों बधावा लै आईं, हरे राजा बीरन ।
सुखिया लै आई गुजहरा गोड़हरा,
दुखिया दूब कै पड़ा, हरे राजा बीरन ।
सुखिया जे पूछै अपने बीरन से—
बिदा करौ घर जाई, हरे राजा बीरन ।
लेहु न बहिनी कोंछ भर मोतिया,
सैंया चढ़न का घोड़ा, हरे राजा बीरन ।
दुखिया जे पूछै अपने बीरन से—
बिदा करौ घर जाई हरे राजा बीरन ।
लेहु न बहिनी कोंछ भर कोदौ,
उहै दूब का पेंड़ा, हरे राजा बीरन ।
गउआं गोइँड़वा नँघही न पाई
दुबिया भरै लाग मोती हरे राजा बीरन ।
कोठे चढ़ी जे भौजी पुकारै,
रूठी ननँद घर लाओ, हरे राजा बीरन ।

९

कुँअवां खोदाये कवन फल, हे मोरे साहब
झोंकवन भरे पनिहारिन, तबै फल होइहैं।
बगिया लगाये कवन फल, हे मोरे साहब
राही बाट अमवा ज खइहैं, तबै फल होइहैं।
पोखरा खोदाये कवन फल, मोरे साहब
गउआ पीयें जूड़ पानी, तबै फल होइहैं।
तिरिया के जनमे कवन फल, हे मोरे साहब
पुतवा जनम जब लेइहैं, तबै फल होइहैं।
पुतवा के जनमे कवन फल, हे मोरे साहब
दुनिया अनन्द जब होई, तबै फल होइहैं।

## विवाह के गीत

७

[ प्रस्तुत गीत में पुरुष के डिगने और नारी के अडिग सतीत्व की बड़ी ही मनोवेधक अभिव्यक्ति मिलती है ]

मचियहिं बइठिनि सासु बढ़इतिनि बहुअरि पूछइँ बाति रे
जवनि बनिज सासु गयें तोर पुतवा तवने कै बाट बताउ रे।
हाथ लेहु बहुअरि तेलवा फुलेलवा अउर गंगाजल नीर रे
पूछत पूछत जायेउ बहुरिया जहाँ बसइ कन्त तोहार रे।
घोड़वा त बान्हे ओहि घोड़सरिया हथिनी लवंगिया कै डारि रे
अपुना तो सूतइँ मलिनिया के कोरवाँ मालिनि बेनिया डोलाइ रे।
कहउ त स्वामी लाउँ तेलवा फुलेलवा कहउ त दाबउँ पाँवँ रे
कहउ त एक छिन बेनिया डोलावउँ कहउ लवटि घर जाउ रे।
काहे के लइहो धना तेलवा फुलेलवा काहे के दबिहउ पाँव रे
काहे के एक छिन बेनिया डोलइहो तुम रे लवटि घर जाउ रे।
उँचवइ उँचवइ जायेउ रे रनिया खलवाँ परग जिनि दिहेउ रे
पुरुख पराया जिनि चितयेउ रे रनिया आखिर-होब तोहार रे।
उँचवइ उँचवइ जावै रे स्वामी खलवाँ परग नहि देब रे
पुरुख पराया मोरँ भइया-भतिजवा कवनै जुग होइब हमार रे।

८

काहें बिनु सून अँगनवा ए बाबा
काहें बिनु सून लखराँव हो।
काहें बिनु सून दुअरवा ए बाबा
काहे बिनु पोखरा तोहार हो।

धिया बिनु सून अँगनवाँ ए बेटी
कोइलरि बिनु लखँराव हो।
पूत बिनु सून दुअरवा ए बेटी
हंस बिनु पोखरा हमार हो।
कइसे कै सोहइ अँगनवा ए बाबा
कइसे कै सोहइ लखराँव।
कइसे कै सोहइ दुअरवा ए बाबा
कइसे सोहइ पोखरा तोहार हो।
धरम से बेटी जनमिहइँ ए बेटी,
सेवा से आम तैयार हो।
तप से जनमिहइँ पुतवा ए बेटी
दान से हंसा मझधार हो।
का देइ बोधबेउ बेटी ए बाबा
का देइ अमवा कै पेड़ हो।
का देइ पुतवा मनइबेउ हो बाबा
का देइ हंसा मझधार हो।
धन देइ बिटिया समोधबेउँ ए बेटी
जल देइ अमवा कै पेड़ हो।
भुइँ देइ पुतवा मनइबेउँ ए बेटी
अन देइ हंसा मझधार हो।
का देखि मोहइ जनवसवा ए बाबा
का देखि रसना तोहार हो।
का देखि हियरा जुड़इहइँ ए बाबा
का देखि नैना जुड़ाइ हो।
धिया देखि मोहइ जनवसवा ए बेटी
अमवा से रसना हमार हो।
पुतवा से हियरा जुड़इहइँ बेटी
हंसा देखि नैना जुड़ाइ हो।

९

[ बर विवाह के लिए अपने घर से प्रस्थान करते समय माँ का दूध पीता है, उस समय का यह गीत है । ]

तू त चलेउ पूता गोरी बिआहन
दुधवा कै मोल कइ लेहु रे ।
सरग तरइया माई कब लौं गिनबइ
दुधवा कै मोल कइसे होइ रे ।
गइया कै दूध माई, हटिया बिकाई
माई कै दूध अनमोल रे ।
गौरी बिआहि जब लौटब मोरी माता
एतनी बचन सुनि लेउ रे ।
हमहूँ त होइबइ बाबू कै सेवकिया
मोरी धन दासी तोहारि रे ।

१०

नीर चुवत बाबा, नीर चुवत है
नीर चुवत आधी रात हो।
अइसनें बबइया नीद परतु कइसे
जेहि घर बेटी कुआँरि हो।
ताले कै पानी पताले गयें बेटी
पुरइनि गइँ कुम्हिलाइ हो।
गंगा जमुना बिच रेती परतु है
कइसे कै रचहुँ बिआह रे।
जरेंहि बबइया तोर अन धन सोनवा
बिछुरइँ लहेसरि गाइ रे।
बिछुर्राहि बाबा तोरा राज दुलरुवा
जेन मोर रचहिं बिआह रे।
तलवा कै पनिया हुमकि बाढ़इँ बेटी
पुरइनि हालर देइ रे।
गंगा जमुना बिच नइया चलतु हैं
अब बेटी रचबइ बिआह रे।
बाढ़इँ बाबा तोर अन धन सोनवा
बाढ़इँ लहेसरि गाइ रे।
बाढ़इँ बाबा तोर राज दुलरुवा
जेन मोर रचहिं बिआह रे।
फूल झरत बाबा, फूल झरतु हैं
फूल झरत आधि राति रे।

११

बाबा बाबा गोहरावौं, बाबा नाहीं जागें
देत सुनर एक सेंदुर भइउँ पराई
भैया · भैया गोहरावौं, भैया नाहीं बोलें
देत सुघर एक सेंदुर, भइउँ पराई
बन में फूलइ बेइलिया अतिहि रूप आगरि
मलिया हाथ पसारइ तू हो जा हमारि
जनि छूवौ ए माली, जनि छुव अबहि कुँवारी,
आधि राति फूलहइँ बेइलिया तऽ होबै तुम्हार।
जनि छूवौ ऐ दुलहा जनि छुवौ अबहिं कुँवारि,
जब मोर बाबा संकलपें तऽ होबै तुम्हारि।

## १२

हटियन सेंन्हुरा महँग भयें बाबा चुनरी भई अनमोल ।
एक रे सेंन्हुरवा कै कारन बाबा छोड़ेउँ में देस तोहार
बाबा कहें बेटी दस कोस ब्याहौ भइया कहै पाँच कोस ।
अम्मा कहे बेटी नगर अजोधिया, प्रात उठि सरजू नहाँय
बाबा जे दिहिन अनधन सोनवा, अम्मा जे लहरा पटोर ।
भइया जेसे दिहिन चढ़ने का घोड़वा भौजी आपन सोहाग
बाबा कै सोनवा जे नौ दिन चलिहै, फटि जइहैं लहरा पटोर ।
भइया क घोड़वा रे नग्र कुदतु है, भउजी के बाढ़ै सोहाग
अम्मा कहैं बेटी निति उठि आवै, बाबा कहैं छठि मास ।
भइया कहैं बहिन्नी काज परोजन, भउजी कहै, कस बात ।

## हिंडोले का गीत

१३

[ प्रस्तुत गीत में परदेस जाते हुए पति द्वारा पत्नी के प्रति किया गया।
एक निश्छल व्यंग व्यक्त किया गया है। ]

गोरि गोरि बहियाँ सबुज रँग चुनरी
पिया छोड़ि चलेनि हो परदेसवाँ।
जौ तुहुँ छोड़ि चलेउ परदेसवाँ
बताये जाउ गुनवा हो औगुनवाँ।
जेवना बिगारेउँ कि सेवा में चुकेउँ
कवनि भई हमसे हो तकसिरिया।
जेवना बिगारेउ न सेवा से चुकेउ
इहइ भई तोहँसे हो तकसिरिया।
फागुन मास धना, हमरा फगुअवा
हमइ तजि गइउ हो नइहरवाँ।
सावन मास धना तोहरी कजरिया
तोहइँ तजि चलेऊँ हो परदेसवाँ।

१४

कहाँ पायों कँगना कहाँ पायों मोतिया
कहाँ पायों रे दिल लगना,
दिल लगना बलमुआ कहाँ पायों रे।
हाट पायों मोतिया बजार पायों कँगना
सेजा पायों रे दिल लगना,
दिल लगना बलमुआ सेजा पायों रे।
टुटि जइहइँ कँगना चिटिकि जइहइँ मोतिया
रिसाइ जइहइ रे दिल लगना,
दिल लगना बलमुआ रिसाइ जइहइँ रे।
जोरि लेवइ कँगना मँगाइ लेवइ मोतिया
मनाइ लेवइ रे अनबोलना,
अनबोलना बलमुआ मनाइ लेवइ रे।

१५

बाबा, निमिया क पेड़ जिनि काटेउ
निमिया चिरइया बसेर,
बलैया लेउँ बीरन।
बाबा, बिटियइ जिनि कोउ दुख देइ
बिटिया चिरइया की नाईं,
बलैया लेउँ बीरन।
सबरे चिरईया उड़ि उड़ि जाइहईं
रहि जइहैं निमिया अकेलि,
बलैया लेउँ बीरन।
सबरे बिटिया जइहइँ सासुर
रहि जइहइँ माई अकेलि,
बलैया लेउँ बीरन।

१६

सनु सखि पिया मोरा जोगी भयें, हमहूँ जोगिनि होइ जाब
जिनि केउ बोअहु कुसुमिया, जिनि केउ बोअहु कपास।
अब न रँगइबइ हम चुनरी, पिया बिनु जग अन्हियार
रन बन पिपरा के पात डोलइ, जल बिच डोलइ सेवार।
जिया मोर डोलइ पिया बिनु, हमइ तजि गयें नन्दलाल
सँपवा छोड़इ सँप केचुरी हो, गंगा छोड़इँ करार।
हमइ तजि पिया भयें जोगिया, ई दुख सहि ना जाय
मोरे लेखे रन बन अँगना, घरवा में फेंकरइ सियार।
सेजिया पै लोटइ कारी नागिन, देखि देखि जियरा डेराय
मोरे लेखे मधुवन जरि गयें, जरि गयें सोरहौ सिंगार।
लेहु सासु आपन अभरन, हम बन खोजन जाब
जोगिया के सोहइ पगरिया, जोगिनिया के लामी-लामी केस।
जोगिया बजावइ बँसुरिया, जोगिनिया गावइ मल्हार।

## कहँरवा

१७

सगरी रइनिया भँवरा घूमि-घूमि आयेनि कि केउ नाहि रे,
जागइ नगरी कै लोगवा कि कोउ नाहि रे।
जागइ तौ जागइ एक पतरी तिरियवा कि जिन केर रे,
पिया छाये परदेसवाँ कि जिन केर रे।
अँगना बहारि साँवरि टटरा उघारइ गगरिया लैके रे,
साँवरि पनियाँ के जाइँ कि गगरिया लैके रे।
गगरी त भरि-भरि धरेनि जगतिया सुगनवा मुरहा रे,
बोलइ बिरहा कै बोलिया सुगनवा मुरहा रे।
एक मन होय सुगना पटकौ देहरिया, दुसर मन रे,
परदेसिया कै चीन्हिया दुसर मन रे।

१८

पुरुब से आई रेलिया, पछिउँ से आई जहजिया,
पिया के लादि लेइ गइ हो।
रेलिया होइ गइ मोरि सवतिया,
पिया के लादि लेइ गइ हो।
रेलिया न बैरी जहजिया न बैरी,
उई पइसवै बैरी हो।
देसवा देसवा भरमावैं,
उई पइसवै बैरी हो।
भुखिया न लागइ पियसिया न लागइ,
हमके मोहिया लागइ हो।
तोहरी देखि के सुरतिया,
हमके मोहिया लागइ हो।
सेर भर गोहुवाँ बरिस दिन खइबइ,
पिया के जाइ न देबइ हो।
रखबइ अँखिया के हजुरवाँ,
पिया के जाइ न देबइ हो।

सोच मन काहे को करी ।
हरिनी हरिना लेत बसेरा बधिक लगावत जाल,
कूदि फाँदि के हरिनी निकरी हरिना के परिगा फाँस ।
इही पार से हरिन पुकारइ सुनु हरिनी मोरि बात,
विधना के घर खरच खोटाने बेंचि खात मोरि माँस ।
सोच मन काहे को करी ।
वोही पार से हरिनी बोलइ सुनु बधिका मोरि बात,
हमहूँ के बाधुँ पिया सँग मोरे लेहु न मोर अहिवात ।
विरह बोलि सुनिके हरिनी कै होइगा बधिक उदास,
सुधि आई अपनी तिरिया कै काटि दियो गल फाँस ।
सोच मन काहे को करी ।

## जँतसार

२०

भितराँ से निकसी कउसिला रानी नैंनन नीर बहइ हो राम,
मोर राम लखन अस भइया कवन बन होइहइँ हो राम।
जे राम चित से न बिसरइँ पलक से न उतरइँ हो राम,
मोरा भितराँ से बिहरइ करेजवा मैं कइसे बन भाखेउँ हो राम।
राम त मोर करेजवा लखन मोरी पुतरी हो राम,
अरे रामा सीता रानी हाथे केर चुरिया मैं कइसे बन भाखेउँ हो राम।
राम के गये दिन ढरि गा लखन गये साँझ भई हो राम,
मोरी सीता के गये अन्हिअरिया मैं कइसे जिया बोधउँ हो राम।
चारि मन्दिल चारि दीप जरइ हमरौ अकेल जरइ हो राम,
रामा, मोरे लेखे जग अन्हिआर त राम मोर बन गये हो राम।
सवन भदउवाँ कइ रतियाँ उमड़ि घन गरजइ हो राम,
मोर लड़िकन कवनेउ बिरिछ तर भीजत होइहइँ हो राम।
उमड़ि घुमड़ि घन बरसइ मोहि डर लागइ हो राम,
दैवा, जिनि बरसेउ जौंहि बन में जहां मोर लड़िकन हो राम।
भीजिहइँ राम कै मकुटवा लखन कै पटुकउ हो राम,
मोरि सीता कै भीजिहइँ सेन्हुरवा लवटि घर अवतेनि हो राम।

२१

झीने झीने गोहुवाँ बाँसे कै डैलरिया
ननदी भौजैया गोहुवाँ पीसैं मोरे राम।
रोजै तौ आओ देवरा दुइरे सिपहिया
आज कइसे आयउ अकेलवा मोरे राम।
कैसन भीजी देवरा तोरी रे पनहिया
कैसेने तेगवा तोरा भीजा मोरे राम।
सितियन भीजी भौजी मोरीरे पनहिया
हरिनी सिकरवा तेगवा भीजा मोरे राम।
कहवैं मारयो कहवैं बहायउ
कहाँ कै चिल्होरिया मड़राय मोरे राम।
उँचवैं मारेउँ खलवैं बहायउँ
सरगे चिल्होरिया मड़रानी मोरे राम।
बन में चनन कै लकड़ी बटोरयों
चितवै किहो तैयार मोरे राम।
जाहु जाहु देवरा अगिया लै आओ
स्वामी क आगि हम देबै मोरे राम।
जौ तुम होउ स्वामी सच क बिअहुता
अँचरा अगिनिया लइ उठौ मोरे राम।
अँचरा भभकि उठा सतिना भसम भई
देवरा भीजें दूनौं हाथ मोरे राम।
जौ हम जनतेउँ भौजी दगवा कमाबिउ
काहे क मरतेउँ सग भैया मोरे राम।

## कोल्हू का गीत

### २२

[ इस गीत में बिरहिन के सतीत्व निर्वाह का एक चित्र बड़ी सजीवता से प्रस्तुत किया गया है ]

अमवा महुलिया घन पेड़ जेहि रे बीच राह परी।
रामा, तेहि तर ठाढ़ि एक तिरिया मनै माँ विरोग भरी॥
पुछै लागे बाट के बटोहिया अकेलि धन काहे रे खड़ी।
भइया चलि जाहु बाट कै बटोहिया हमइँ रे तुहइँ काह परी॥
की रे तुहइँ सासु ससुर दुख, कि नइहर दूरि बसइ।
भइया, नाहि हमइ सासु ससुर दुख, न नइहर दूरि बसइ॥
भइया, हमरा बलम परदेस मनै माँ बिरोग भरी।
बहिनी, तोहरा बलम परदेस तोहइँ किछु कहि न गये॥
भइया, दै गये कुपवन तेल हरपवन सेन्हुर।
भइया, दै गये चनन चरखवा उठाय गज ओवरि॥
भइया, दै गये आपनि दुहइया धरम जिनि छोड़ेहु।
भइया, चुकै लागे कुपवन तेल हरपवन सेन्हुर॥
भइया, घुनै लागे चनन चरखवा ढहइँ गज ओवरि।
भइया, चूकै लागे मोर उमिरिया हरी जी नाहि आयेनि॥

२३

सोवत सुगना कोइलरि हो रामा कोइलरि जगावइँ
चलहु सुगनवा हमरे देस हो रामा।
जौ हम चली कोइलरि तोहरे हो रामा तोहरे के देसवा
कवन कवन फल खाब हो रामा।
हमरे के देस सुगना तीन पेड़ हो रामा तीन पेड़ रुखवा
अमवा महुलिया अनार हो रामा।
आम भल खाबइ महुलिया हो महुलिया रस लेबइ
झोपवन कटबइ अनार हो रामा।
अपुना त कोइलरि बइठी अमवा हो रामा अमवा धवद्रिया
सुगना पठावैं गोहुवाँ खेत हो रामा।
साठि बिगहवा कै एक्कै हो रामा एक्कै गोहूँ खेतवा
पसिया बेटउना रखवार हो रामा।
एक बालि काटें दूसर बाली हो रामा तीसर बाली लपकें
पसिया बेटौना मारइँ बान हो रामा।
रोवइँ कोइलरि छछन करइँ हो अरे कलपइँ कोइलरि
मरिगा सुगनवा अइसन मीत हो रामा।
नथिया बेचि चनना हो रामा चनना लकड़िया
झुलनी बेचि थियना आगि हो रामा।
नदिया किनरवाँ चितवा हो चितवा रोपायेनि।
जरइ सुगनवा अइसन मीत हो रामा।

## निरवाही का गीत

२४

एक बेरी अवतेउ भइया हमरी नगरिया हो ना,
भइया, बहिनी कै दुख देखि जातेउ हो ना।
कइसे कै आबउँ बहिनि तोहरी नगरिया हो ना,
बहिनी रहिया मे बाघ बघिनिया हो ना।
हथवा में लिहेउ भइया ढालि तरवरिया हो ना,
भइया का करिहइँ बाघ बघिनिया हो ना।

आवत देखेउँ मैं दुइ रे सिपहिया हो ना,
रामा, एक साँवर एक गोर हो ना।
गोरकू तूँ हवें हमरी माई जी के पुतवा हो ना,
रामा सँवरु ननद जी भइया हो ना।
मचियइ बैठीं जे सासु बढ़इतिनि हो ना,
सासु काउ रे बनाइ जेवनरवा हो ना।
अँकरी कोदइया कै रोटिया बनावहु हो ना,
बहुअरि मेड़वा चकवड़े कै सगवा हो ना,
अगिया लगाँवउँ सासु अँकरी कोदइया हो ना,
सासु चाकी परइ मेंड़ुवा के सगवा हो ना,
हमरे त आयें सासु भइया पहुनवा हो ना,
मोरे जिअरा में भइया कै बसेरवा हो ना,
आवहु भइया बइठउ लालि पँलगिया हो ना,
भइया कहउ नइहरे कै कुसलतिया हो ना,
रामा, भइया ढुरइ लागें अँसुआ हो ना,
की समझउ भइया माई कै कलेउवा हो ना,
भइया की भउजी कै जूड़ि बोलिया हो ना।
ना समझउँ बहिनी माई कै कलेउवा हो ना
बहिनी नाहि बहुआ कैं जूड़ि वोलिग्रा हो ना।
चन्दा सूरूज अस बहिनी संकलपेउँ हो ना,
बहिनी जरि बरि भइयु कोइलिया हो ना।
बइठउ न भइया ओंहि मलिनी ओसरवाँ हो ना,
भइया, मोरा दुख कहिहइँ मलिनिया हो ना।
कै मन कूटौं भइया कै मन पीसउँ हो ना,
भईया के मन सिझवउँ रसोईया हो ना।
सबके खिआवउँ भइया सबके पिआवँउ हो ना,
भइया बचि जाइ पिछिली टिकरिया हो ना।
भइया ओहू मे से देवरा कलेउवा हो ना,
भइया ओहू मे से गोरू चरवहवा हो ना।
भइया ओहू मे से कुकुरा बिलरिया हो ना,
पहिरइ के पाइँ भइया सबकै उतरवा हो ना।

भइया ओहू मे से ननदी ओढ़निया हो ना,
भइया ओहू मे से देवरा कछौटिया हो ना।
सासु खाँची भर बसना मँगावइ हो ना,
सासु पनिया पताले से भरवाइ हो ना,
सासु त ए भइया बुढ़िया डोकरिया हो ना।
भइया मुहवाँ जहर कै गठिया हो ना,
जेठानी त ए भइया कारी बदरिया हो ना,
भइया छिन बरसहि छिन घाम हो ना।
ननदी त ए भइया बन कै कोइलिया हो ना,
भइया आजु ऊड़इ कि काल्हि हो ना।
कपड़ा त देखउ भइया मोर पहिरनवा हो ना,
भइया जइसे भदउँवा के बदरी हो ना।
जइसे लोहा जरइ ओही लोहरा दुकनिया हो ना,
भइया ओइसइ जरँइ बहिनी तोहारि हो ना।
ई दुख जिनि कहेउ बाबा के अगवाँ हो ना,
बाबा सभवा बइठि पछितइहँइ हो ना।
ई दुख जिनि कहेउ माई क अगवाँ हो ना,
माई छतिया बिहरि मरि जइहइँ हो ना।
ई दुख जिनि कहेउ भउजी के अगवाँ हो ना,
भउजी दुइ चारि घरे कहि अइहइँ हो ना।
ई दुख जिनि कहेउ बहिनी के अगवाँ हो ना,
बहिनी ई सुनि ससुरे न जइहइँ हो ना।
सब दुख बान्हेउ भइया अपनी गठरिया होना,
भइया जहाँ खोलेउ तहाँ रोयेउ होना।

## बिरहा

### २५

दुखवा कै मोटरी उठाय परमेसरी
लेइ चलु धोबिया दुआर ।
आधा दुखवा तऽ उहइ धोबी मटिआवइ
अधवा में सब संसार ।

\+ +

चढ़ी दुपहरिया नवाब कचहरिया
कि सामी के बोलावता नवाब ,
बतिया न आवइ मोरे सामी जी के मुहवाँ
कइसे देइहइँ कवन जबाब ।

\+ +

धूमिल होइ गइ गवने कै चुनरी
बिनु धोबिया के गाँव ,
कै धोबिया पिया लाई बसावउ
कै धोबिया के जाँव ।

\+ +

ना बिरहा कै खेती हो भईया
ना बिरहा कै बनिजार ,
एहि हिरदईया से उपजइ बिरहवा
हम गाईं दिन रात ।

\+ +

सासु गोसाईं तोरी पइयाँ जे लागउँ
लेइ द रेसमवा कै डोर ,
अँचर खोलि जल भरउँ मोरि माता
हमइ केउ न कहइ लड़िकोर ।

## मेले का गीत

२६

घइ देत्यो राम हमारे मन धीरजा।

सबके महलिया रामा दियना बरतु है
हरि लेत्यो हमरों अँधेर, हमारे मन धीरजा। घइ०

सबके महलिया रामा जेवना बनतु है
हरि लेत्यो हमरो भूख, हमारे मन धीरजा। घइ०

सबके महलिया रामा गेड़ुआ घुंटतु है
हरि लेत्यो हमरी पियास, हमारे मन धीरजा। घइ०

सबके महलिया रामा बिड़वा कुँचतु है
हरि लेत्यो हमरो अमलिया, हमारे मन धीरजा। घइ०

सबके महलिया रामा सेजिया लगतु है
हरि लेत्यो हमरो नींद, हमारे मन धीरजा। घइ०

## झूमर

### २७

बूँदन भीजै मोरी सारी, मैं कैसे आऊँ बालमा।
एक तौ मेंह् झमाझम बरसे, दूजे पँवन झकझोरे।
आऊँ तो भीजै मोरी सुरँग चुनरिया, नाँहि त छुटत सनेह,
नाहीं डर बहुअरि भीजै क चुनरिया, डर बहुअरि छूटै क सनेह
नेहिया से चुनरी होइहैं बहुअरि, चुनरी से होईं न सनेह।

# ब्रज के लोकगीत

संकलनकर्त्ता
श्री कृष्णदत्त वाजपेयी

## गीतानुक्रमणी

## बधाया

### १

आई आई नंद जू की पौरि, बधाई लाई मालिनियां।
कहा लाई लल्ला की बधाई, सुघड़-पट मालिनियां॥
फूल लाई मालिनि, तो पान तमोलिनियां।
गदका लाई लल्ला की बधाई, सुघड़-पट मालिनियां॥
हरे-हरे गोबर अँगना लिपाऔ कि सुघड़-पट मालिनियां।
गज-मोतिन की चौक-पुराऔ सुघड़-पट मालिनियां॥
आई०

कुंभ कलस इमिरितु भरि लाए, चंपे की डार झकोरौ सुघड़-पट मालिनियां।
ऐंपनु घोरि पटा गहि मारौ, साटी के आछत डारौ सुघड़-पट मालिनियां॥
आई०

जा चौक बैठे रामचन्द्र, सँग सजन की जाई, सुघड़-पट मालिनियां।
भूआ-भैंजा करें आरती, झगरति अपनौं नेगु, सुघड़-पट मालिनियां॥
आई०

मोतिन के गजरे बेटी सुभद्रा ऐलै पहिराओ, सुघड़-पट मालिनियां।
देत असीस चली मधुबन कूं जिऔ तेरौ कुँमरु कन्हाई, सुघड़-पट मालिनियां॥
—मथुरा से

## विवाह का गीत

### २

राम आए अजुध्या अँनंद भए, अँनंद भए, माई, सुख-चेन भए।
माई, राजा जसरत कें चारि बेटा भए, चारों घूमें अजुध्या अँनंद भए॥
माई, राजा जसरत कें चारि हाती हए, चारों ठाड़े दरवाजे, अँनंद भए।
राजा जसरत के चारि बहुअलि हईं, चारों तर्वे रसोई, अँनंद भए॥
राजा जसरत के चारि बेटी हईं, चार्‌यों लाईं बधाईं, अँनंद भए।
माई, राजा जसरत के चारि नाती हए, चारों खेलें अँगनवा अँनंद भए॥

—वृंदावन से

# भाँवरों के समय दूधावाती का गीत

३

काए कूँ धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।
काए के कारन बाबुल मैहेल चिनाए, काए कूँ गए परदेस रे,
सुनि बाबुल मेरे।
बेटा के कारन लाड़ो मैहैल चिनाए, तुम कूँ धाए परदेस री,
सुनि लाड़ो मेरी।
हम तौ रे बाबुल तेरी अंगना की चिरियाँ, रुगि-चुगि कें उड़ि जांइ रे,
सुनि बाबुल मेरे।
हम तौ रे बाबुल तेरे अँगना कों कूरौ, झरि पुँछि कें फिकि जांइ रे,
सुनि बाबुल मेरे।
हमतौ रे बाबुल, खूँटा की गइयाँ, जिति हाँकौ हँकि जांइ रे,
सुनि बाबुल मेरे।
भैया के कारन बाबुल, मैहैल चौं चिनाए, हम कूं चों धाए परदेस रे,
सुनि बाबुल मेरे।
एकई पेट में जनम लियौ, सुनि बाबुल मेरे, एक सँग खेले आँगन में रे,
सुनि बाबुल मेरे।

हम कूं धाए परदेस रे, सुनि बाबुल मेरे।
जा दिन लाड़ो मेरे तुम जु भई इँ, भई बज्जुर की राति,
सुनि लाड़ो मेरी।
जा दिन तिहारे, बिरन भए एँ, भई सोंने की राति,
सुनि लाड़ो मेरी॥

—एटा से

## बिदाई का गीत

४

औरे रे कौरे गुड़िया ओ छोड़ी, रोमत छोड़ी सहेल री।
अपने बबुल को देस छोड्यौ, अपने ससुर के सँग चली।
लेउ बबुल घर आपनो ।
छोटे बिरन पकर्‌यो रथ को डंडा।
हमरी बहन कहाँ जाइ, छोड़ो बिरन मेरे रथ कौ डंडा।
अपने पराए, पराए आपनें, जो कलिजुग ब्यौहारु।
फिर चौं न बोलैं दारी सोंन चिरैया, देखूं बबुल कौ देसु।
अपनौ कुटुम लै उतरूंगी बाबुल, तिहारौ नगर सूबसु बसौ।
छिअर पनारि घर बाबुल आये, माइल आई।
माहे पैं चितु जाइ फटि फटि रे, मेरे हिया बज्जुर के।
धीअरि जमैआ तौ गयौ घरूरी रित्यो, अँगना रित्यो।
मेरे सब दुख रिति गयौ पेटु में, हा फिरि नहिं जनमूँगी धीअ।
मेरी धीअरि जमैया लै गयौ, मेंरौ घरुरी भर्‌यो अँगना भर्‌यो।
मेरौ सबु सुख भरि गयौ खेत, मेरौ बेटा बहूऐ ले आइए।
मैं तौ नित उठि जनमूंगी पूत, मेरौ बेटा बहूऐ लै आइए।

—हाथरस से

## सावन का गीत

५

रूँमझुँम रूँमझुँम मेहा बरसे, जि पाँनी कित जाइ जी ।
आधौ पाँनी नदी किनारें, आधे में मेरो भैया न्हाइ जी ॥
आप कूं लाए, बाप कूं लाए, मां की तीअर लाए जी ।
बैहॅन कूं तीअर ना लाए, तो सौ-सौ नाँम धराए जी ॥
रूँमझुँम रूँमझुँम मेहा बरसे, जि पाँनी कित जाइ जी ।
आप कूं कठला, बाप कूं कठला, मां कूं हँसला लाए जी ॥
बैहिन कूं हँसला जब ना लाए, तौ सौ-सौ नाँम धराए जी ।
रूँमझुँम रूँमझुँम मेहा बरसे, जि पाँनी कित जाइ जी ॥

—झूला झूलती हुई एक लड़की से प्राप्त

## होली

६

आज बिरज में होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर,
केसर रंग में बोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ,
और मँजीरन जोरी रे रसिया ॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी,
मारत भर-भर झोरी रे रसिया।
इत सों आये कुँवर कन्हैया,
उत सों कुंवरि किसोरी रे रसिया ॥
नंदगांव के जुरे हैं सखा सब,
बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोउ मिलि फाग परसपर खेलैं,
कहि-कहि होरी-होरी रे रसिया ॥

—ब्रज में सर्वत्र

## कृष्ण-लीला

७

नाँचै नंदलाल, नँचावै वाकी मैया ।
रुमक-झुमक पांय नेवर बाजै,
ठुमक-ठुमक पांय धरत कन्हैया ।
दूध न पीवैं कान्हां, दहिय न खावैं,
माखन-मिसरी को बड़ो री खवैया ॥
पाट-पटंबर कान्हां ओढ़न जानै,
कारी कमरिया कौ बड़ौरी ओढ़ैया ।
वृन्दाबन में रास रच्यौ है,
सहस गोपिन में नाचै एक कन्हैया ।
'चन्दसखी' भज बालकृष्ण छवि,
चरन कमल की मैं लेऊं री बलैया ॥

—बलदेव, जि० मथुरा से

## रसिया : कुएं पर जल भरना

८

जल भरहु झकोरि-झकोरि रसरिया रेसम की ।
पग नूपुर की झनकार रसरिया रेसम की ॥
रेसम की रसरी जब नीकी लागै सोने को कलसा होय ।
सोन का कलसा जब नीकौ लागै पतरी सी गोरी होय ॥
पतरी सी गोरी जब नीकी लागै अंखियन में कजरा होय ।
आँखिन में कजरा जब नीको लागै घूँघट में मुखड़ा होय ॥
घूंघट में मुखड़ा जब नीको लागै छोटी सी बिंदिया होय ।
जल भरहु झकोरि-झकोरि रसरिया रेसम की ॥
पग नूपुर की झनकार रसरिया रेसम की ॥

—मथुरा से

## भजन

### ( प्रकृति-वर्णन )

६

कोई-कोई बेरिया अमर बेलि छाइ रही।
कारे मुख वारी सो बिरम सुख पाइ रही॥
पकत लिसोरे जब खूब छबि छाइ रही।
प्रात के समैया जामें कोकिल करत सोर।
भाँति-भाँति पंछी बोलें चित्त हू में लागे चौर॥

—हाथरस से

## देवी का गीत

१०

सारद माता तू बड़ी तोते बड़ी न कोइ।
जा घट बासौ तैं लयौ सोई घट साँचौ होइ।
जे अबला तेरी भुम्मि बौहौत मोइ लगति पिआरी।
मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोइ लगे पिआरी।

तोइ मनाऊं देबी सारदा, नवि नवि लागूँ पाइ।
चाबुक दीयो मेरी चेतना, हिरदे में उठी हिलोर।
राति दिन तोइ सम्हारूं।
मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोई लगै पिआरी।

भमन बनायौ पांचौ पंडवा देवी धरि धरि लंबे सूत।
धरि धरि लंबे सूत नीब परबत में गरकाई।
मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोई लगै पिआरी।

बन्यौ भमन तेरौ सांपर्‌यौ।देवी हिंगुल बरनी पौरि।
छत्तुर चढ़ायोछोट भीम नें जामें हीरा-मोती लाख किरोर।
नगन को भयो उजारौ।

मोरी जगतारन भोरी माई भुम्मि मोई लगै पिआरी।
हर्‌यो भमानी को चोलना देवी रह्र्‌यो भमन भकभोरि।
घूम घुमारौ घांघरौ जाके ऊपर दखिनी चीर।
ओढ़ि गुजराती सालू।

मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोई लगै पिआरी।
सोरन लाए पंडवा देवी, सिर रामन को तोरि।
सोरन कलसा भिलमिले जाके ऊपर धजा फैराइ।
राति भरि रतना ढारी।
मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोई लगै पिआरी।

कर जोरें सिरियल खड़ो गावै मंगलचार।
गावै मंगलचार भमन मैं दरसनु पाऊं।
मोरी जगतारन भोरी माइ भुम्मि मोई लगै पिआरी।

—चिरंजी कोरिया, लोहबन से

## पुत्र-कामना का गीत

११

राजे गंगा किनारे एक तिरिया सु ठाड़ी अरज करै।
गंगे एक लहरि हमें देउ तौ जामें डूबि जैयों ॥
अरे जामें डूबि जैयों।

कै दुखु री तोइ सासु री ससुरी कौ कै तेरे पिया परदेस।
कै दुख री तोइ मात-पिता कौ, कै माँ जाए बीर।
काहे दुखु डूबिहौ।

ना दुखु री मोय सासु-ससुर कौ, नांई मेरे पिया परदेस।
ना दुखु री मोइ मात-पिता कौ, ना माँ जाए बीर ॥
सासु-बहू कहि नाँए बोलै ननँद-भाभी ना कहै।
ननद-भाभी ना कहै।

न हो राजे वे हरि बाँझ कहि टरै तौ छतियाँ जु फटि गई।
जाइ दुख डूबिहों सो जाई दुख डूबिहों,
राजे लौटि उलटि घर जाउ, लाल तिहारें होइँ,
ललन तिहारे होइँ।

एनुकता—आगरा से

## न्यारता का गीत

१२

गौरि री गौरि, खोलि किवरिया,
बाहिर ठाड़ी तेरी पूजनहारी।
गौरि पुजंतरि बेटी आई सुभद्रा॥
गौरि पुजंतरि बेटी कहा फलु माँगे।
मातु-पिता कौ राजु जु माँगे,
भैअनु की जोड़ी माँगे,
भाभी गोद भतीजौ माँगे॥
गौरि री गौरि, खोलि किवरिया,
बाहिर ठाड़ी तेरी पूजनहारी॥
गौरि पुजंतरि बहू आई सीता।
गौरि पूजंतरि बहू कहा फलु माँगे॥
सासु-ससुर को राज जु माँगे,
होरी-खिलन छोटे दिवरा माँगे।
हरी-हरी चुरियाँ, मुतियन भरि माँग जु माँगे।
अमर बेलि के बिछुवा माँगे,
अपनी गोद झँडला माँगे॥

—मांट, जिला मथुरा से

## कृष्ण-लीला

### १३

आली कालिंदी के तीर बाँसुरी बाजी गिरधर की ।
बंसी की टेर करेजा में लागी ,
उचठ परी सोंमत ते जागी ,
एक सङ्ग में उठि घर भागी ; मेरे हिरदे में करकी । आली० ॥
ऐसी धुन जामें वीर नेह की ,
सुधि गई सबरी भूलि देह की ,
छूटी परी किबार गेह की, सब न्याई टरकी टरकी । आली० ॥
उलटे सब सगार बनाये ,
कानन में मूँगा लटकाये ,
लहँगा तौ मैंने सिर पै औढ़्यौ, तजि सारी सिर की । आली० ॥
कंधा पै बेंदी धर लीनी ,
अंगिया पहरि पांव में लीनी ,
छड़े-छड़े हाथन में चूरी पांयनमें कर की । आली० ॥

—अलीगढ़ से

## मल्हार

### १४

देखौ री मुकुट झोका लै रह्यौ,
एजी लै रह्यो जमुना के तीर ।। देखो० ।।
कुंजन झूलें रानी राधिका,
एजी बागन झूलें घनस्याम ।। देखो० ।।
कौन झुलामें रानी राधिका,
एजी कौन झुलामें घनस्याम ।। देखो० ।।
सखी झुलामें रानी राधिका,
एजी सखा झुलामें घनस्याम ।। देखो० ।।
कौन बरन हैं रानी राधिका,
एजी कौन बरन घनस्याम ।। देखो० ।।
गौर बरन हैं रानी राधिका,
एजी स्याम बरन घनस्याम ।। देखो० ।।
बिजुरी सी चमकें रानी राधिका,
एजी बारिध से घनस्याम ।। देखो० ।।
सामन रँस सरसावनों,
जामें झूलत हैं घनस्याम ।। देखो० ।।

—बरसाना से

## कित गयौ मथुरा-बासी

१५

यहाँ ते कित गयौ मथुराबासी रे
भरे खिरक बछरन के छोड़े, गाय छोड़ि गयौ प्यासी रे।
यहां ते कित गयो मथुराबासी रे॥
सोलह सहस गोपिका छोंड़ी, दरसन हूँ की प्यासी रे।
यहां ते कित गयौ मथुराबासी रे।
गोपी ब्रज बन बिलपत डोलें बिलपत डोलें दासी रे।
यहाँ ते कित गयौ मथुराबासी रे॥
रास की आस करि रहीं सखियां, कितकूं गयौ अबिनासी रे।
यहाँ ते कित गयौ मथुराबासी रे॥
नित उठि परैं अकाल बिरज, में, फिर लै खबरि अघनासी रे।
यहाँ ते कित गयौ मथुराबासी रे॥

—गोवर्धन से

## ब्रज की लाज

१६

ब्रज की तोहिं लाज मुकट-वारे।
चंदा-सूरज जाकौ ध्यान धरत हैं,
ध्यान धरत नव लख तारे।
इन्दर कोप कियौ ब्रज ऊपर,
तब गिरवर कर पर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत,
गाय गोप के रखवारे।
ब्रज की तोहिं लाज मुकुट वारे॥

—बरसाना-नन्दगाँव से

## क्वाँरी-क्वाँरा का गीत

१७

चन्दा, ओ चन्दा, तेरी निरमल कायै चाँदनी,
पनियाँ भरन गोरी नींकसी।
ओ कुअटा, तेरे ऊँचे-नीचे घाट रे, ओ कुअटा,
वापै तो धोवै छोरा धोवती।
ओ छोरा, तू मारू बैंगन तोर ला, ओ छोरा,
तौलों मैं धोऊं तेरी धोवती।
ओ छोरी, तेरे गोबर लिहस रहे हाथ री, ओ छोरी,
दाग लगैगो मेरी धोवती।
ओ छोरा, मेरे मेहँदी रचि रहे हाथ रे, ओ छोरा,
रंग-रंग चूवै तेरी धोवती।
ओ छोरी, तू अति की बहुत मलूक री, ओ छोरी,
एती बड़ी पै क्वाँरी च्यों रही।
ओ छोरा, बर ढूंढ्यो देस-विदेस रे, ओ छोरा,
मेरी जोड़ी कौ बर ना मिल्यो।
ओ छोरा, तू अति कौ रूप-सरूप रे, ओ छोरा,
एते बड़े पै क्वाँरो च्यौं रह्यो।
ओ छोरी, मेरे मरि गये मैया-बाप रे, ओ छोरी,
भइया भरोसे क्वांरो रहि गयौ।
ओ छोरी, तू कहियो मां सों जाइकै, ओ छोरी,
मेरी जोड़ी कौ बर बाग में।

—भरतपुर, मथुरा से

# कौरवी लोकगीत
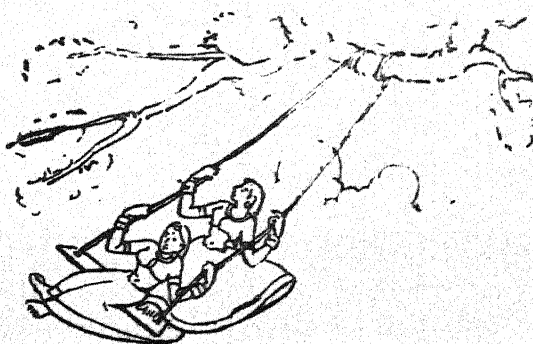
संकलनकर्त्ता

श्री राहुल सांकृत्यायन
श्रीमती कमला देवी चौधरी
श्री कृष्णचन्द्र शर्मा

## गीतानुक्रमणी

# चंद्रावली

१

अब रुत आई बावा बीजणे की,
सास्सु बरजे—'बऊ री, पणिया मत जाई,
डेरा पड़ा है मोगलके का, देव लेगा तमुओं के बीच।'
'सास्सुकी बरजी नार हूँ, मैं तो पणिया भरूँ झकझोल,
क्या करैगा वारा मोगलके का, तमुओं में दे दूँगी आग।'

पणिया चली चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस,
डेरे से निकला मोगलके का, दे लिया तमुओं के बीच।'
'बाटे चलत बटेउड़ा, एक सँदेसा ले के जा,
मेरे बाबुलसे नू कहो रे, बेटी तमुओं के बीच,
मेरे बीरनसे नूँ कहो रे, भेन्ना तमुओं के बीच।'
बाबुल सुणके रो पड़ा, बेट्टी तमुओं के बीच,
बीरनने खाई है पछाड़, भेन्ना तमुओं के बीच,
बाबुल ह्वाँ से चल पड़ा छकड़ों भर लिये दाम,
बेटी छुड़ाएँ चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।
बीरन ह्वाँ से चल पड़ा, छकड़ों भर लिये दाम,
भेन्ना छुड़ाऊँ चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।
'जारे मुगल के छोहरे, छकड़ों लीजो दाम,
बेट्टी छोड़ो चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।'
जा बीरन ने नू क्या, 'हस्ती लीजो दाम,
भेन्ना छोड़ो चंदरावली, जिसके लंबे-लबे खेस।'
जारे बाबुल घर आपुणे, राखूँ पंचों की लाज,
जारे बीरन घर आपुणे राखूँ टुपिया की लाज।
खाणा न खाऊँ बारे मुगलके का, राखूँ टुपिया की लाज।'
'बाटे चलत बटेउड़ा रे, एक संदेशा लेके जा,
मेरे सुसर से नू कओ, बऊ तमुओं के बीच।
मेरे देवर से नू कओ रे, भाभी तमुओं के बीच,
मेरे कन्त से नू कओ रे, गोरी तमुओं के बीच।
सुसर सुण के रो पड़ा, देवर खाई है पछाड़।
कन्त चौधरी हँस पड़ा, 'लाऊँ ऐसी दो-चार।'
सुसर ह्वाँ से चल पड़ा, छकड़ों भर लिये दाम।
बऊ छुड़ाऊँ चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस,'
'जा रे सुसर घर आपणे, राखूँ पंचों की लाज।'
—रामन माई, मेरठ ( भवाना से )

२

बागन बीच बगीचिया रे जामें तुलसा को पेर।
भूल रही चन्द्रावल, जाके लंबे-लंबे केस।
ननद भावज पानी चली आगे पड़े हैं पठान,
भाभी ने गगरी फांस दई, ननदी तँबुओं के बीच।
छोड़ो ननद चन्द्रावल, जिनके लंबे-लंबे खेस॥
लिख परवाना भेजनी रे, दीजो मेरे बाबुल के हाथ।
देखत चिट्ठी हँस पड़े जी, बांचत हुए दलगी॥
कसके तो घोड़ा चल पड़े जी, जानो आंधी गिनो ना मेह,
चांदी तो मेरो अतघनी, सोना ओर न छोर।
छोड़ो बेटी चन्द्रावल, जाकै लंबे-लंबे केस॥
जा रे बाबुल घर आपने, राखूँ तेरी टोपी की लाज।
खाखें ना खाऊँ पठान कौ, मरूँगी जहर बिस खाय॥
बाबुल ने पीछा फेरिया, तंबुओ दे लई आग,
बेटी चन्द्रावल फुक रही जी जिसके लंबे-लंबे केस॥
अंग जले जैसे केवड़ो रे, अँखियाँ जले हैं मसाल।
केस जले जैसे रेसमी रे जल भुन हो गई राख॥
देवर ह्वाँ से चल पड़ा, छकड़े भर लिये दाम,
'भाभी छुड़ाऊँ चँदरावली जिसके लंबे-लंबे खेस।'
'जा रे देवर घर आपुणे, राखूँ टुपिया की लाज।'
'जा रे मुगल के छोहरे, पणिया भर के ला,
प्यासी मरे चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।'
मुगलके के पीठ फेरते, तमुओं में देल्ली आग,
खड़ी-खड़ी जले चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।
बाल जले जैसे दूबिया, जीव कँवलके सा फूल,
दाँत जलै जैसे कौड़ियाँ, पेट जैसे मैदे की लोथ।
खड़ी-खड़ी जलै चंदरावली, जिसके लंबे-लंबे खेस।
हाथ मलै मुंडी धुणै, 'यो क्या करी करतार,
देखी भी चाखी नई, यो क्या करी करतार'।

—एक जाट स्त्री, घमेड़ा, बुलंदशहर से।

## वियोगिनी

३

'मोरे राजा जी, माटी सकेरूँ मैं तो फूलड़े बखेरूँ, जे घर आवो सवेरा जी ?'
'मोरी गोरी जी, माटी सकेरो चाये फुलड़े बखेरो, म्हारा तो आवण है नईं जी ।'
'मोरे राजा जी, क्या किसी दूती ने दूत लगाये, क्या कुछ ओगण म्हारा जी ?'
'मोरी गोरी जी, ना किसी दूती ने दूत लगाये, ना कुछ ओगण थारा जी ।'
'बागों में जाती मेरे यारों ने देखी, यो तकसीर तुमारी जी ।'
'मोरे राजा जी, मा थारी गई बहण थारी गई, जिस पीछे हम बी गये जी ।'
'मोरी गोरी जी, मा म्हारी बुढ़िया बहण म्हारी बालक, थारी तो चढ़ी जवानी जी ।'
'मोरी गोरी जी, कूओं पै न्हाती मेरे यारों ने देखी, यो तकसीर तुमारी जी ।'
'मोरे राजा जी, मा थारी न्हाई, बहण थारी न्हाई, जिस पीछे हम बी न्याये जी ।'
'मोरी गोरी जी, मा म्हारी बुढ़िया बहण म्हारी बालक, थारी तो चढ़ी जवानी जी ।'
'मोरी गोरी जी, रसोई जाती मेरे यारों ने देखी, यो तकसीर तुमारी जी ।'
'मोरे राजा जी, मा थारी गई बहण थारी गई, जिस पीछे हम बी गये जी ।'
'मोरी गोरी जी, मा म्हारी बुढ़िया बहण म्हारी बालक, थारी तो चढ़ी जवानी जी ।'
'मोरी गो रीजी, सेजों पै जाती म्हारे भैया ने देखी, यो तकसीर तुमारी जी ।'
'मोरे राजा जी, मा थारी गई, बहण थारी गई, जिस पीछे हम बी गये जी ।'
'मेरी गोरी जी, मा म्हारी बुढ़िया, बहण म्हारी बालक, थारी तो चढ़ी जवानीजी ।'
'मोरे राजा जी, माटी सकेरूँ मैं तो फुलड़े बखेरूँ, जो घर आओ सबेरा जी ।'
'मोरी गोरी जी, माटी सकेरो चाये फुलड़े बखेरो, म्हारा तो आवण है नईं जी ।'

## हालिया

४

'हलके जोता हालिया, उठ धन पाणी पियाय दो री ।'
'अच्छी सासु थारे पैंया पड़ूँ, अपणो बेट्टेकूँ पाणी पियाय दो री ।
'अम्मा के हातका हर, बी ना पीऊँ, उठ धन पाणी पियाय दो री ।
'अच्छी जेठाणी थारे पैंया पड़ूँ, अपणे देवरकूँ पाणी पियाय दो री ।'
'भाव्बी के हातका हर बीना पीऊँ० ।'
'अच्छी नणद थारे पैंया पड़ूँ अपणे भैयाकू पाणी पियाय दो री ।'
'भैन्ना के हातका हर बी ना पीऊँ० ।'
'अच्छी देवराणी थारे पैंया पड़ूँ अपणे भतीजे कू पाणी पियाय दो री ।'
'भाई-बऊके हातका हर बी ना पीऊँ० ।'
'अच्छी फूआ थारे पैंया पड़ूँ अपणो भतीजेकू पाणी पियाय दो री ।'
'फूआके हातका हर बी ना पीऊँ ।'
'अच्छी पीतस थारे पैंया पड़ूँ, अपणे बेट्टेकू पाणी पियाय दो री ।'
'चाच्ची के हातका हर बी ना पीऊँ ।'
अच्छी मौलस थारे पैंया पड़ूँ, अपणे नणदोत कू पाणी पियाय दो री ।'
'मामीके हातका हर बी ना पीऊँ ।'
'अच्छा नानस थारे पैंया पड़ूँ, थारे धेवतेकूँ पाणी पियाय दो री ।'
'नानी के हातका हर बी ना पीऊँ ।'
'अच्छी मौसी थारे पैंया पड़ूँ, अपणो भानजेकू पाणी पियाब दो री ।'
'मौसीके हाथसे हर बी ना पीऊँ ।'

## लच्छो

### ५

'आया री सासु मेरी, सावण मास, झूला बटादे पीले पाटका।'
'म्हारे तौ बउ मेरी, पटसणकी झूलैं, जाय बटैहो अपणे बापकै।'
'सुण सुण रे बेटा मेरे, लच्छो के बोल, लच्छो तो बोलै हमसे बोलणो।'
'झूँटे री मा मेरी, झूँठे हैं बोल, लच्छो न बोले तुमकू बोलणो।'
'सुण सुण रे बेटा मेरे हर न पतिया, चढ़के चौबारे बेट्टा देखले।'
सासुनें मक्कीका घर दिया पीसणा... ।
बगड़में बखैरूँ सासु तेरा री पीसणा, चुग चुग चावें देवर-जेठ।'
'साँचे री मा मेरी, साँच हैं बोल, लच्छो तो बोलै तुमकू बोलणो।'
'कओ तो री अम्मा दूँ हूँ बिडार, कओ देदूँ बणबास।'
'काये कू बेट्टा मेरे, देहो बिडार काहे कू दो बणबास।'
इनकू तो बेट्टा पीहर पाँचा दो... ।
'उठ-उठ री लच्छो, करो सिंगार तुमकू बुलाया थारे बापने।'
'कौण सा राजा मुझे लेणेहार, कौण सा वादा मेरा घर गया।'
'बीरन ही आये मुझे लेणेहार, नौआ-चलौआ वादा घर गया।'
'उठ उठ री लच्छो डुलिया कसाओ, हम तौ घोड़े पै असवार।'
आगे आगे लच्छोका डोला सज रया, आप तो गोड़े असवार।'
लच्छोका डोला छोड़ा सेले बडतले, आया तो आप अपणे गाँव।'
'खोलो री अम्मा मेरी चंदन-किवाड़, बेटी आई थारे पावणी।'
'किसमिस लच्छो बेट्टी आई मेरे पावणी, किसके कारज तू आई?'
'बड़े भैयाके घर जनमा है पूत, छोटेके कारज आई।'
आइके बैठे हरजी देहली पै... ।
'किस बिण अम्मा मेरी, घर अँधेरा, किस बिण आँगण भिनभिना?'
'दीवा बिणा रे बेट्टा घर अँधेरा, बालक विणा आँगण भिनभिना।'
'आया री मेरी मा कातक मासु, हम तो जाड्डे से सुक रये।'
'अपण बेट्टाकू सौड भराय दूं, तले बिछा दूँ काली कामली।'
'सौडों में नेरी अम्मा जाड़ा न जाये, सौड के मंडल धनि बाप के।'
'अपने बेट्टा कू चार बिया दूँ, दो गोरी दो साँवली।'

'चारों कू काट अम्मा कूँए में डालो, लच्छो तो भुंखे अपने बापके।'
'लाओ री अम्मा मेरे पाँचो हतियार, पाँचो तो लाओ म्हारे कापड़े।'
'लच्छोकू लेणो हम चल पड़े।'
गये री गये लच्छो के लेणहार, जाय तो बैठे बड़की छाँव में।
'सुणो री सुणो लच्छो मेरी भेन्ना, बारा बरस के बिछुड़े आ मिले।'
'झुंटे री सखियो, थारे झुंटे हैं बोल, बारा बरस के बिछुड़े ना मिले।'
'सुण-सुण री लच्छो कोठे चढ़के देख, बारा बरस के बिछुड़े आ मिले।'
'साँचे री मा मेरी साँचे हैं बोल, बारा बरस के बिछुड़े आ मिले।
कओ तो अम्मा मेरी मैं दूँ बिडार, कओ तो राँधू खट्टी लापसी ?'
'तू तो बेट्टी मेरी मुरख गँवार, आये सजन न बिडारिये।
राँधो री बेट्टी मेरी मोती छड़ा भात, हरे मूँगन धोई दाल।
सोने की री बेट्टी थाल परोसो हँस-हँस बुज्भो हर से बात।
'सुण सुण रे राजा बारा बरस में आये, इतने दिन तो कैसे काटिये ?'
'दिन-दिन री लच्छो बीते कचेड़ी में, रात निमाणो होके सो गये।
सुण सुण री लच्छो थारे बी बोल, बारा बरस कैसे काटिये।'
'दिन-दिन म्हारु मेरे सहेलियों के बीच, रात अम्मा के धोरे सो गये।'
'उठ उठ लच्छो करो हो सिंगार, तुमकू बुलाया थारी सास ने।'
'वे दिन राजा कर लीजो याद, रोवत छोड़ी सेले बडतले।'
'वे दिन री लच्छो जाओ हो भूल, मान बढ़ाया बुढ़िया माय का।'
'उठ उठ री भाभी मेरी कणक पिसाओ, तड़के जायगी लच्छो सासरे।'
'उठ उठ री अम्मा मेरी लड्डवा बँधाओ, तड़के जायगी लच्छो सासरे।'
'उठ उठ री भैंन्ना मेरी मिलण संजोओ, तो चली अपणे सासरे।'
'आया री हर जी अपणे धनिकू लेके, आय उतारा सेले बडतले।
आया बमी का साँप डँस गया, लच्छोकू सेले बडतले।'
तुझकू री लच्छो रोवेगा कौण, घर ना मरी ना मरी सासरे ?'
'मुझकू रे म्हारु रोवैगी माय, जिसकी सिवासण बिटिया मर गई।'
मुझकू रे म्हारु रोवैगा आप, जिसकी तो सेज सूणी हो गई।
मुझकू रे म्हारी रोवैगी सास, जिसकी सिवासण बऊ मर गई।'

## हंसो

६

राजा अर राणी चोसड़ खेलते, जीती राणी राजा तो हार गये।
राजा, ऐसे बोल, मत बोल जैसे बेट्टी लाओगे हंसारावकी।'
राजा बूझै है माली लोग—'बाग बताओ हंसारावके।'
'ए राजा जी, वो तो दीखे राजाके बाग, आम पके नीमू रस भरे।'

राजा बूझे हैं धोबी लोग—'ताल बताओ हंसारावके।'
'ऐ राजा जी, वे तो दीखें राजाके ताल, धोबी तो धोवें पूरे डेढ़ सौ।'
राजा बूझे हैं धीवर लोग—'कूवें बताओ हंसारावके।'
'ऐ राजाजी, वे तो दीखें राजाके कूवें, पनियारी भर रई डेढ़ सौ।'
राजा जी बूझे है नौंकर लोग—मैल बताय दो हंसारावके।'
'ऐ राजा जी, वे तो दीखें रावके मैल, मोरी छिकी हैं पूरी डेढ़ सौ।'
राजा बूझे हैं बाम्मण लोग—'रसोई बताय दो हंसारावकी।'
'ऐ राजाजी, वे तो दीखें राजाके रसोइये, बाम्मणी रोट्टी करें डेढ़ सौ!'
राजा बूझे हैं बाँदी लोग—'बेटी बताय दो हंसारावकी।'
'एजी राजाजी बनमें चुगावे गाइ, यो बेटी हंसारावकी।'
गये हैं राजा बणखंडके बीच, बेट्टी चुगावे बणमें अकेली।'
'ऐरी हंसो, मनमें मलूक कहै, अवलो कुआँरी कन्या क्यूँ रई?'
'ए राजाजी, ढूँडे हैं चारोइ देस, म्हारी जोडी के वर ना मिले।'
'एरी हंसो, जाइ अपणो अम्मासे कओ, म्हारी जोडी के वर आ मिले।'
'एरी अम्मा, ढूँडे हैं चारोंइ देस, म्हारी जोडी के वर आ मिलें।'
'अरी बेटी ढूँडे हैं चारोंइ देस, थारी जोडी के बर आ मिले।'
एक फेरा फेरा दूसरा फेरा, तीजे में राजा रो पड़े।
'क्या याद आये माई-बाप क्या याद आया मारू देसड़ा?'
'ना रे हंसो, मर गये म्हारे माई-बाप, ना याद आया मारू देसड़ा।'
एक याद आई सुन्दरी नार रोवत छोड़ी मैंने अकेली।'
'मरूँ कै जीऊँ मेरी माय, राजाके कहिये नार दूसरी।'
एरी धी मेरी मैं तो बरजूं तो दिनरात, चलते मुसापर कैसी दूसरी?'
एरी धी मेरी तो मर जाओ बलाय, राजाकी मरियो नार दूसरी।'
'एरी गोरी लाया हूँ हंसोकूं ब्याय, खोलो जी बजर-किवाड़।'
एरी गोरी काँ धरूँ सोभा दायजा, काँ उतारूँ सौकण दूसरी।'
'ऐ राजाजी, बगड़ बखेरो सोभा-दायज, कूड़े पै तारो गोरी दूसरी।'

## गूजरियों का गीत

७

'मेरे संगकी सहेली मेरी बहण-बणेली, तेरा राजा आया बागों में।
झुंटी झुंट न बोल, घरगई झुंट न बोल।
'जा दिन राजा री आवेंगे, म्हारु री आवेंगे।
घोडा-फोड़ मचैंगी, चंदा-सूरज अटेंगे,
कूवों कीच मचैंगी-तारे दिन में दिखाई देवेंगे।'
'मेरे संगकी सहेली बहण- बणेली, तेरा राजा री आया तालों पै।
झुंटी झुंट न बोल, घरगइ झुंट न बोल। 'जा दिन राजा०।
'मेरे संगकी सहेली'''तेरा राजा री आया कूवों पै।
'''तेरा राजा री आया मैलों में।
'''तेरा राजा री आया सेज पै।

## मनरा

८

चूडा तो हाथीदांत का, चूडा तो मेरे मन बसा,
गली गली मनरा फिरे, अरी बी बी मनरा कू लाओ बुलाय।
पल्ला पसार मनरा बैठ गया. 'मनरा, कओ इस चुडे का मोल ॥
औरों कू बीबी मेरी, लाख टके का, तुम कू पराऊँ बिना मोल ॥
'हरी' जंगीरी ना पैरूँ, हरे मोरे राजा जी के बाग।
काली जंगीरी मनरा मैं न पैरूँ, काले मोरे राजा जी के पंठे।
लाल जंगीरी मनरा में ना पैरूँ, लाल मोरे राजाजी के बिडला।
चिट्टी जंगीरी में ना पैरूँ, चिट्टा मारे राजाजी का बस्तर।'
हवाँ से तो बणदल चल पड़ी, गइ अम्माजी के पास।
'अरी अम्मा, थारी बऊ तो बड़ी चकचाल।

मनरा से जोड़ी दोसती, सासू ने सुसरा सिका दिया—
राजा थारी बऊ मनरा के जावे, मनरा से जोड़ी दोसती।'
सुसर ने बेटे कू सिकाय दिया, बेटा थारी बऊ बडी चकचाल।'
बेटा उठके चल पड़ा, गोरी तुम कू बुलाया थारे बाप कू।
'अरे राजा कौण तो आया लेणेहार, तो कौण वादा घर गया?
'अरी गोरी बीर थारा आया लेणेहार अर नाई वादा घर गया।'
आपँ हुए राजा घोड़े असवार, धने कू बिठाई पालकी।
जाय उतारी बालू-रेतमें,
पैली कटारी जब साँधिये—'राजा काहेकू मारो तलवार?'
दूजी कटारी जब साँधिये, लई उसने घुँघटे का ओट॥
तीजी कटारी जब साँधिये, लई उनने हतड़ों पै ओट।
चौथी कटारी फेर साँधिये, पँचवी में तजि हैं परान।
मार-मूरि राजा चल पड़े, सीस तो डाला जुंडों बीच।
ताण दुपट्टे राजा सो गये, सुपणों में आई कमल नार।
'राजा हमने करी ती बड़ाई थारे रूप की।
घर-घर दिवले राजा बल गये, रँडवे के घर में अँधेरा।
घर-घर रोटी पाणी हो गई, रँडवा का चपनी में चून।
घर-घर सेज राजा बिछ गई, रँडवे की सड़कों पै खाट।
हमसे तो छोटी म्हारी भैणिया, उसका तुम कर लीजो ब्याव।'
कोठे पै चढ़के दी है दुआई, 'भैया कोई मत मानियो माकी सीख।
अम्मा ने घर खोय दिया।'

## बैंगणा

६

मेरे पिछवाड़े बैंगणा, जिस पर रूपे की बेलड़िया।
जिस तले बसै है मालनिया, सुखै है पिया बिना।
घर बणा घरवा बणा, अर चंदन-चौक बणा।
जिस तले बसै है मालनिया, वो झुखै पिया बिना।
"जे तुम जाओ पिया चाकरी, हमें क्या लाओगे ?"
लौंग-मिरच का हार, गुठे थारे आरसी"
बारा बरस में बाउड़े उतरे हैं बागड़िया।
किस विध देखण जाऊँ नणद थारे बीरन कूँ।
"एक हात ले लो बीजणा, के दूज ककोरा ले लियो।"
बाव करत अँचला ढुला, रसिया ने परख लई।
"किन थारा जोबन लूट्टा, किन थारा मान हरा।'
"मार के छाडूं बाले-हाकम, तुमसे में बौत डरूँ।"
"छोटा बीरन चकचाल, म्हारा बरजा ना रया।"
"लाओ म्हारे पाँचो कपड़े, खूँटी हथियार रे।"
"चल मारै छोटे बीर कू, हम जोगी बणे।"
"बीरन मारे ना मरै, टूटै थारी बाँहड़िया।"
"मारो हो हम कू मारो, तो मिलै और बतेरिया।"
तुम धनि मारे ना मरै, सूनी हो म्हारी सेजडिया,
तुमसे उपजेंगे लाल, मरो थारे बैरियां।
मेरी चतुर सुजान, तन्नै दोन्नों का मान बढ़ाया।

## बऊ का मैला भेस

१०

आय ठाढ़ी तो पिया राजदुलारे, सुसरे की नजर बऊ पै पड़ गई।
"क्यूं री बऊ तेरा मैला है भेस, क्या तेरे आये बीरा फिरि गये ?"
"ना जी, सुसर, म्हारा मैला भेस, ना मेरे आये बीरा फिरि गये।
सासुकू का जाया नणदिया का बीर, वो रे सिधारे लोभी चाकरी।
अब जइयो मेरे पिया उसी देस में, जहाँ न लगे थारी नौकरी।
खइयो जे मेरे पिया सूल बबूल, सोइयो खड्डे के सातरे।
अइयो जे मेरे पिया मूंड मूंडाइ के, हाथ कुतंग सिर ढोबरा।
अइयो जे मेरे पिया ब्याय रचाइ के, हाथ कँगन सिर सैहरा।"
"तू तो बऊ मेरी मुरख गँवार, चलते हाकम मत कोसिये।
बालो जो दिउला धरो थमसा ले, पिया समझावो आपुणे।"
"आय पुरी है मेरे पिया बारामास, अब रे सिधारो लोभी चाकरी।
जइयो मेरे पिया उसी देस में, जाँ रे लगे थारी नौकरी।
खइयो जे मेरे पिया मोती छडा भात, मूंगन धोयी दाल।
सोइयो जे मेरे पिया फूलों भरी सेज, नाव बढ़ाये लखी बापका।"

## बारहमासा

### ११

गुण सुन्दर बैसाखकी बिरिया में न कहे।
जोबन लहरे लेय, तो बीत करे मीनती।
बात रई समुझाई, मैं बाले से जीवकू।
है कोई चतुर सुजान, मिलावे बाले जीवकू।
सासु का जाया है पूत, नणद का बीर है।
वो पिया चतुर सुजान, मिलावे बाले जीवकू।१।
आया है जेठ जे मास, सूकी है जल कूँवटी।
सूका है सरवर-ताल, सूकी जल-माछरी।२।

आया साढ़ जे मास, भरी है जल कूंबटी।
भर गये सरवर-ताल, सुखी है जल माछरी।
पानों का बंगला छिवावती, रेसम के बंद लगावती। ३।
आया है सावन मास, रचे हैं हिंडोलने।
रेसम बेड बंटाय, सहेली सँग झूलती।
तुम पिया झाँटे दोज, झुलेंगी बाली कामनी। ४।
आया है भादो जे मास, झुँकी है अंधेरिया।
तड़क उजाला होय, डरे हैं बाली कामनी। ५।
आया है असोज जे मास, तो पितर जिमावती,
धोती का देती दान, मुठी भर दच्छिणा।
मुँड़-मुँड लागूँ पाँड़े पाँव, बौत करै मीनती। ६।
आया है कातक मास, मैं काग उडावती।
उड़ जा रे काले कागा, ललन लोभी-चाकरी। ७।
आया है मंगसिर मास, हैं माँग भरावती।
माँग भरी सिस-फूल, जै हार गुंथावती। ८।
आया हैं पौय जे मास, सियाले जाड़ा चौगणा।
चादर बीच गलेप, नैन भर रोवती। ६।
आया है माह जे मास, माह जल न्हावती। १०।
आया है फागण मास, तो फगवा में खेलती।
अंबर अबीर गुलाल, पिचकारी भर खेलती। ११।
आया है चैत जे मास, मैं चिता लगावती।
ससुर के घर हैं दूध, जेठ घर पेखणा।
म्हारे बलम परदेस, हमें क्या देखणा।
जिन खूँटी हतियार, तो वे खूँटी सज रईं।
पिया पै करै सिंगार, तो वे धनि सज रईं।
जिन खूँटी न हतियार, तो वे खूँटी भुँटी हैं।
पिया बिन करै सिंगार, तो वे धनि फीकी हैं। १२।

१२

पापी पपैया बण में जिगा रये जी।<br>
जब बोल बाहर आवे, बोलंगा रुत आपणी।'<br>
आया महीणा साढ़ का, साढ़ में बँगले छिवावें।<br>
बँगले छिवावें वे सखी, जिनके पिया घर होंय।

म्हारे बालम लोभी चाकरी, छाय रहे परदेस ।
चारों खूँट रमती फिरूँ, भर जोग्गण का भेस ।
नैन भरे छात्ती फटे, मैं तो फिरूँ दिन-रात ।
हम बियोगी स्याम के, छाय रहे परदेस ॥१॥
आया महीणा सावण का, सावण रचै हैं हिंडोल ।
झुला लगावें वे सखी, जिनके पिया घर होंय ।
म्हारे बालम लोभी चाकरी, छाय रहे परदेस ॥२॥
आया महीणा भादों का, भादों में झुकी है अँधेरी ।
चार तरफ बिजली चमकै, मेरा जिया धड़कै ॥३॥
आया महीणा असौज का, असोजमें पितर जिमावें ।
पितर जिमावै वे सखी, जिनके पिया घर होंय ॥४॥
आया महीणा कात्तक का,कात्तक रची है दिवाली ।
दिवले बलावें वे सखी, जिनके पिया घर होंय ॥५॥
आया महीणा मंगसिर का, सब सखी मांग भरावें ।
माँग भरावें वे सखी, जिनके पिया घर होंय ॥६॥
आया महीणा पूस का, पूस जाड़े का जोर ।
सौड भरावें वे सखी, जिनके पिया घर होयँ ॥७॥
आया महीणा माह का, चंदन अँगीठी लगाय ।
अँगीठी लगावें वे सखी, जिनके पिया घर होयँ ॥८॥
आया महीणा फागण का, फागण होली खेलते ।
रंग मचावें वे सखी, जिनके पिया घर होयँ ॥९॥
आया महीणा चैत का, चैत गजरे गुँधाय ।
गजरे गुँधाय वे सखी, जिनके पिया घर होंय ॥१०॥
आया महीणा बैसाख का, बैसाख चुनड़ी रँगाय ।
चुनड़ी रँगावें वे सखी, जिनके पिया घर होंय ॥११॥
आया महीणा जेठ का, जेठ चले तप-लूय ।
पंख लगावें वे सखी, जिनके पिया घर होयँ ॥१२॥

# इतना कम्राँ से लाऊँ

## १३

"सुण-सुण रे मेरे राजा, अम्मा तुमारी आवैं, चरखा धराई माँगै।
अम्मा तुमारी आवैं, गले की हँसली माँगै।
लाला तो रोज होवै, होल्लर तो रोज होवै, इतना कम्रां से लाऊँ।
सुण-सुण री गरीब घरों की, कंगाल घरों की, हम बी तो नौकरी कू जावें।
हम बी तो चकरीकू जावें, थैल्ली पै थैल्ली लावैं, बोरी पै बोरी लावें।
अम्मा कू नेग दीजो, अम्मा कू हँसली दीजो, जो मांगे सो दीजो॥"
"सुण-सुण रे मेरे राजा, भावी तुमारी आवै, छट्ठी पुजाई माँगै।
लाला तो रोज होवें, इतना कम्रां से लाऊँ।"
"सुण-सुण धनि ओछे घरों की, हम बी तो।"
सुण-सुण मेरे सूवेसे राजा, भैन्ना तुमारी आवै, सतिया चिताई माँगें।
बोगचे के तीयल माँगे, हातों के कंगण माँगे।
इतना०।'
"सुण-सुण रे मेरे राजा, देवराणी हमारे आवें, पलंग बिछाई माँगे।
दिउला बलाई माँगे, गलेके तिलड़ी माँगे, चम्पाकली बी माँगे।
इतना०।'
"सुण-सुण रे मेरे राजा, नणदल हमारी आवै, नगर बुलाई माँगे,
बटावे के पैसे माँगे।'
इतना०।'
"सुण-सुण रे गरीब-घरों की, फकीर-घरों की, हम बी तो नौकरी कू जाव।
दाई कू नेग दोजो, हातों छल्ले दीजो, उँगली की गुंठी दीजो।
पैसे-असरफी दीजी अर छल्ले दीजो॥

# भैन्ना मिलिले

१४

'अरी भैन्ना, मिलि ले तू नैन झकोले, माके जाये कद मिले ?
'अरे भैया, कैसे मिलूँ नैन झकोले नैनों में सुरमा घुल रया ।'
'अरी भैन्ना, सुरमा तो खाती की हाट, माके जाये कद मिलें।
अरी भैन्ना, मिलि ले, तू छतिया लगाय० ॥
'अरे भैया, कैसे मिलूँ छतिया लगाय, छतियों पै दूधवा भर रया ।'
'अरी भैन्ना, दुधवा तो घोसी की हाट, माके जाये कद मिलें ।'
अरी भैन्ना, मिलिलेतु बहियाँ पसार ॥
'अरे भैया, कैसे मिलूँ बहियाँ पसार, बहियों में चुडला भर रय ।
'अरी भैन्ना, चुडला तो मनराकी हाट, माके जाये कद मिलें ।
अरी भैन्ना, मिलिले तु पैर उठाय ॥
'अरे भैया, कैसे मिलूँ पैर उठाय, पैरों में पायल भर रये ।
'अरी भैन्ना, पायल तो सुनरा की हाट माके जाये कद मिलें ।'
अरी भैन्ना, मिलिले तू पंजा उठाय, माके ॥'
'अरे भैया, कैसे मिलूँ पंजा उठाय, पंजे में बिछवे भर रये ।'
'अरी भैन्ना, बिछवे तो सुनरा की हाट माके जाये कद मिलें ।'
'अरी भैन्ना, क्या गरबी देवर-जेठ में क्या माया में गरब रई ।'
'अरे भैया, ना गरी गरबी में दवर-जेठ में ना मायां में गरब रई ।
अरे भैया, गरबी हूँ अपणी सिलोणी कोखपै. अपणे साई के राज में ॥
गरीब हूँ अरजन-सुरजन पूत, गरबी हूँ सांई आपुणे ।'
'अरी भैन्ना, ब्यायेगी अंडो-मंडोधीय, जब याद करैगी अपणे बीर कू ।
ब्यायेगी अरजन-सुरजन पूत, जब याद करैगी अपणे बीर कू ।'

## गवतिरी

### १५

कजली बणसे चली री गवतिरी, माधु वन कू जाये, मेरे रामा०
एक बण ओलखा दूजा बण ओलखा, तीजेमें सिंह दड़के मेरे रामा०
'आओ मेरी गैया, तुमें हम भख लें, आज हमारा भोजन आ गया।'
'आजका दिन सिंह राजा माँगा दीजो, घर मेरा बछड़ू रँभाय,
भुका रे प्यासा रँभाय।'
'आओ मेरे बछड़ू दुदवा पीलो, कलकू मैंया ना मिले।'
'बचनो बँधा दुदवा हम ना पीवें, बचनों का भेद बताय।'
आगे-आगे बछड़ू, पीछे-पीछे मैंया, दोन्नो ई बण-खंड जाय।
'आओ सिंह मामा हमें तुम भख लो, आये हम दोन्नों ई आय।'
'काँका ममा काँका भांणजा काँकी गवतिरी बहण।'
'संतका मामा धरम का भाणजा, नेम-धरमकी गवतिरी बहण।'
'किसने तुझे बछड़ू सिख-बुध दे दी, किसने दिया है ग्यान?'
'राम मेरे ने बुद्दी दे दी, ग्यान मेरे ने दिया है ग्यान।
'ऐसे पुत्तर सबकू जनमो, माता कू लाया है बँचाय।'
जो गौ-लीला सवेरे गावे राम के दरसन पावे।
जो गौ-लीला दुपहरी में गावै छत्तिस पकार भोजन पावे।
जो गौ-लीला संझाकू गावै, किसनजी के पलंग बिछावे।
जो गौ-लीला आधी रात कू गावे, जमके तरास न पावे।
बाली सो गावे घर-वर पावे, तरणी सी पुतर खिलावे।
बुढ़िया सो गावे तो सुरग-बास पावे।......

## लाड़ी

### १६

[ कन्या के विवाह में गाया जानेवाला गीत है । ]

( लाड़ी अथवा सुहाग नाम से गाये जाने वाले इन बहुसंख्यक गीतों में नारी की पुरुष के प्रति सहज जिज्ञासा, रुचि, तथा उत्सर्ग-भावना प्रगट है । )

बंणे हमनें बुलाए एक्ले, बाब्बा संग आया बणी का बणा ।
बणे हमने बुलाए एक्ले, नौसे हमने बुलाए एक्ले
चाचा संग आया बणी का बणा ।
बने धुर-दिल्ली के चौधरी ।
नौसे धुर-दिल्ली के चौधरी,
पटियाये का राजा बणी का वणा ।
बणे हमने बुलाए एक्ले, ताऊ संग आया वणी का वणा ।

( इसी तरह बर के सम्बन्धियों के नाम ले लेकर गीत लम्बा कर दिया जाता है । यौन-सम्बन्धों में एकांतता कितनी अपेक्षित है, गीत के स्वरों से यह स्पष्ट है : साथ ही 'धुर-दिल्ली के चौधरी' अथवा 'पटियाणे का राजा बणी का बणा' कहने से यह भी प्रकट है कि, लोकनायक तथा वीर के प्रति नारी का कैसा आकर्षण रहा है । )

१७

कछनाल बैट्ठी लाड़ो पान चाबै कर रही बाबा जी से मीन्ती
'बाबा देस जाइयो, परदेस जाइयो, म्हारी जोड़ी के बर ढूंढ़ियो ।'
'लाड़ी देस ढूंढ़े परदेस ढूँढे, थारी जोड़ी के बर ना मिलें'
'ताऊ देस जाइयो, परदेस जाइयो, म्हारी जोड़ी के बर ढूंढ़ियो'
इक रैंन रहिये उनका गीत बुज्झो, सार खिलवते बर ढूंढ़ियो ।
( इसी भाँति पिता, बापू, भाई आदि के नाम लिये जाते हैं )

## विहाईः हास व्यंग

१८

गूंद कनी के लड्डू मेरी सास्सू जी ने चरोये जी
सास्सू जी के हाथ पकड़ के कोट्ठा भीतर ल्याइयो जी
कोट्ठे भीतर जा माने न दुकड़िया भीतर ल्याइयो जी
जब दुकड़िया भीतर ना माने तिकड़िया भीतर ल्याइयो जी
जब तिकड़िया भीतर ना माने लूहीरी ताड़ा जड़ाइयो जी
जब ताड़े भीतर ना माने किक्कड़ की लौद मँगाइयो जी
किक्कड़ की लौवीं ना मान्ने तो सूंड़ा सूड़ मचाइयो जी
गूंद कनी के लड्डू मेरी पीतस ने चरोये जी।

( इसी प्रकार-पति के घर की जिन सम्बन्धी स्त्रियों का नाम याद आ जाय उनका नाम जोड़ते चले जाते हैं )

## सांझी के गीत

१६

सांजियों के आरेधोरे चावलों की मुट्ठी
तू पहन ले री ( बहिन का नाम ) बहना सोंहने की गुट्ठी ।।
तेरी माई परहावन बैठी, भइया मोल चुकावे
भाबी मूं मसकोड़े साढ़े नौ तोले की गूंट्ठी
तेरा बाप गढ़ावन बैठा, नन्दल म्हूं मसकोड़े ।
साढ़े नौ तोल्ले की गूंठी ।

( इसी प्रकार सभी बहनों का नाम ले लेकर गीत बढ़ा दिया जाता है । )

(उक्त गीत यद्यपि एक प्रकार से उपासना गीत ही है, किन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इसमें भी ननद-भौजाई का पारस्परिक द्वेष, मां की बेटी के लिए ममता तथा पिता का लाड़ ही वर्णन किया गया है। इस शंका का समाधान इस प्रदेश में प्रचलित सांझी विषयक एक कहानी के द्वारा हो जाता है—'बीझां की कहानी, सांझी बींझा है । )

## ख्याल

२०

( यह मुसलमान धोबियों का गीत प्रथम भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम के दिनों में दिल्ली की झाँकी उपस्थित करता है। गीत से प्रकट है कि साधारण जनता किस भाँति विदेशी से छुटकारा प्राप्त करने के इस प्रयत्न में आत्म बलिदान की भावना से प्रेरित हुई थी। इतिहास की रक्षा लोक-स्मृति में गीतों द्वारा किस प्रकार संभव है, यह गीत इसका सुन्दर उदाहरण है। )

बनी बनाई फौज बिगड़ गई आ गई उलटी दिल्ली में।
शाह जफ़र का लुटा नसीबा रहने लगा हवेली में।
गंगाराम याहूदी ने जी देखो क्या काम किया।
अंग्रेजों से मिला रहा, लड़ने का ही नाम किया।
फौज ने माँगा खाने को, ना उनको कोई काम दिया।
भूखे लड़ते रहे गाजी अरु किनको सुभू शाम किया।
कोई सूरमा लड़े वहाँ पै जिनके सिर थे हथेली में।
शाह जफ़र का लुटा...

रामबक्स था किनका सहीस जी, जात पुरबिया कहलावै।
खूनी दरवाजा था जो शाह का, अपना मोरचा लगवावै।
मार मार के खंजर उनके लाशों के फरश वो बिछावै।
काले खां गोलंदाज भी यारों मोरीगेट जा दबावै।
नमकहलाली करी शाह की वो थे अल्लाकेली में।
शाह जफ़र का लुटा...

तारों मोरचे तोड़े खाकियों ने चारों को फिर मरवायाँ।
दसों दरवाजे दसों मोरिये सबको उसने तुड़वाया।
शहर पनाँ थी जो शहर की वहीं लाशों को लटकाया।
तड़प तड़प के मर गये गाजी पानी तक ना मुहं को लाया।
हर एक एक का दुश्मन यारों जो थे लोग देहली मे।
शाह जफ़र का लुटा नसीबा...

शहजादी जन्नत निशां न बादशाह का पता रहा।
हिन्दुस्तान का देखो यारो तख्त इस तरह हुआ तबाह।
शाहजादे भी हुए रवाना ना दिन कोई लगा पता।
खोद खोद खाइयें तक ढूंढी ना दरिया में लगा निशां।
काले खां को मरवा दिया और चारों तड़फते देहली में।
शाह जफर का लुटा....

लाखों तड़फ तड़फ के गिरते सेठ और साऊकार वहां।
क्या अमीर क्या नवाब वहां के गदर हिन्द में दिये फला।
हरेक जान को फिरे क्याण रिजक तलक से हुए तबाह।
मुरशीद चांद ने देखो यारों गदर का ये मजमून लिखा।
घीसा खलीफा कहे ख्याल को सुरवन आज अलबेली में।
शाह जफ़र का लुटा नसीबा...

## होलिया

२१

राजा जनक नैन भर रोये ।
बनी बात बिगड़ी आके अब ये बिधना तै क्या ठानी ।
अब ना राम है बचे किसी से सिया करम की है हानी ।
परसराम का तबल जबर है, हम दीन दुनी से खोये ।
नाम लिये से रामचन्द्र का फौरन गरदन मारेगा ।
कोमल बदन उमर के बाले, जिन्हें ऋषी हन डालेगा ।
हँसी करेंगी परजा सारी, मेरे हो गये आज बिगोए ।
जितने दुसमन रामचन्दर के सारे हँसे अपने मन में ।
राम-लखन की जान बचै ना, मारे जांगे कोई छिन में ।
आम कहाँ से खावें भाई, जाने पेड़ बबूल के बोऐ ।

## मल्होर

२२

'मल्होर' कोल्हू के गीत हैं। रात्रि के निस्तब्ध वातावरण में कोल्हू पर काम करने वाले किसान का हृदय रस-सिक्त होकर जब उमाह भरी तान छेड़ता है, तो सारा जंगल गूँज जाता है। मल्होर, वास्तव में 'दोहा' छंद हैं—जिनमें विशेषकर शृंगार और यों नीति, उपदेश तथा ज्ञान के शीतल छींटें मिलते हैं। मेरठ जिले तथा अन्य निकटवर्ती प्रदेश में गन्ना-मिलों की अधिकता हो जाने से अब कोल्हू थोड़ी जगह ही चलाए जाते हैं। अतः लोग मल्होर को भूलते जा रहे हैं। कौन जाने यंत्र का दानव ऐसे कितने कोमल भावों को चट कर जायगा।

अंगिया तेरी रेसमी, लम्या हजारी सूत
घूंघट के पट खोलिए, तेरा जीवे गोद का पूत ॥ १ ॥

मेरा बाबला मल्होर ।

अंगिया मेरी रेसमी, ना लग्या हजारी सूत ।
घूंघट के पट ना खुलें, चा मरो गोद का पूत ॥ २ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

अम्बर में तारे खिले, जग में खिला बबूल ।
गोरी का मुरमा खिला, जैसा खिला कमल का फूल ॥ ३ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

कोट्ठे ऊप्पर कोठड़ी, उसमें घड़े सुनार ।
बिछवे छड़दे बाजणे, जो चार सुणैं झन्कार ॥ ४ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

जोबन तेरे कारणैं, छोड़े माई बाप ।
सात्तन छोड़ी सात की, हिरना बरगी नार ॥ ५ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

रतन कटोरी घी जले, चूल्हे जले कसार ।
घूंघट में गोरी जले, जो हिणें मरद की नार ॥ ६ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

लीला लेदूं लील का, फूंकूं पेले पात ।
सीसा फोडूं बाट पै, जो चलूं तुम्हारे साथ ॥ ७ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

लीला ले दूं लील का, ले दूं पेले पात ।
सीसा ले दूं दमकणा, जो चले हमारे साथ ॥ ८ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

कोट्ठे ऊप्पर कोठड़ी, खड़ी सुखाऊं केस ।
यार दिखाई दे गिया, मैं भरूं मरद का भेस ॥ ९ ॥
मेरा बाबला मल्होर ।

हैर बड़े हिरना बड़े, सुगनीं बड़े किसान ।
अर्जन रथ कूं हांक दे, भली करे भगवान ॥१०॥

मेरा बाबला मल्हौर।

राम बढ़ाए सब बढ़े, बलकर बढ़े न कोय।
बल करके रावन बढ़ा, छिन में डाला खोय ॥११॥

मेरा बाबला मल्हौर।

पत्ता टूटा डाल से, ले गई पमन उड़ाय।
अब के बिछड़ें कब मिलें, कहीं दूर पड़ेंगे जाय ॥१२॥

मेरा बाबला मल्हौर।

ऐड़ी तेरी चोचली, और कमर लटक रहे केस।
किस रसिया के दल में, तूने भरा मरद का भेस ॥१३॥

मेरा बाबला मल्हौर।

ऐड़ी तेरी चोचली और कमर लटक रहे केस।
बाबुल मेरे बरिहाखुए, मैंने ढूंढे चारों देस ॥१४॥

मेरा बाबला मल्हौर।

आवण आवण कर गये, आए न बारह मास।
छपर पुराना हो गया, खड़कन लागे बांस ॥१५॥

मेरा बाबला मल्हौर।

संध्या सुमरन आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा बाछा करमना, जब तक घट में आस ॥१६॥

मेरा बाबला मल्हौर।

चेंटी ब्याई भूंड़ में, खेस दिया मन तीस।
गुरुसिस्स सब छक रहे, बचा खेस मन बीस ॥१७॥

मेरा बाबला मल्हौर।

माला मन से लड़ पड़ी, प्यारे क्या वी भिड़ावे मोय।
मन को निहचें राखिये, राम मिला द्यूंगी तोय ॥१८॥

रे मेरे बावले मल्हौर।

कर सांसा की सुमरनी, अजपा का कर जाप।
प्रेम तत्त्व का ध्यान धर, सोहं आयो जाय ॥१९॥

रे मेरे बावले मल्हार।

गाड़ी के गड़वा लिया, तेरी गाड़ी भरी है मसूर।
हौले हौले हाँकिए, अभी मंजल पड़ी है दूर॥ २० ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

जिनका ऊँचा बैठणा, जिनके खेत निवाण।
तिनका बैरी क्या करै, जिनके मीत दिवांण॥ २१ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

मारू मारू सब कहें, मारू यहाँ का देस।
मारू यहाँ के रूखड़ा, तू अपनाई मारग देख॥ २२ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

बुध राजा के बाग में, प्यारे उतरे ढोल कवांर।
बँगला मखन नार का, कहीं बैठे आसनु मार॥ २३ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

तोता बोला आम पै, सूआ चतुर सुजान।
पानी मतना पीजिये ढोला आते ही के सान॥ २४ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

साँई भी अखिया कैरिये, बैरी मुलक जहान।
टुक इक भोला महर का, कहीं लाखों करै सलाम॥ २५ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

जोबन भी था जब रूप था, गाहक भी थे सब कोय।
बाला रतण गमायके, मैं तो रही निमाँणी होय॥ २६ ॥

रे मेरे बावले मल्हार।

जोबन भी चला रूप कै, पड़ लिया लम्बी राय।
कैसे भी पकडूं दौड़ के, मेरे गोड़ो में दम नाय॥ २७ ॥

रे मेरे बाबले मल्हार।

जोबन तेरे लाड़ करूँ, रिंस भर राखूं खीर।
न्यौंत जिमाऊँ बालमा, कहीं सगी ननद का बीर॥ २८ ॥

रे मेरे बाबले मल्हार।
बलमा खेती ते करी, ना खेती से हेत।
साग तोड़ने में गई, तेरा खाया मिरगन खेत ॥ २६ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
फुलका पोदे लपझपे, हरियल धर दे साग।
लम्बी सी दे दै लाकड़ी, गौसे पै धरदे आग ॥ ३० ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
किस राजा के जौ-चने, किस के बाड़ी-बाग।
किस राजा की स्त्री, काहे ते तोड़े साग ॥ ३१ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
सुसर हमारे जौ चने, जैठा बाड़ी बाग।
बुध राजा की स्त्री, मैं तो नहिं तोड़ू साग ॥ ३२ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
किस गल बांधू गाँड़ली, किस गल मुनिया टाल।
रात-रात के भीतरे, वन मारूँ ले देऊँ मिलाय ॥ ३३ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
ढोला भी वहाँ से चल दिया, हो कर के असवार।
पीछे से रेवा आ लई, कहीं समन्दर पै पकड़े जाय ॥ ३४ ॥
रे मेरे बावले मल्हार।
नदी किनारे रुखना उस पर बैठा भूत।
भूत बिचारा क्या करे, बाह्मनों में चल रहा जूत ॥ ३५ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
आम की लाकड़ी थोथरी, सीसम की लकड़ी लाल।
प्रोफेसरनी के बँधरे घुंघरूँ, प्रोफैसर के बँध रही टाल ॥ ३६ ॥
रे मेरे बाबले मल्हार।
अपने कोठे पै खड़ी तले खड़ा मेरा जेठ।
ढाई पाठ का ओढ़ना, कहीं मूं ढकूं कै पेट ॥ ३७ ॥

रे मेरे बाबले मल्होर।

करिहा भी बोला करके, प्यारे सुनले ढोलकँवार।
खाँड़ा पूंछ में मार दे, मैं उतरूँगा परली पार॥ ३८॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

कल्लर में की बेरिया, छज्झे पै बेर एक सौ एक।
तेरे तले कूं ढोला गया, तैने क्यूं न राखा फेर॥ ३९॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

मैं कल्लर की बेरिया, मुज्झ पै बेर एक सौ एक।
पक्के पक्के खा गया, मेरे कच्चों का कर गया ढेर॥ ४०॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

चालन दे अब चाकरी, प्यारे पीसण दे अब नाज।
जों साई के लाल हैं, वो लगै की लड़ आज॥ ४१॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

क्रीकड़ काटूं कस करूं, कस कर करूं मलान।
काटन वाले चल बसे, अब किस पर करूं गुमान॥ ४२॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

चलती चाकी देख के, प्यारे दिया कबीरा रोय।
दो पाटों के बीच में, कहीं साबत रहा ना कोय॥ ४३॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

राम झरोके बैठ के, सबका मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, उसको वैसा ही देय॥ ४५॥
रे मेरे बाबले मल्होर।

## सावन का गीत

### २३

इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।

.........................................

बाग तमासों सासू, मैं गई जी,
है जी कोई सुणयाई नवी नवी बात,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
कीचर दीघत ऊनकी जी,
कीचर बरसण हार,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
पच्छम दी दीघत ऊमकी जी,
हे जी कोई पूरब बरसण हार,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
(अम्मा) एक जो चम्मा सासु में सुणा जी,
हे जी कोई थारे बेटा का दूजा ब्याह,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
क्याय तो सासु ओछे बाप की जी,
हे जी कोई क्याय लाई थोड़ी दात,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
नाय तो बहू ओछे बाप की जी ।
हे जी कोई छकड़ों में आई थारी दात,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ॥
तमा री बहूरी, रंग साँवली जी,
हे जी कोई मेरे बेटा गोरी धनका चाव,

इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
तमारी बहू री बांझ कोक की जी,
हे जी कोई मेरे बेटा बालकों का चाव,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
अन्धे तो कोइ रे डेढ सौ जी,
हे जी लँगड़े तौ होंगें पचास,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
कोट्ठे तो चढ़के मैं देखती जी,
हे जी कोई राजा की तो चढ़ी है बरात,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
कहाँय उतारूँ छोटी सौक कू जी,
हे जी कोई कहाँ उतारूँ सोबा दात,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
महलों में उतारो सोबा दात,
हे जी कोई कुरड़ी उतारो छोटी सौक,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
सौकन उतारण सासू मैं चली जी,
हे जी कोई खोट्टा सा रुपया मेरे हाथ,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
सौकन नौतन मैं चली जी,
हे जी कोई खीर में दे दिया जहर,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।
सौकन जो मरी सासू मैं सुनी जी,
हे जी कोई गज का तो लिया घूँघट काढ़,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।
घूँघट रोवै मन हँसे जी,
हे जी कोई जिबड़ा तो करे है खिलार,
इन्दर राजा बागों में झुक रहे जी ।।

# बुन्देली लोकगीत

संकलनकर्त्ता
श्री कृष्णानन्द गुप्त

## गीतानुक्रमणी

# सोहरे

१

पैंले पहर कौ सपनो सुनों मोरी सासोजी महाराज।
राम लखन दोऊ भैंया अँगन विच तप करें महाराज।
बैया लेंयँ वेला भर तेल सांतिया लिख रहीं महाराज।
भौजी बैठी झांझ झझोटें हार नौनें गुह रहीं, महाराज।

मांयँ सें आ गईं बारी बैया बे हँस बोलियो महाराज।
भौजी हुईयें तुम्हारे नन्दलाल हार हम लै लैहें महाराज।
चूमो बैया तोरी हतुलिया घिया गुर मों भरौं, महाराज।
जो बैया हुईयें नन्दलाल हार तुम लें लियो महाराज।
भोर भये भुनसारे ललन प्यारे हो गये महाराज।
धीरें धीरें बाजें बधैयाँ धीरें सखी सोहरे महाराज।
जो सुन पैहे ननदिया हार मोरे लै लैहे, महाराज।
भोर भये भुनसारे ननद बाई आ गई, महाराज।
कैसीं बाजे धीरी बधैयाँ, कैसे धीरे सोहरे महाराज।
कै भौजी के भई धियरा, सो धीरे सोहरे महाराज।
भौजी के भये नन्दलाल, धिया तुम जनो महाराज।
गांव के ढिमरा पकर मँगवैयो महाराज।
अवका धतूरे की जरें खुदवा मँगवैयो महाराज।
घिस लुड़िया पिसवैयो कटोरन छानियो महाराज।
सो बारी बैया खों दियो पियाय, हार मोरे बच जैहें महाराज।
मांयँ सें आ गये राजा बीरन बे हँस बोलियो महाराज।
जो पूजे सो दैयो बहिन मोरी जिन मारो, महाराज।
काशी के पंडित बुलैयो, बेद बचवैयो महाराज।
लरका के आजुल खों गीत सुनवाइयो, महाराज।
आजा उनके राजा महाराजा, आजी पटरनियाँ, महाराज।
भैया उनके अर्जुन भीम, बहन सुहद्रा सी, महाराज।
लरका के नाना खों गीत बाँच सुनवाइयो महाराज।
नाना उनके असल चमार, नानी जोरे जूता, महाराज।
भैया उनके मृदंग बजावें, बहन जग बेड़नी, महाराज।
सो जग बेड़नी कौ लाला कोई नईं खिलाइयो, महाराज।
तोरे नईं भौजी लाला, गरब नईं कीजिये महाराज।
जौ अर्जुन भीम कौ लाला सबई खिलाइयें महाराज।

—गरौठा, झांसी से

२

जिठानी कें भय नन्दलाल, कहौं तौ पिया देख आवें महाराज।
सासू की हटकी न मानी, सखिन संग निग चलीं, महाराज।
पिया की हटकी न मानी, सखिन संग निग चली महाराज।
सासू नें डारीं पिड़ियाँ, ननद आदर करै, महाराज।
जो सुनी बिछियन झनकार, जिजी नें लाला ढाँप लये महाराज।
इतनी के सुनतन देखत देवरानी मुरक आई महाराज।
मनईं मन कर सोच, मनईं मन रो रई, महाराज।
चलौ लाला हाट बजार, ललन मोल लै देओ, महाराज।
कैसी भौजी मूरख अजान, ललन मोल ना मिलें, महाराज।
गौंअन के करौ भौजी दान, कन्यन के करौ बियाव हो महाराज।
जमुना के करौ असनान, चिरैयन चुन डारौ महाराज।
लग गये पैले मास तौ दूजे लागियो महाराज।
तीजे मास जब लागे, तौ चौथे लागियो महाराज।
चौथे मास जब लागे, जिमिरियन मन चलै महाराज।
पाँचए मास जब लागे नरंगिअन मन चलै महाराज।
लग गये छटएँ मास, बिहिअन पै मन चलै महाराज।
लग गये सातएँ मास तौ निबुअन पै मन चलै महाराज।
लग गये आठएँ मास तौ सदाफल पै मन चलै महाराज।
हो गये नौ दस मास, ललन नौनें हो परे महाराज।
देवरनियाँ के भये नौनें लाल कहौ तौ पिया देख आवें महाराज।
राजा की हटकी न मानी सखिन संग निग चलीं महाराज।
सासू ने डारीं पिड़ियाँ, ननद आदर करै महाराज।
सुन बिछिअन झनकार, देवरानी नें लाल दै दये महाराज।
तुम लुहरी हम जेठी ऊ दिना कौं बुरौ जिन माँनियौ, महाराज।

३

कब सें उठाय लियाई सगुना नँनदी, कब सें उठाय लियाई सगुना।
जब सें भौजी तुम गरभ जनाओ, तब सें उठाय लियाई सगुना।
जबै भौजी तोरे लालन होयहें लैहों रवारदार ककनाँ
भौजी लैहों रवारदार ककनाँ।
जो ननदी मेरे लालन होयहें दैहों रवारदार ककनाँ
ननदी, दैहों रवारदार ककनाँ।
भोर भये पौ फाटन लागी, नँनदी कौ मन अलबल खलबल।
भौजी कौ मन दुखित है अमन, चनमन, कै आय कें लैहों रवारदार ककनाँ।
ककनाँ ककनाँ नाँ करौ नँनदी, नैहर के आयँ मोरे ककनाँ।
ननदी नैहर के आयँ मोरे ककनाँ।
मायके, मायके ना करौ भौजी, छुवन न दैहों अपने बिरना,
कै छुवन न दैहो अपने बिरना।
कपड़न की ओट भौजी ककनाँ उतारे पहिरो रवारदार ककनाँ,
कै ननदी पहिरो रवारदार ककनाँ।
ककनाँ पहिर ननदी अँगना में ठाड़ीं कै जुगजुग जिये तोरा ललना।

४

ऐसी गरबीली नाइन, लाल कौ नरा न छीने।
हथिया चढ़े मोरे ससुरा जो बुलावें, हथिया चढ़े ना आवै
ऐसी गरबीली नाइन......।
घोड़ा चढ़े मोरे जेठा जो बुलावें घुड़ला चढ़े न आवै
ऐसी गरबीली नाइन......।
उँटला चढ़े मोरे देवरा जो बुलावें, उँटला चढ़े ना आवै
ऐसी गरबीली नाइन......।
डोला सजाय मोरे सैयाँ जो गये हैं, डोला चढ़ तुरतई जो आवे।
नाइन लाल कौ नरा जो छीने।

५

आज दिन सोने कौ महाराज ।
सोने कौ सब दिन सोने की रात, सोने कलश धराओ महाराज ।
सोने के कलशा धराओ मोरी सजनी, मोतिअन चौक पुराव महाराज ।
रानी कौशल्या चौक में आई अंचल गोद खिलाय महाराज ।
तातीं जलेबी दूधा के लड़ुआ आज दिन जेवन कौ महाराज ।
कंचन भारी गंगाजल पानी आज दिन पीवे कौ महाराज ।
भोर भये कोयलिया बोली आज दिन सुनवे कौ महाराज ।

## कुआँ पूजने के गीत

६

[ संतान प्रसव के लगभग एक अथवा डेढ़ महीने पश्चात् और कभी कभी शीघ्र भी प्रसूता को घर से बाहर ले जाने का दस्तूर होता है। उस समय वह गाजे-बाजे के साथ निकट के किसी कुएँ पर पानी भरने जाती है और कुएँ का पूजन करती है। प्रथम दो गीत उसी समय मार्ग में गाये जाते हैं। तीसरा गीत पानी भरने का है। चौथा गीत उस समय गाया जाता है जब प्रसूता घर के द्वार पर वापस आने पर रुकती है। उस समय उसका देवर अथवा रिश्ते में देवर लगने वाला कोई लड़का उसके सिर पर से घड़ा उतारता है। इसके लिए उसे नेंग मिलता है। ]

### पहला गीत

ऊपर बादर घहरायँ तरें गोरी धन पानी खों निकरीं।
जाय जो कइयो उन राजा ससुर सों,
अँगना में कुइँया खुदाव,
तुमारी बहू पनियाँ खों निकरी।
जाय जो कइयो उन राजा जेठ सों,
चंदन पाटे डराव,
तुमारी बहू पनियाँ खों निकरी।
जाय जी कइयो उन राजा देवर सों,
रेसम लेज मँगाव,
तुमारी भौजी पानी खों निकरी।
जाय जो कइयो उन राजा नन्देउ सों,
कुअला पै गर्रा धराव,
तुमारी सरज पानी खों निकरी।

जाय जो कइयो उन राजा बलम सों,
सोने के कलश मँगाव,
तुमारी धन पनियां खों निकरी।

## दूसरा गीत

जल खों कौन जात पनहारी तुम ठाँड़ी रहियो।
कौन जात पनहारी।
किनकी बहू कौन की बेटी, कौन पुरुष की नारी।
तुम ठाँड़ी रहियो।
दसरथ की बहू, जनकजू की बेटी, रामचन्द्र की नारी।
तुम ठाँड़ी रहियो।
सिर पै घड़ा-घड़ा पै झारू, रेशम लेज न्यारी।
तुम ठाँड़ी रहियो।

## तीसरा गीत

गर्रा पै डोरी डार गुइयाँ।
डार गुइयाँ हो डराव गुइयाँ।
गर्रा पै डोरी जब नौंनी लागे
गोरी गोरी बैयाँ होयँ गुइयाँ। गर्रा पै०
गोरी गोरी बैयाँ तो जब नौंनी लागे,
हरी पीरी चुरियाँ होयँ गुइयाँ। गर्रा पै०
हरी पीरी चुरियाँ तो जब नौंनी लागे,
सैयाँ रसीले होयँ गुइयाँ। गर्रा पै०

## चौथा गीत

हम पैरें मूँगन की माला हमारी कोऊ गगरी उतारो।
एक हाथ लाला गगरी उतारो दूजे से कुँडरी सँमारो।
गगरी उतारो लाला पगड़ी सँमारा, ऊपर से डारो दुसाला।
कहाँ गये तोरे सैंयाँ गुसैंयाँ कहाँ गये बारे लाला।
हाटै गये तोरे सैंयाँ गुसैंयाँ मदरसे गये बारे लाला।
आ गये तोरे सैंयाँ गुसैंयाँ आ गये बारे लाला।

# गारी विवाह के गीत

७

## टीका के समय का गीत

कँहना के भले मालिया जिन बाग लगाये।
कँहना की बेटी कोकिला फुल बीनन आई।
कँहना के भले कोटिया जिन कोट उठाये।
कँहना के बड़े तापसी चढ़ व्याहन आये।
झांसी के बड़े कोटिया जिन कोट उठाये।
दतिया के बड़े तापसी चढ़ व्याहन आये।
कोट नवे पर्वत नवे सिर नवै नहिं कोई।
आजुल जू कौ माथौ जब नवै जब साजन आवें।
काकुल जू कौ माथौ जब नवै जब साजन आवें।
वीरन जूकौ माथौ जब नवै जब साजन आवें।

८

प्यारी सीता जू की परतीं भाँवरें जू।

पहली भाँवर बेटी जब परी, बेटी अजहूँ हमारी जू।

दूजी भाँवर बेटी जब परी, बेटी अजहूँ हमारी जू।

तीजी भाँवर बेटी जब परी बेटी अजहूँ हमारी जू।

चौथी भाँवर बेटी जब परी बेटी अजहूँ हमारी जू।

पाँचई भाँवर बेटी जब परी बेटी अजहूँ हमारी जू।

छठईं भाँवर बेटी जब परी बेटी अजहूँ हमारी जू।

सातईं भाँवर बेटी जब परी बेटी भई पराई जू।

माय-बावुल जुर मिल हरदी ल्याय जू।

बेटी के हाथे पीरी करके धर दये सजन जू के हाथ जू।

६

## [ बेटी के बिदा का गीत ]

काये खाँ बिटियाँ जनम धरे, मोरी माई, काये खाँ दई परदेस ?
पाप पुन्न खाँ बेटी जनमी, पठैं दई परदेस।
माई मोरी बिरन लिवौआ पहुँचाइयो आयो सावन।
किनने दये माई नौ मन सोने किन नें लाल पटोर।
भैया नें दीनें नौ मन सोने, बबूला नें लाल पटोर।
किननें दीनें चढ़त के घुड़ला किननें हिये के हार।
बिरन नें दीनें चढ़त के घुड़ला भौजी हिये के हार।
किन के रोये नदियाँ जो बाढ़ीं किन के रोये बेलाताल।
भैया के रोये नदियाँ जो बाढ़ीं बाबुल के रोये बेलाताल।
भैया के रोये भींजी जो स्वाफी, भौजी के जियरा कठोर।
माई कहै बेटी निस दिन आइयो बाबुल कहे दोई जोर।
भैना कहै बैना औसर में आइयो, भौजी कहै कौन काम।

१०

चलन चलन साजन कहें, राजा आजुल चलन न देयँ।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
चलन चलन साजन कहें राजा काकुल चलन न देयँ।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
दान जो देहौं साजन दायजो सतलड़ देहौं साजन पचलड़ देहौं।
एक नहिं देहौं अपनी धिया, जिन बिन घर होय बिसूनो।
दानईं छोड़ो साजन दायजो, सतलड़ छोड़ी साजन, पचलड़।
एक नहिं छोड़ों तुमरी धिया जिन बिन बरात बिसूनी।
चलन चलन साजन कहें राजा आजुल चलन न देयँ।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
गुबरा पाथन खों धीया न दीनीं, पै तपबे खों राम रसोई।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
बाबुल की बेटी मोरी लाड़ली, मैया के बसत पिरान।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
काकुल की बेटी मोरी लाड़ली काकी रानी के बसत पिरान।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
चलन चलन साजन कहें बीरन चलन न देयँ।
कराऔ साजनजू सों बीनती।
बीरन की बहिना मोरी लाड़ली भौजी रानी के बसत पिरान।
कराऔ साजनजू सों बीनती।

## विवाह के समय का गीत

११

आड़ो छाइन माँड़ो छाइन, छाइन हरे रे बाँस ।
जेहि चढ़ देखैं लड़िलरी के बाबुल केती दल आवें बरात ।
घोड़वा तौ आवैं अरे अनगिनतिन, हथिनी पूर पचास ।
मारे बरातिन के गली न सूझै सुरिज अलोपे जायँ ।
इतना तो देखिके लड़िलरी बाबुल झपट के दिहिन हैं किवार।
इतना देखि के काहे भभरयो बाबुल काहेका देहिन हैं किवार ।
कुछ दल आहीं देखइया सुनइया, कुछ दल आवै बरात ।
लोक कुटुम्ब सब दाइज पुजहैं तुम बापा पुज्यो भात ।
इतना बचन काहे बोल्यो बेटी, मैं कुछ काहे माँ हीन ।
भतवा रँधाय बेटी गजोवरी सुचैहौं, खांड़ खरहरे जाय ।
घियन की कुपियाँ मड़ये धरइहों, पुरियन सुचों कगार ।
आभर देहूँ बाखर देहूँ दाइज बैल लदाय ।
श्यामसुन्दर ऐसी धेरिया मैं सौंपों बोलिके लड़िल दमाद ।

श्रीचन्द्रभानु ( रँपुरा ) से प्राप्त

सब कोऊ सोवै रंग महलिया तुम काहे सोवो चौपार।
तुम काहे सोवो राजा नींद गाफिली, जेहि घर धिया है कुँवार।
होय दे रानी भोर भिनसरवा, देस के पंडित बोलाऊँ।
धावो रे नौआ, धावो रे बारी, धावो बमन के पूत।
जाओ बेटी का जोग वर ढूँढ़ो, बेटी का रचौं बियाह।
उत्तर ढूँढ़िन दक्खिन ढूँढ़िन, ढूँढ़िन जूड़ट तर हार।
तुम्हें जोग वर ना मिलै बेटी, तुम धिया रहो कुँवार।
खंभा के ओट ह्वै के बोली है लड़िलरी, सुन बापा बचन हमार।
उत्तर दिसा एक नगर अजोध्या, कुँवर खेलैं दुई भाई।
गोरे कुँवर का जनि देख्यो पंडित, सँवरे का तिलक चढ़ाव।
छीछिल ताला घन उरई, पुरइन लहरैं लेय।
जौने कहत दुलहे की धोतिया पखारैं, ससुरजी बैठे नहायँ।
अँखियाँ तौ तुम्हारी आम की फँकिया, नाक सुवा की चोंच।
पेंडुरी तो तुम्हरी कुडेर की भाँईं काहे घर रहे कुँवार।
बबुली मोरे रिहुनियाँ के राजा, पितिया रहे सूबेदार।
माया हमार कुल नैहर माँ छाई, को मोरा रचै बियाह।
बबुली छोड़ रिहुनियाँ रजधानी, पितिया हमार सूबेदार।
माया हमार कुल नैहर से आयी, अब मोरा रचा है बियाह।
लाली गाय के लाले बछेरुवा, चरै हरेरी दूब।
गोरी मयरिया के गोरे ललनवाँ, पियैं कटोरवन दूध।
को मोरे पहिरै रुनझुन कपड़ा, को मोरे लहर पटोर।
को मोरे पहिरै खुली पियरिया, आरति लेइ उतार।
काकी मोरी पहिरै रुनझुन कपड़ा, फूफी मोरी लहर पटोर,
मोरी माया पहिरै खुलि पयरिया, आरति लेइ उतार।
आरती उतारिन पालकी निहारिन, मुँहियाँ गई कुम्हिलाय।
आज तौ भैया हमरे कोरउना, परौं बिराने देश।
पहिले पहर चढ़ाय चढ़इहौ, दुसरे पहर बियाह।
तिसरे पहर माँ परिछन करिकै, कोरवा माँ करिहौ बिहान।

—बांदा जिले के (रैंपुरा ग्राम) से श्री चन्द्र भानु जी

## सुरहिन

### १३

दिन की ऊरन, किरन की फटन, सुरहिन बन खों जायँ हो मां।
इक बिन चाली सुरहिन दुज बन चाली, तिज बन पौंची जायँ हो मां।
कजली बन में चन्दन हरो बिरछा, जाँ सुरहिन मों डारौ हो मां।
इक मों घालो, सुरहिन दुज मों घालो, तिज मों सिंघा गुंजार हो मां।
अब की चूक बकस बारे सिंघा, घर बछरा नादान हो मां।
को तोरो सुरहिन लाग लगनियाँ को तोरो होत जमान हो मां।
चन्दा सुरज मोरे लाग लगनियाँ बनसपत होत जमान हो मां।
चन्दा, सुरज दोऊ ऊँगें अथैवें बनसपत झर जाय हो मां।
धरती के बासक मोरे लाग लगनियाँ धरती होत जमान हो मां।
इक बन चाली सुरहिन, दुज बन चाली तिज बन बगर रम्हानी हो मां।
बन की फेरी सुरहिन टगरन आई बछरे राम्ह सुनाई हो मां।
आओ आओ बछरा, पीलो मेरो दुदुआ, सिंघा बचन हार आई हो मां।
हारे दुदुआ न पियों मोरी माता चलों तुम्हारे संग हो मां।
आगें आगें बछरा पाछें पाछें सुरहिन दोऊ मिल बन खों जायँ हो मां।
इक बन चाली सुरहिन दुज बन चाली तिज बन पौंची जाय हो मां।
उठ उठ हेरै बन कौ सिंघा, सुरहिन अजहुँ न आई हो मां।
बोल की बाँदी बचन की साँची, एक सें गई दो सें आई हो मां।
पैलें ममइया हमई सों भख लो पाँछें हमारी मांय हो मां।
कौनें भनेजा तोय सिख-बुध दीन्हीं कौन लगौ गुर कान हो मां।
देवी जालपा सिख-बुध दीन्हीं बीर लंगर लगे कान हो मां।
जौ कजली बन तेरो भनेजा, छुटक चरो मैदान हो मां।
सौ गऊ आँगें, सौ गऊ पांछें, हुईयो बगर के साँढ़ हो, मां।

## जगदेव का पवारा

१४

कासमीर कहँ छोड़ भुमानी नगरकोट कहँ आई हो, माँ।
कासमीर को पापी राजा सेवा हमारी न जानी, हो, माँ।
नगरकोट धरमासन राजा कर कन्या बिलमाई हो, माँ।
कन्या कर बिलमावे बारौ राजा पलना डार भुलाई, हो, माँ।
पलना डार भुलावे बारो राजा मुतियन चौक पुराये, हो, माँ।
मुतियन चौक पुरावे बारो राजा कंचन कलश धराये हो, माँ।
देवी जालपा राजा धरमासन खेलें पाँसासार हो, माँ।
कौना के पाँसे रतन सँवारे, कौना के पाँसे लाल हो, माँ।
देवी के पाँसे रतन सँवारे धरमासन के पाँसे लाल हो, माँ।
पैले पाँसे डारे धरमासन परो न एकऊ दाव हो, माँ।
दूजे पाँसें डारे भुमानी, परे पचीसऊ दाव हो, माँ।
हँस हँस पूंछे भइया लँगरवा को हारो को जीतो हो, माँ।
हार चलो धरमासन राजा, जीती मोरी आद भुमानी हो, माँ,
मनसें चली मोरी आद भुमानी सात समुद खाँ जाय, हो, माँ।
सात समुद पै डोलै भुमानी, डोलै डोलै बरन छिपाये हो, माँ।
मलिहा, मलिहा टेरे भुमानी, मलहा के नाव लियाओ, हो, माँ।
आज बसा लयों बारु रेत में भोरई उतारों पैले पार हो, माँ।
पाँच टका गाँठी के खोलो, जबई उतारों पैले पार हो, माँ।

गर्ब न कर मलहा के बारे, गर्बई होतँ बिनास, हो, माँ।
गर्ब करो लंका के रावन सोने की लंका बिनासी हो, माँ।
गर्ब करो वन की घुँघचू ने लाल बदन, मौं कारे, हो, माँ।
गर्ब करो चकई चकवा ने सोने की रैन बिछोई हो, माँ।
गर्ब करो रतनाकर सागर, जल खारे कर डारे हो, माँ।
पैंली चुरू जल अचये भुमानी समुद गये खलयाये हो, माँ।
दूजी चुरू जल अचये भुमानी, समुदा कीच गिलाये, हो, माँ।
तीजी चुरू जल अचये भुमानी, समुदा धूर उड़ाय हो, माँ।
उठ राजोमछ बिनती करत हैं, जिया-जोव मर जायें, हो, माँ।
जैंसें तैंसें समुद भरा दो, अबई उतारों मैं पैले पार हो, माँ।
कारी घटा, उर पीरी बदरिया जे दोऊ उनई जायँ हो, माँ।
सात समुद पै जल वरसाये, बरस घोरा घोर हो, माँ।
भरे समुद में सिंघा नचावें जलऊ न डूबे पाँव हो, माँ।
मनसें चली आद भुमानी, हूलानगर खाँ जाय हो, माँ।
हूलानगर में डोलै भुमानी, लेवे सबके भाव हो, माँ।
मनसें चली मोरी आद भुमानी, जगदेवजू के रावरन जाय हो, माँ।
आवत देखो जगदेवजू की रानी, मन में गई मुसकाय हो, माँ।
आव आव री मोरी आद भुमानी जीयरा के परम अधार हो, माँ।
काये कें पटरन डारों बैठका, काये कें पखारों दोई पाँव हो, माँ।
चंदन पटरी डारो बैठका, दूधा पखारो दोई पाँव हो, माँ।
ताते से मौंड़े, माई सिमई बना लो और सुरहन दूध हो, माँ।
सोने के थार परोसे बारी रानी, रूपे कचुल्लन दूध हो, माँ।
पाँच गिरास करे जग-तारन थार दये सरकाय हो, माँ।
उठ उठ देखें मोरी आद भुमानी जगदेवजू कुँवर न दिखायँ हो, माँ।
टका कौ चाकर कहिये पँवारो, घर आय, तीसरे पार हो, माँ।
मन सें चली मोरी आद भुमानी दलपंगरे की रावरन जाय हो, माँ।
सीस उगारें माई लटें फिकारें, कैसी आई माँज दुपारी हो, माँ।
तोरी सभा में को है ऐसो राजा, जो मोरे माथे ढाँके हो, माँ।
थान दसक मँगवाये दल पंगरे, माथे न ढँकन होय हो, माँ।
कै मोरे माथें ढाँकि रे.जगदेव, कै उरअई कौं रइया राव हो, माँ।

जो कछू देवे राजा रे जगदेव, जीसों चौगुनों दियों हो, माँ।
जगदेव देवे दस परगनों, मैं देयों राजतिहाई हो, माँ।
जगदेव देवे इक दो घुड़ला, मैं घुड़सार हँकाओं हो माँ।
जगदेव देवे इक दो हतिया, मैं हतसार हँकाओ हो, माँ।
जगदेव देवे मौरें रुपैया, मै दयों खिचरा भराय, हो, माँ।
जगदेव देवे खीर पपरिया, मैं दैयों डला भराय, हो, माँ।
तांवें के पत्र मँगाये जगतारन लिखवाये चौगने दान, हो, माँ।
बाचा हराय चली जगतारन, जगदेवजू की रावरन जाय हो, माँ।
आवत देखो आद भुमानी, जगदेवजू मन में गये मुसक्याय हो, माँ।
आव आव री मोरी आद भुमानी, काँनों ढार दये पाँव हो, माँ।
तोई लौं आई धारा नगरी के दै दै हमाये दान हो, माँ।
आठ दार राजा गुपत चढ़ाये नमयें दियो प्रकट चढ़ाय हो, माँ।
घरियक बिलमौ मोरी आद भुमानी, मैं रनवासे जाँव हो, माँ।
का रनियन के लेव बुलउवा, करें दान में हान, हो, माँ।
नारी कभऊं न निदरौ माता, नारी कंचन खान, हो, माँ।
नारी सें नर उपजे माता, ध्रुरू, पहलाद समान, हो, माँ।
नारी सें राजा करन भये माता, दै लये सबाये दान, हो, माँ।
देवी जालपा ठाँड़ी दरवाजें, माँगें शीश कौ दान हो, माँ।
देव, देव रे धारा नगरी के राजा, तोरी कलऊ नामना होय।
नौ गगरा राजा ततये, धराये, दसऔं समोकन हार हो, माँ।
सपर-खोर ठाँड़े भये जगदेव, दै नरसिंगी खौर हो, माँ,
हूला बाग लौं चलिये माता, दै देयों शीश कौ दान, हो, माँ।
राजा जगदेव खाँड़े अड़ाये रनिया ओड़ लये थार, हो, माँ।
पापिन कहिये जगदेव की रानी, कटवावे पिया के शीश, हो, माँ।
ऐसो दान लैहौं न राजा, तोरी रनिया वदन मलीन, हो, माँ।
मोरे मायके में नहियाँ, ससरे में नहियाँ थोरो देत लजाओं, हो, माँ।
मोरे बलम की पतरी सी घिचिया, कह भुजबल देओं चढ़ाय हो, माँ।
रुंडा की माँछी बिड़ारत रहियो, दलपांगरे की रावरन जाँव, हो, माँ।
इक बन चाली, दो बन चाली, तिज बन पौंची जाय हो, माँ।
आवत देखो दल पंगरे राजा, मन में गयो मुसक्याय, हो, माँ।

हतिया न ल्याई, घुड़ला न ल्याई, बायनों सो दाब ल्याई, हो, माँ।
ऊपर सें पटका टारे भुमानी, दलपंगरे करो कलेऊ, हो, माँ।
थार उतार धरे धरती पै, शीश रहे मुसक्याय, हो, माँ।
डेरी सभा कर हेरे दलपंगरे दाहिनी सभा उठ जाय, हो माँ।
दाहिनी सभा कर हेरे दलपंगरे, डेरी सभा उठ जाय, हो, माँ।
कागद करत कायथ कौ रह गयो, उर नौआ कौ ढोठा हो, माँ।
दान कबूले थे दलपंगरे, देव चौगने दान हो, माँ।
घरियक बिलमों मोरी आद भुमानी, मैं रनवासे जांव, हो, माँ।
का रनियन के लेव बुलौआ, करें दान में हान, हो, माँ।
कठवा की पुतरी बोली, तुरत दान महा कल्यान, हो, माँ।
भीतर धँसत जाँय दलपंगरे, फेरत जायँ किवार, हो, मां।
देवी जालपा ठाँड़ी दरवाजें, मांगै हमारे शीश, हो, माँ।
टका की मजूरी तुम कर खैयो, में राँटा कर खाँव, हो, माँ।
सोने कुठरियन धँसो दलपंगरो, पवन लगे, न बाव, हो, माँ।
देवी जालपा सत की आगरी, पौंची मानिक चौक हो, माँ।
देवी जालपा सत की आगरी, भौंरा दये उपटाय, हो, माँ।
हौलें, हौलें काटौ मोरी माता, जियरा खाँ दरद न होय, हो, माँ।
कै दलपंगरे कोड़ी कर दैहों कै तोय करों पखान, हो, माँ।
न मोय माता कोड़ी करियो, ना करियो पखान, हो, माँ।
अपने भुवन की छिड़ियाँ बना, चढ़ आओ, चढ़ जाओ, हो, माँ।
मनसें चली मोरी आद भुमानी, हूला बाग खाँ जाय, हो, माँ।
ऐसे साँकरे का परे माता, आई चरेरे घाम, हो, माँ।
दये दान लैहों न माता, रुंडा सें मुंडा निकारौ, हो, माँ।
हटै परीं जगदेव जू की रानी, रुंडा सें मुंडा निकारौ, हो, माँ।
ऐसे दान लिइयो न माता, तोरी कलऊ में नामना होय, हो, माँ।
देवी जालपा सत की आगरीं, रुंडा सें मुंडा निकारौ, हो, माँ।

—स्व० हरजू कोरी से प्राप्त

## नौरता

१५

[ बुंदेलखण्ड में क्वाँरी लड़कियाँ नवरात्र के दिनों में एक खेल खेलती हैं किसक नाम 'नौरता' या 'सुअटा' है । ]

हिमाँचल जू की कुँवरि लड़ायँती नारे सुअटा ।
गौरा बेटी नौरता तौ अनहयो बेटी
नौ दिना दसयें दिन करियों सिंगार ।
फलाने जू की कुँवरि लड़ायँती नारे सुअटा,
फलानी बेटी नौरता तो अनहयों बेटी
नौ दिना, दसयें दिन करियो सिंगार ।

[ इस प्रकार एक एक लड़की और उसके पिता का नाम लेकर काँयँ डाली जाती हैं । ]

१६

अनसट काटौ बनसटौ काटौ, जे मौआ जिन काटौ लाल ।
जे मौआ मोरे बबुल लगाये उन तर लेखन जैहों लाल ।
खेलत खेलत घंगरा फट गओ, कोना बिरन घर जैहें लाल ।
फलाने से भैया नीरे बसत हैं, उनईं के घर जैबूँ लाल ।
उनईं कें रैबूँ उनईं कें खावूँ उनईंकें लाल खिलाबूँ लाल ।
बई सिमाँ दें घँघरा फरिया हमखाँ घूम घुमारी लाल ।
अनसट काँटौ बनसटौ काटौ जे मौआ जिन काटौ लाल ।

## १७

लहर लेतीं खैरा बमुरियाँ झोंका लेत खजूर रे।
लहरें लेतीं को को बिटियाँ उनईं के सासरे दूर रे।
आज बसेरे नीरे लैवूँ काल बसेरे दूर रे।
परों पराई देहरिया में गलियन उड़है धूर रे।
आजी ने डारौ पीसनो चिरअई चुन चुन जायँ रे।
कायखों आजुल सेंती उबारो कायखों आजी बोल रे।
हम परदेसी चिरई उड़ जैहें अपने अपने देस रे।
माई ने डारौ पीसनो चिरअईं चुन चुन जायँ रे।
कायखों बावुल सेंती उबारो, कायखों माई बोल रे।
हम परदेसी चिरई उड़ जैहें अपने अपने बसेरे
भौजी ने डारौ पीसनो चिरअईं चुन चुन जायँ रे।
कायखों भैया सेती उबारो, कायखों भौजी बोल रे।
हम परदेसी चिरई उड़ जैहें अपने अपने देस रे।
लहरें लैंती खेरा बमुरियां झोंका लेत खजूर रे।

१८

कै बाबुल दूर जुनइया जिन बइयो मो को हो, रखाउन जाय ।
कै बेटी तुमई हमारी लाड़ली सो तुमई रखाउन जाव ।
कै बाबुल नाँयँ सें जातन जाड़ौ लगत है माँय सें आउतन घाम ।
कै बेटी माँय लगा दैउँ इमली अम्मा नाँउ भरा दैउँ रजैया ।
कै बाबुल दूर जुनइया जिन बइयो
कै बाबुल नाँयँ सें जातन भूँक लगत है माँयँ सें आउतन प्यासा,
कै बेटी नाँयँ सें जातन पूरी पका देउँ, माँयँ खुदा देउँ बेलाताल ।
कै बाबुल दूरा जुनइया जिन बइया
कै बाबुल कौना लिख दये घरई के अंगना किये लिखे परदेस ?
कै बेटी भैया भौजाई खाँ घरई के अँगना तुम्हें लिखे परदेस ।
कै बेटी मरै बो नौआ, मरे बो बमना जीनें लिखे परदेस ।
कै बाबुल न मरै बो बमना ना मरै बो नौआ करम लिखे परदेस ।
कै बाबुल कगदा होय तौ बाँचियो करम न बाँचे जायँ ।
कै बाबुल कुअला होय तौ पाटियो करम न पाटे जाय ।
कै बाबुल धन होय तो बाँटियो, करम न बाँटे जायँ ।
कै बाबुल दूर जुनइया जिन बइयो सो को हो रखाउन जाय ।

१६

रावरन की बउएँ बिटिया बेंदा दयें लिलार रे।
एक कौ बेंदा ढुरई जो जइयो ढुर गये सबई सुनार रे।
ओई में ढुर गव घरई कौ देवरा उनके लंबे केस रे।
उन केसन की बनी कुँडरिया सर-सर पनियें जाँय रे।
जैसें तैसें बाबा भरन दव चन्दन रिपटो पाँव रे।
अडई न फूटी गड़ई न फूटी फूटी ससुर की जेहर लाल रे।
रोउतीं रोउतीं ससुरा ना गईं, ससुरा कहै बऊ दारी लाल।
दारी तोरी बैंन मतारी हम तौ बड़न की बेटी लाल।
रोउतीं रोउतीं जेठा ना गईं जेठा कहे बऊ दारी लाल।
दारी तोरी बैन मतारी हम तौ बड़न की बेटी लाल।
रोउतीं रोउतीं राजा ना गईं राजा कहै धन दारी लाल।
तीन दिनाँ खाँ मायके जैहों जेहर ल्याँव बदलाय लाल।
जेहर की तोरी जेहर, ल्याऊं सोने कौ खँगवार रे।
रावरन की बहुएँ बिटियां बेंदा दयें लिलार रे।

## मामुलिया

२०

चीकनी मामुलिया के चीकने पतौआ।
बरातरें लागी अथैया कैं बारी भौजी,
बरा तरें लागी अथैया।
मीठी कचरिया के मीठे जो बीजा, मीठे ससुर जू के बोल।
करई कचरिया के करए जो बीजा कर एसांस जू के बोल,
कैं बारी बैया करए सास जू के बोल।

२१

मामुलिया के आये लिवौआ, झुमक चली, झुमक चली, मोरी मामुलिया।
पैले लिवौआ ससुरा जो आये ससुरा के संगे न जैबी कै बारी भौजी,
ससुरा के संगै न जैबी।
दूजे लिवौआ जेठा जो आये जेठा के संगे न जैबी कै बारी भौजी।
जेठा के संगे न जैबी।
तीजे लिवौआ देवरा जो आये देवरा के संगै ना जैबी कै बारी भौजी।
देवरा के संगै न जैबी।
चौथे लिवौआ राजा जो आये पीनस लै आये, पीनस पै चढ़े चले जैबी।
कै बारी भौजी पीनस पै चढ़े चले जैबी।

## गोचारन का गीत

### २२

बन में धौरी गैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
कृस्नचंद उठ बड़े सबेरें,
गोबरधन पै जाइ कें घेरैं, बिन्द्राबन से गाय उबेरें,
उसरन सें सब सुरभी फेरें।
संग बलदाऊजी भैया, बन में धौरी गैया।
सरमन, टीकुल, बेंदी, गेंदी,
भोंड़ऊ, पट्टिन, बई, बगुरदी,
कारी, कजरी, कजल, करोंदी,
लंबू, लमछर, फुलइ, गुलेंदी।
नंदलाल तकवैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
मुंडी, मैंड़ी, भेंड़ी बरई,
खोंड़ू, धोंसू, स्याँमा, भौंरई,
कँड़ी डुंडी, खिलौनी, खैरई,
चंचल, चपला, चीकन, चैंरई।
चंदसखा छिकवैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
लक्खी, लाल, लखैरी लीली,
बँदरी, बदक, बदासी, हंसी,
पीरी, पड़ई रसीली, छीमर,
छरकन, छिपट, छबीली।
छली छैंल छिकुँवैया, लएं कुंवर कन्हैया।

बगुली, बगला, विचक, बगेलीं
कबरी, कामधेनु, अलबेली।
कनफर, करछन, तिलई, चमेली,
मोतिन, मुकटऊ, खरई, हमेली।
बाघन संग लिबैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
केसर, रेसम, रोजी, राजन,
मरक, मतवारी, बघराजन,
मस्तानी, गदूल, गजराजन,
हिन्नाई, झबूर, सिंहासन।
कँह फेरी बड़े भैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
सुरहिन, सुरई, सुकरतन, डाँसी,
चटकुल, मटकुल, उजरऊ, बाँसी,
सूरत, मूरत, कपला लासी,
पदमिन, गोपिन भँड़ऊ, बतासी।
तकें बंसी के बजबैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
सरजू, सुपतू, नरबद, नागर,
घूँमर, झूमर, दरसन-सागर,
जमनी, गुर्गी, बंटी, बोड़न,
मरगज, बागर, मौर, मुनागर।
लै पकवान गे घरैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
सखन-सहित मिल करें कलेवा,
पुरी-कचौरी अउर जु मेवा,
प्रभु की देव करें सब सेवा,
सुमुनि बसिष्ठहु ध्यावें देवा।
कहें धन्न जसोदा मैया, लएँ कुँवर कन्हैया।
दरसन पाकें जे ब्रज नारी,
गावें लगीं स्याम खों गारी,
मन मुसक्यावें कुंजबिहारी,
हीरालाल प्रभु सरन तिहारी,
पार लगा देव नैया लएँ कुँवर कन्हैया।
—गरौठा के दीना अहीर से प्राप्त

## सावन के गीत

### २३

ग्रोरियन ओरियन जल चुवैं, खोरियन काँदौ कीच।
कैसे निरमोहिया की धिग्ररा, ससुरे में गओ सावन लाग।
कौन बरन तोरी मैंया, कौन बरन तोरे बाप ?
कौन बरन तोरे भैया, जिन तोरी सुध हू न लीन।
चंदा बरन मोरी मैया, सुरज बरन मोरे बाप।
सोने बरन मोरे भैया, जिन मोरी सुध हू न लीन।
लोइया बरन तोरी मैया, तांबे बरन तोरे बाप।
पीतर बरन तोरे बिरना, जिन तोरी सुध हू न लीन।

ऊंचौ है कोट ससुरजी कौ, चंदन जड़े हैं किवार ।
तेहि चढ़ हेरें रजन धिया, हेरें राजा बिरन की वाट ।
आगे के घुड़ला बबुल मोरे, माँझे के पिता हमार ।
खुलीं पलकियाँ बिरन जो मोरे जो मोहि बहुत पिया ।
कहाँ जो उतरें बबुल मोरे, कहाँ पिता हमार ।
बबुल तो उतरे दोर में, पिता पौर मँझार ।
बीरन जो उतरे तमोलिन के घर में, ठाँड़े पान चबायँ ।
बाबुल की बिनती ससुरजी सें पठै दो धेरिया मोर ।
सब सखियन गाड़े हिंडोलना, छतिया फटे हमार ।
बिरना की बिनती ससुरजी सें पठवो बहिनी हमार ।
सब सखियन बौईं कजरियाँ, माता रोवे हमार ।
ऊँचो है कोट बबुल जी कौ, चंदन जड़े किवार ।
तेहि चढ़ि हेरें माई हेरत धेरिया की बाट ।
आगे के घुड़ला पिया मोरे, पाछे के देवरा पियार ।
खुली पलकियाँ पूता मोरे आवें, धेरिया कतहुँ न दिखाय ।
आओ न पूता कोख में बैठो, चालो बहिन की बात ।
का कहों मोरी मैया, मों सों कही ना जाय ।
जैसे उमहें पुरवैया के बदरा वैसे बहिन के आँस ।
रोवत बहिनी कों काहे छोड़ी पूता, काहे न आये लिवाय ।

—जिला बाँदा की एक लड़की से प्राप्त

## बारहमासी

२४

गाड़ीबारे मसक दै बैल,
अबै पुरवइया के बादर ऊन आये।
कौना बदरिया ऊनई रसिया,
कौना बरस गये मेय।
अबै पुरवइया के बादर ऊन आये।
अग्गम बदरिया ऊनई रसिया,
पच्छम बरस गये मेय।
अबै पुरवइया के बादर ऊन आये।
घुँघटा बदरिया ऊनई रसिया,
गलुअन बरस गये मेय।
अबै पुरवइया के बादर ऊन आये।

## राछरा

### २५

नदिया किनारें बेला किनने बये,
किनने बये लाल अनार ?
मालिन लगा ये रस केवरे,
मालिन लाल अनार। नदिया किनारे
काय कें गोड़ों रस केवरे,
काय कें लाल अ नार ?
कुदरन गोड़ों रस केवरे,
खुरपन लाल अनार।
काय कें सींचों रस केवरे,
काय कें लाल अनार ?
दुधवन सीचों रस केवरे
अमरत लाल अनार। नदिया किनारे

२६

बदरिया रानी बरसो बिरन के देस
कानाँ सें ऊनई कारी बदरिया कानाँ बरस गये मेह ?
ससुरे सें ऊनी कारी बदरिया, मायके बरस गये मेह।
कौना की भर गईं ताल पुखरियां, कौना के बेला ताल।
ससुरे की भर गईं ताल पुखरियाँ, मायके के बेलाताल।
कौना की जुत गईं डड़ियाँ टिकरियाँ कौना के जुते कछार ?
ससुरा की जुत गईं डड़ियाँ टिकरियाँ, बिरना के जुते कछार।
कौना के बिरन लुवांवन आये, कौना घुड़ल असवार ?
बिजुरी के बिरन लुवावन आये, बादल घुड़ल असवार।
बदरिया रानी बरसो बिरन के देस।

# बारामासी

२७

चैत मास जब लाग्यो सजनी बिछुरे कुँवर कन्हाई।
कौन उपाय करें ई ब्रज में घर अँगना न सुहाई।
बैसाख मास जब लागे सजनी घामें जोर जनाई।
पलँग सिजरिया मोंहि नींद न आवे, कान्ह कुँवर घर नाहीं।
जेठ मास जब लागे सजनी चहुँ दिस पवन झकोरैं।
पवन के ऊपर अगन उड़त है अंग-अंग कर टोरैं।
असाढ़ मास जब लागे सजनी चहुँ दिस बादर धाई।
मोरा बोलें पपीरा बोलें दादुर बचन सुहाई।
सावन मास सुहावन महीना रुमक झुमक जल बरसै।
कान्ह कुँवर कौ गड़ौ हिंडोला झूलन खों जिय तरसै।
भादों मास भयावन सजनी चहुँ दिस नदियाँ बाढ़ीं।
अपुन तौ ऊधो पार उतर गये मैं जमुना जल ठाँड़ी।
क्वाँर मास की चटक चाँदनी बाढ़ो सोच हमारो।
घर होते नैनन भर देखते आउतन कंठ जुड़ाते।
कातिक मास धरम के महीना कौन पाप हम कीन्हें।
हमसी नार अनाथ छोड़ के कुबजा खाँ सुख दीन्हें।
अगहन मास आगम के महीना चलो सखी ब्रज में चलिये।
कै हँसिये ब्रज लाल लाल सों, कै जमुना दौ धँसिये।
पूसन चुरियाँ बाँहन आई तलफ तलफ भई दुबरी।
प्रेम प्रीत की फाँस लगी है जे लालन की कुबरी।
माघ मास मैं ढूँढ़्यो मधुबन, ढूँढ़्यो वृन्दा कुंजें।
जिन कुंजन में हरि केल करत ते वे नाहर भई गुंजें।
फागुन मास फरारे सजनी सब सखि खेलें होरी।
जगन्नाथ की बारामासी गावै नंद किसोरी।

## कार्तिक स्नान-गीत

२८

आ जाऊँगी बड़े भोर

दहीरा लैकें आ जाऊँगी बड़े भोर।

ना मानों चुनरी धर राखौ, लिखे पपीरा मोर।

ना मानों कुनरी धर राखौं, मुतियन लागी कोर।

ना मानों मटकी धर राखो, सबरे बिरज कौ मोल।

ना मानों बेंदी धर राखौ, बाजू बंद हमेल।

दहीरा लैकें आ जाऊँगी बड़े भोर।

## फसल के गीत

२६

[बुन्देलखंड के फसल के गीतों में रामारे या रमटेरा, दिनरी और बिलवारी मुख्य हैं। ]

### रामारे

रामा हो ओ ओ ओ··· ··· ···
काँनाँ बाजी मुरलिया, भाई रे काँनाँ परी झनकार। रामा०
गोकल बाजी मुरलिया. भाई रे मथुरा परी झनकार। रामा०
सो इत राधा उदक गईं लयें मथनियाँ हाथ। रामा०
जरियो बरियो तोरी मुरलिया, भाई रे मरियो बजावन हार। रामा०
काहे खों जरियो बरियो मुरलिया काहे खों मरियो बजावन हार। रामा०
कच्चे से दहिया बिलुर गये, नैनूं न आये मोरे हाथ। रामा०
ठंडे से पानी गरम धरियो नैनूं उठा लेव हाथ। रामा०

रामा हो ओ ओ ओ······ भाई रे रामा हो ओ ओ ओ···············।
कुअला पै की पनहरिया भाई रे कैसे बदन मलीन। रामा०
कै तोरे हरला कुअला गिरे भाई रे कै बिचली पनिहार। रामा०
ना मोरे हरला कुअला गिरे न बिचली पनिहार। रामा०
पंछी बिचले दो जने भाई रे इक दर्जी इक मनहार। रामा०
का जो ल्यावे दर्जी कौ लरका भाई रे काजो ल्यावे मनहार। रामा०
चुलिया ल्यावे दर्जी कौ लरका भाई रे हरला ल्यावे मनहार। रामा०
कोनाँ की चोली उमाने भई भाई रे कोना के ढीले गाढ़ेहार। रामा०
साँजें बिरियाँ चाबिये चुलिया में पर गये दाग। रामा०
कै तोरे मित तमोरिया भाई रे कै गवाँ के लोग। रामा०
ना मोरे मित तमोरिया भाई रे ना मोरे गवाँ के लोग। रामा०
घरई के देवरा लाड़ले बेई भाई रे ल्यावें महोबिया पान। रामा०
साँजें बिरियाँ चाबिये भाई रे चुलिया में पर गये दाग। रामा०
अरे अरे भइया बरेठवा भाई रे चुलिया के दाग छुटाव। रामा०
जो हम तेरे दाग छुटाहें भाई रे का छुटवाई देओ। रामा०
सेरक कुदवा सासो दैहें भाई रे सेरक देयँ दुकाय। रामा०
तेरे कुदवन कौ का करौ भाई रे गधवा लौंग चबायँ। रामा०
दैहों दैहों हाथ मुदरिया और गरे कौ हार। रामा०
सिल धर फोरों तोरी हाथ मुदरिया भाई रे समुद बहाऊँ तोरे हार। रामा०
लैहों लैहों पिया के दोई खिलौना भाई रे और पिया कौ सिंगार। रामा०
पिया के दोऊ जुबनवा भाई रे मैं पापिन रखवार। रामा०
दो बिधन्ता जे दये भाई रे दो दये होते और। रामा०
दो तो राखती बारे बलम खों और दो देती तोय। रामा०

## दिनरीं

### ३०

ऐ…तौ …गैला में आवें पंछी दो जने रे भई कौना लखन कौना राम ।
ऐ…तौ…भूरी हातिनिया बारे लछमन अरे भइ, रथ पै तौ आवें भगवान ।
ऐ…तौ…कौना घर के दोई बालक अरे भाई कौना नगर खों जायँ ।
ऐ…तौ…अवधपुरी के दोई बालक अरे भाई जनक नगर खों हो जायँ ।

# बिलवारी

## ३१

सूरज के बदल गय तेज राम के रथ बिलमाये काहू साधू नें।
अर हाँ हो राम के काहे के रथला बनें, काहे की डरी है उवार।
राम के रथ बिलमाये काहू साधू ने।
सोने के रथला बनें रेसम की डरी है उवार।
अरे को इन रथलन बैठियौ को है हाँकनहार।
सीता रथ में बैठियौ और लछमन हाँकनहार।
राम के रथ बिलमाये काहू साधू ने।

# गढ़वाली लोकगीत

संकलनकर्त्ता

श्री गोविन्द 'चातक'

# गीतानुक्रमणिका

# पूजा गीत : जाग

१

[ प्रभात कालीन पूजा का प्रारम्भ पृथ्वी, सूर्य, आकाशदेव, पशु, पक्षी, देव, नाग, नर कीट-पतंग सबको जागरण का आह्वान देते हुए होता है। प्रकृति, पुरुष, जड़, चतन सभी के प्रति इस आत्मीयता पूर्ण उद्बोधन में जीव-जगत् की एकता और एकसूत्रता ही नहीं वरन् ब्रह्मांड की परिवार-भावना भी व्यक्त हुई है। ]

प्रभात को परब जाग, गौ सरूप पृथवी जाग,
धर्म सरूपी अगास जाग, उदयंकारी कांठा जाग।
भानुपंखी गरड़ जाग, सत लोक जाग।
मेघ लोक जाग, इन्द्र लोक जाग।
सूर्य लोक जाग, चन्द्र लोक जाग।
तारालोक जाग, पवन लोक जाग।
ब्रह्मा का वेद जाग, गौरी का गणेश जाग।
हरो भरो संसार जाग जन्तु जीवन जाग।
कीड़ी मकोड़ी जाग, पशु-पक्षी जाग।
नर नारैण जाग, मरद औरत जाग,
दिन अर रात जाग, जमीन आसमान जाग।
शेष समुद्र जाग, खारी समुद्र जाग,
दूदी समुद्र जाग, खैराणी समुद्र जाग।
घोर समुद्र जाग, अघोर समुद्र जाग,
प्रचंड समुद्र जाग, श्वेत बंध रामेसुर जाग।
ह्यूँ हिंवालू जाग, पयालू पाणी जाग,
गोबरधन पर्वत जाग, राधाकुंड जाग।
बाला बैजनाथ जाग, धौली दिप्रियाग जाग,
हरि हरद्वार जाग, काशी विश्वनाथ जाग।
बूढ़ा केदार जाग, भोला शम्भुनाथ जाग,
कालसी कुमौंऊ जाग, ज़ोपड़ा चौथान जाग।
फटिग का लिंग जाग, सोवन की गादी जाग।

२

[ मांगलिक कार्यों के अवसर पर औजी गृहद्वार पर ढोल-दमामा बजाते हुए गृह-स्वामी की हितकामना करते हैं। ब्राह्मणों के आशीर्वाद के समान औजी की हितकामना मांगलिक कार्यों की आवश्यक क्रिया होती है। ]

यूँ को राज रखो देवता,
माथा भाग दे देवता।
यूँ का बेटा बेटी रखो देवता,
यूँ का कुल की जोत जगौ देवता।
यूँ का खाना जश दे,
माथा भाग दे देवता।
यूँ की डाँडी कांठयों मा,
फूलीं रौ फ्योंली डैंड्योली।
यूँ कि साग सग्वाड़ी,
रौन रोज कलबली।
धरती माता सोनो बरखाओ,
नाजा का कोठारा दे,
धन का भँडारा देवता।

## मांगल : को देश

**३**

[ ससुराल से अपरिचित वधू की तत्सबंधी जिज्ञासा और अनभिज्ञता ही नहीं यहाँ ससुराल का हर्ष और मायके का विषाद भी व्यंग्य है। एक घर को सूना कर दूसरे की शोभा बनकर प्रवेश करने वाली कन्या सदैव से विषाद और हर्ष का विषय रही है। 'काली बदली' और कंगू के फूल के प्रतीकों के द्वारा यहाँ इन्हीं भावनाओं को मुखरित किया गया है। ]

दूर ह्वे पूछ दूर ह्वे पूछ बौटी हमारी
को देश शाउरियों का होलो।
जै देश होली दौड़-बड़ाई,
जो देश शाउरियों को होलो।
दूर ह्वे पूछ दूर ह्वे पूछ बौटी हमारी,
को देश शाउरियों को होलो ?
जे देश होलो बेद को शबद,
वो देश शाउरियों को होलो।
जसो देश, जसो देश मंगल गाया,
वो देश शाउरियों को होलो।
जसो देश काली बादुली,
वो होन्दे शाउरियों को घर,
जसो देश कुंगू फूले बाड़िय,
एज होन्दे मायती को घर।

## सप्तपदी

४

[ भाँवर देते हुए गायी जाने वाली यह सप्तपदी पत्नीत्व की ओर अग्रसर होने वाली कन्या के विभिन्न संबंधों और स्थितियों की ओर संकेत करती है । ]

पहिलो फेरो फेरे लाडी, कन्या च कुमारी,
दूजो फेरो फेरे लाडी, कन्या च माँ की दुलारी ।
तीजो फेरो फेरे लाडी, कन्या च भायों की लड़याली,
चौथो फेरो फेरे लाडी, मैत छोड़याली !
पाँचो फेरो फेरे लाडी, सैसर की च त्यारी,
छठो फेरो फेरे लाडी, सासु की च ब्यारी,
सातों फेरो फेरे लाडी, कन्या ह्वे चुके तुमारी !
पहली भाँवर फेरी, लाडली कन्या कुवारी है ।
दूसरी भाँवर फेरी, लाडली माँ की दुलारी है ।
तीसरी भाँवर फेरी, कन्या भाइयों की लाडली है ।
चौथी भाँवर फेरी, लाडली में मायका छोड़ दिया ।
पाँचवीं भाँवर फेरी, ससुराल की तैयारी है ।
छठी भाँवर फेरी, लाडली सास की बहू बनी ।
सातवीं भाँवर फेरी, लाडली तुम्हारी हो चुकी ।

## ब्याई

### ५

पैले का मंगल गारु सुवागीण,
मेघ राजन भूमि वसन्तर व्याई !
दूजो मंगल गाऊ सुवागीण,
दूसर जगरनाथ गरजा व्याई !
तीजो मंगल गाऊ सुवागीण,
नारैणन रमौण दे व्याई !
चौथो मंगल गाऊ सुवागीण,
पांडुराजन कुन्ता व्याई !
पहला मंगा ल गाओ सुहागिन,

०

[मेघराज ने वासन्ती भूमि को व्याहा है।
दूसरा मंगल गाओ सुहागिन,
शिव ने गिरिजा को व्याहा है।
तीसरा मंगल गाओ सुहागिन,
विष्णु ने रमा को व्याहा है।
चौथा मंगल गाओ सुहागिन,
पांडुराज ने कुन्ती को व्याहा है।]

## आज छूटो

६

[ विवाह के नाम पर कन्या के लिए दुनियाँ ही बदल जाती है—जीवन बदलता है, पहाड़ बदलते हैं, घर और खेत बदलते हैं । मायके के पुरान संबंध पीछे छूट जाते हैं । ]

आज छूटो माई को हात,
आज छूटो बौटी को सात ।
आज छूटो आंगणी को खेल,
आज छूटो धियाणी को मेल ।

०

[ आज माता का हाथ छूट गया है,
आज भाभी का साथ छूट गया है,
आज आंगन का खेल छूट गया है,
आज सखियों से मिलना छूट गया है । ]

# लगदी डर

७

[ मायके से बिछुड़ती हुई कन्या कुहरे से घिरे मार्ग से ससुराल जाने में संकोच प्रकट करती है। एक ओर मायके का मोह है, दूसरी ओर ससुराल की सुखद कल्पना। पिता की सान्त्वना पुत्री के साथ है, किन्तु शायद वह नहीं जानता है कि हृदय के कसकते अभावों की पूर्त्ति हाथी घोड़े नहीं कर सकते। ]

काल डांडा पीछ बाबा जी काली छ कुरेड़ी,
बाबा जी एकुली मैं लगदी डर।
एकुली मैं कनूकैक जौलू विराणा विदेश।

आंग दिऊँलू बेटी त्वै सकल जनीत
पीछ दिऊँलू बेटी त्वै हाथी घोड़ा,
त्वै दगड़ी जाला लाड़ी, तेरा दीदा भुला,
त्वै तैं बेटी एकुली ना भेजूँ।
आग दिऊँलू बेटी, त्वै दास व दासी,
पीछ दिऊँलू त्वै भैंस्यों की खरक,
गायों की गुठार दिऊँलू,
बाखरियों कू दिऊँलू गोठ।
पर मेरी लाडी त्वै एकुली नी भेजूँ।
तिन जाण लाडी चौडांडा पौर,
त्वै मैं एकुली ना भेजूँ।

०

[ काले पर्वत के पीछे पिताजी काला कुहरा है।
अकेल जाते मुझे डर लगता है पिताजी।
अकेली मैं परदेश कैसे जाऊँगी।
"आगे आगे तेरी बारात भेजूँगा बेटी
तेरे पीछे हाथी घोड़े भेजूँगा
लाडी तेरे साथ तेरे छोटे-बड़े भाई जायेंगे,
तुझे बेटी, अकेली न भेजूँगा,
तेरे आगे तुझे दास और दासियाँ दूँगा
पीछे भैंसो का खर्क दूँगा
गायों की गोशाला दूँगा
बकरियों का गौठ दूँगा
पर तुझे अकेली न भेजूँगा बेटी
तुझे तो चार पहाड़ों के भी पार जाना है,
तुझे मैं अकेली न भेजूँगा!" ]

## वासंती

८

आई रितुड़ी रे सुणमुणया रे,
आई गयो बालो वसन्त रे !
फूलण लैगी गाड़ू की फ्योंलड़ी,
फूली जालू डांडू बुरांस !
बुरांस दादू तू वड़ू उतौल रे,
औरू फूलू तू फूलण नी देन्दो !
जाति को खास ठकरौल,
बास तेरी कै देवन हरे।

०

[सुहावनी रितु आयी है,
बसन्त रूपी बालक आ गया है।
नदी के तटों की फ्यूंली फूलने लगी है,
शिखरों पर अब बुरांस फूलने लगेगा !
बुरांस भैय्या, तू वड़ा उतावला है,
और फूलों को तू अपने से पहले फूलने ही नहीं देता !
तू जाति का खास ठाकुर है,
तेरी सुगंन्ध किस देवता ने हर ली है !]

# कनी

६

[ नायिका के इस नख-शिख वर्णन में कुछ उपमाएँ दे।खए । ]

सिर धौंपेली लटकाई कनी,
काला सर्प की केचुँली जनी ।
सिन्दूर से भरी माँग कनी,
नथूली मा गड़ी नगीना जनी ।
सी आँखी सरमीली कनी,
डांडू मा खिलीं बुराँसी जनी ।
मुखड़ी को रंग कनो ?
बाला सूरज को रंग जनो ।
ओंठू का बीच दातुड़ी कनी,
गठ्यांई मोत्यों माल जनी ।
स्वर मा मिठास कनी ?
डांड़्यो वासदी हिलाँस जनी

## छुर्ॉं

१०

[ पर्वत के शिखर पर घास काटने और गौएं चराने आये हुए प्रिय और प्रेयसी की यह बातचीत काव्य की परिधि को छूती है । ]

देख त कनी यो छ, घास को सुंदर मैदान
चोर्या कना ये बुराँसन ओंठ तेरा नाराण ।
हाथेक रँगे दिन वार मथेक वण छ सूनसान,
माया लाणी मन छ मेरो भ्वाँ वैठक तू पराण ।

ह्यूँ छ सेयूं सिल्ला पाखा वासणी छ हिलाँस,
में नी डाल्दी अपणा गला माया की अफ्वी फाँस ।
तेरी मेरी माया जुग जुग सुर्ण मेरी मैणा,
तरी सौं म त्वै नी छाड़ौं राति जना गैणा ।
कालैं होली नीसी, डांडा होला ये सैणा,
तेरी माया तौ नी तोड़ूँ बैठी जा मेरी मैणा ।
कूल होंदी आल माल सेरा पड़ दी भौणी,
तेरी मेरी माया तन्ने, सूण छुँयालून खोणी ।
भात पकी तौली भरदी, फवताँदो छ मांड,
तेरी मेरी माया होली, रोंदी रली स्यी राँड ।

०

[ देख न, घास का कितना सुंदर मदान पड़ा है ।
इस बुराँस के फूल ने, हाय राम, तेरे ओंठ कैसे चुरा लिये ?
धार पर छिपने को दिन हाथ भर गया है, वन सुनसान हो चला है ।
मेरे मन म तेरा प्रेम उमड़ा है, प्राण, तू जरा बैठ न ।
नहीं, इस ठंडे पाखे पर हिम सोया है, हिलाँस बोल रही है,
मैं अपने आप अपने गले में प्रेम की फाँस नहीं डालती ।
तेरा-मेरा प्रेम युग-युग तक रहेगा, सुन मेरी मैना,
तेरी कसम, मैं तुझे न छोड़ूगा, जैसे तारे रात को नहीं छोड़ते ।
चीड़ के पेड़ चाहे छोटे हो जायं, पर्वत चाहे समतल हो जायं,
पर मैं तेरा प्रेम तब भी न तोड़ूँगा, बैठ न मेरी मैना ।
धान के खेत में हल चलाते ही नहर उसमें समा जाती है,
ऐसे ही सुन ले, तेरा मेरा प्रेम चुगलखोर खो देंगे ।
चावुल पकाकर बर्तन भरता है, मांड़ थिरकता ही है,
वैसे ही तेरा-मेरा तो प्रेम होगा, पर और रोती रहेंगी । ]

## बारहमासी

११

फागुण मास फगुणेटु बाई,
तीन मेरा स्वामी मुखड़ी लुकाई ।
चैत मास बुती जाला धान,
मिन खरी खाये स्वामी का वान ।
बैसाख मैना लजी जाला गेऊँ,
स्वामी विदेश, कनकैक जेऊँ ।
जेठ का मैना बूती जाला धान,
मी भूरी गयूँ स्वामी का वान ।
सौण का मैना रुणभुण्या पाणी,
कु राँड जाँदी, बिन स्वामी धाणी ।
भादों का मैना रौला काट्या बौला,
ऐ जावा स्वामी, मौज मा रौला ।
असूज मैना धान लवाई,
तिन मेरा स्वामी, भात नी खाई ।
कातिक मैना, जौन बादलू बीच,
हा, मेरो स्वामी, धर नीच ।
मँगसीर मैना फूली जाली लैण,
स्वामी का बिना कनी कैक रैण ।
माघ मास कुखड़ी घुराई,
तिन मेरा स्वामी, मुखड़ी झुराई ।
बार मैनों की बारमासी गाई,
घाघरी फटीक धुँडू मकी आई ।

बार मैनों की बारमासी गाई,
तब विटी ऊँकी चीठी नीं आई।

o

[फागुन के महीने में हल चलाया गया,
तूने मेरे प्रिय,अपना मुँह छिपा दिया।
चैत के महीने धान बोये गये,
मैंने स्वामी के लिए कितने कष्ट उठाये।
बैसाख के महीने गेहूं की फसल काटी गयी,
मैं स्वामी के बिना कैसे जाऊँ ?
जेठ के महीने मंडुवा बोया गया,
मेरे स्वामी, तुमने मुझे कितना रुलाया।
आषाढ़ के महीने धान गोड़े गये,
मैं प्रिय के लिए घुल-घुल कर मर रही हूँ।
सावन के महीने रिमझिम पानी बरसा,
पति को छोड़कर कौन अभागिन काम पर जायगी।
भादों के महीने तालाबों से नहरें निकालीं,
आ जाओ स्वामी, हम मौज में रहेंगे।
क्वार के महीने धान काटा गया,
मेरे स्वामी, तुमने भात नहीं खाया।
कार्तिक के महीने चन्द्रमा बादलों के बीच शोभता है।
किन्तु मेरे स्वामी मेरे पास नहीं।
अगहन के महीने सरसों फूली,
स्वामी के बिना मैं कैसे रहूँगी।
माघ के महीने मुर्गे बोले,
तेरे कारण हृदय व्यथित है, स्वामी।
बारह महीनों की बारहमासी गायी,
मेरे प्रिय, तूने मुखड़ा छिपा दिया।
बारह महीनों की बारह मासी गायी,
घांघरी फटकर घुटनों तक पहुँच गयी है।
बारह महीनों की बारहमासी गायी,
तबसे उनकी चिट्ठी नहीं आयी।]

१२

रोटी पकीं च जवाड़ी चूना की,
हरि बोला जी, हरि बोला जी ।
देख चैत चोरी छ, चोरी न करी,
चोरी चीज न छुय्याँ ।
प्यारो मैनो बैसाग को,
न पे तमाखू धुँवा,
कालो कस कलेजी बैठलो,
खाँसी पड़ली भुवाँ ।
जेठ जेठय्या, जेठ भी देण ठंडो,
जब बांट बटैय्या ।
जब मैना अषाड़, बात बिगाड़,
जीती रिवाड़ न हैय्याँ ।
सौण बिसौण झाड़ीक लगौण,
सुद्दी नी सेणू भुय्याँ ।
भाद भदैय्या, काग विरैय्या,
भाई भाई सा छुय्याँ ।

असूज असूज तू रंदों बे बेबूज,
दिन हरि भजैय्याँ ।
प्यारी रात कातकी छ,
काली कामली ओढ़न बिछैय्या ।
तिन मंगसीर ढंग सीर रणू
सुद्दी नी चलणो,
उदमातो न हुय्याँ ।
प्यारो जु पूष घूसी मारला,
घूसी घासी न करैया ।
जब माघू बे माघू
राँड को लागौ
धारो-धारो जैया
देखी बैणी फागुणी
धान कमाणी नी लाणी छुयाँ ।

[ जौ और मंडुवे की रोटी पकी है, हरि कहो जी, हरि कहो जो ।
देख चैत में चोरी न करना, चोरी से किसी की चीज न छूना ।
बैसाख का महीना प्यारा है, तू तम्बाकू का धुँवा न पी ,
तेरे कलेजे पर काला दाग पड़ जायगा, और खाँस कर तू चितपट गिर जायगी ।
जेठ जेठा महीना है, बड़े भाई को बड़ी बांट देनी चाहिये ।
जब आषाढ़ आता है तो बात बिगाड़ता है, इसलिये तू ईर्ष्यालु न होना ।
सावन में बिस्तरा झाड़ कर लगाओ, ऐसे ही जमीन पर न सोना चाहिये ।
भादों कौवे की तरह काला है, भाई-भाई में विवाद चल पड़ते हैं ।
असौज के महीने तू बेबूझ क्यों रहता है ? हरि का भजन कर ।
कार्तिक की रात प्यारी है, काला कंबल ओढ़ो भी और बिछाओ भी ।
मंगसर के महीने में ढंग से रहो । ऐसे ही न चला करो
उन्मत्त न बनो । पूस प्यारा होता है, खूब मालिश किया करो ।
जब माघ आये, तो हे स्त्री, तू जगह-जगह न जाया कर ।
बहिन, फागुन का महीना देख, फसल कमा, बातें न किया कर । ]

१३

आई गैन रितु दौड़ी दाईं जसो फेरो,
फूली गैन वणु बीच ग्वीराल बुराँस।
झपन्याली डाल्यों मा घूघती घूरली,
गैरी-गैरी गदन्यो मा म्योलड़ी बोलली
उचि उचि डांड्यों मा कफू वासलो।
मौलली भाँति भाँति की फुलेर डाले।
गेऊँ जौ की सारी सैरी पिंगली ह्वैन,
राडा की रडवाड़ियों मा मारी रुणाली।
डाँडी काँठी गूँजी ग्वैरू की मुल्योन,
गौं की नौनी स्ये मीत बसंती गाली।
जौं की व्वई ह्वोली, मैतुड़ा बुलाली,
मेरी जिकुड़ी मा व्वे, कुयेड़ी-सी-लौंखी।

०

[ दाईं क फेरे की तरह मधुमास लौट आया है,
बनों के बीच बुराँस और कचनार फूल गये हैं।
पत्तों से भरी डालियों पर घूघूती बोली,
नदियों क गह्वरों में चातकी बोलने लगी है।
ऊँचे ऊँचे वन-पर्वतों पर कफु बोल रहा है
भाँति भाँति की पुष्पवती लताएं मुकुलित हो उठी हैं।
गेहूँ-जौ के खेत पीले पड़ गये हैं,
सरसों की क्यारियों में मधुकरियाँ गुनगुनाती हैं।
पर्वत-शिखर चरवाहों की मुरली से गूँजते हैं।
गाँव की कुमारियाँ बसंत गीत गाती हैं।
जिनकी माताएँ होंगी, वे बेटियों को मायके बुलायेंगी।
मेरे हृदय पर तो बादल-से लोट रहे हैं, माँ।

बौड़ी ऐन बारा मैंनों की बारा रितु,
रितु बौड़ी ऐन दाईं जसो फेरो।
बौड़ीक ऐ गये बसंत पंचमी,
तब बौड़ीक ऐगे फूल संगरांद।
बारा फूलू मान, कु-फूल प्यारो ?
बारा फूलू मान, कु फूल सिरताज ?
सेतु सिरताज छ, रातू मखीमल,
जाई सुरमाई छ, प्यारो फूल गुलाब।
निगन्दू बुराँस डाला-सी गच्छेन्दू।
बौड़ीक ए गए बैसाख विखोत,
बौड़ीक ऐ गए पापड़ी त्यौवार।
जौं दिशों ध्याण्यों का मैती होला गोती,
तौं दिशों ध्याणी मैत जाली।
निरमैतीण फ्यूँली देल्यों जाली।

०

[ बारह महीनों की बारह ऋतुएं लौट आयी हैं,
दाई के फेरे की तरह ऋतुएँ लौट आयी हैं।
बसंत पंचमी लौट आयी है,
तब 'फूल संक्रान्ति' भी लौट आयी है।
बारह फूलों में कौन फूल प्यारा होता है।
बारह फूलों में कौन फूल सिरताज है ?
सफेद फूल सिरताज है, मखमल लाल होता है।
जई और सुरमई भी अच्छे फूल हैं, गुलाब प्यारा होता है।
गन्ध-हीन बुरांस तो डोले की तरह गुच्छा बनाता है।
बिषुवत् संक्रान्ति लौट आयी है,
'पापड़ी-त्यौहार' भी लौट आया है।
जिन दिशाओं में बहिनों के मायके और सगोत्र होंगे,
उन दिशाओं में वे मायके जायेंगी।
पर मायके-हीन फ्यूँली लोगों की देहलियों पर जायेगी। ]
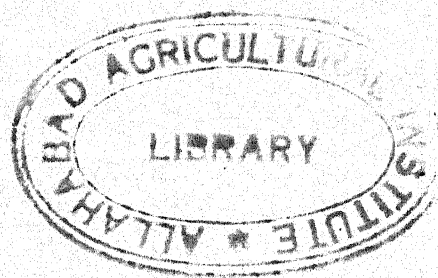
१५

फूली जाली कांस ब्वै, फूली जाली कांस,<br>
म्योलड़ी वासदी ब्वै, फूलदा बुरांस ।<br>
हिंसर की काँड़ी ब्वै, हिंसर की काँडी,<br>
मौली गैन डाली ब्वै, हरी हैन डाँडी ।<br>
गौड़ी देली दूद ब्वै, गौड़ी देली दूद,<br>
मेरी जिकूड़ी लगी ब्वै, तेरी खूद ।

काखड़ी को रैतू ब्वै, काखड़ी को रैतू,
मैं खुद लगी ब्वै, तू बुलाई मैतू ।
दाथुड़ी की नोक ब्वै, दाथुड़ी की नौक,
वासलो कफू ब्वै, मेरा मैत्यों का चौक ।
सूपा भरी दैण ब्वै, सूपा भरी दैण,
आग भमराली ब्वै, भैजी भेजी ल्येण ।
टोपी धोई छोई ब्वै, टोपी धोई छोई,
मैत्या डांड देखी ब्वै, मैं आंदी रोई ।
झंगौरा की बाल ब्वै, झंगौरा की बाल
मैत को बाटो देखी ब्वै, आँखी हैन लाल ।

०

[ कास फूले मां, कास फूले,
चातकी बोली मां, बुरांस फूले ।
( हिंसर के काटे मां, हिंसर के काटे )
पेड़ों पर कोंपलें आयी मां, पर्वत हरे हुए ।
( गाय दूध देगी मां, गाय दूध देगी )
मेरे हृदय पर तेरी सुधि आयी है मां ।
( ककड़ी का रायता मां, ककड़ी का रायता )
मुझे तेरी याद आती है मां, मुझे तू मायके बुलाना ।
( दराँती की नोक मां, दराँती की नोक )
मेरे मायके के आंगन में मां, कफू बोलेगा ।
( सूप सरसों से भरी मां, सूप सरसों से भरी )
आग भभरायेगी तो भाई को मुझे लिवाने भेजना ।
( छोई में टोपी धोई मां, छोई में टोपी धोई )
मायके के शिखर देखकर मां, मुझे रोना आता है ।
( सवां की बाल मां, सवां की बाल )
मायके का रास्ता देखते देखते मां, आँखें लाल हो गयी हैं । ]

## छोपता

१६

घूघती को घोल, गोवरधन गिरधारी,
रूबसी गिचीन, गोबरधन गिरधारी,
तू रौनक खोल, गोबरधन गिरधारी।
भैंसा की दौंली गोबरधन गिरधारी,
रात का सुपिना देखी, गोबरधन गिरधारी।
सिराण बौंली, गोबरधन गिरधारीं।
रिंगलो मलेऊ, गोबरधन गिरधारी;
मैंणानी क्विंदी, गोबरधन गिरधारी,

पिरथी पलेऊ, गोबरधन गिरधारी।
सुतर का धागा, गोबरधन गिरधारी,
तुमारा बिना, गोबरधन गिरधारी,
ज्यू नी रंदो जागा, गोबरधन गिरधारी।
औगुड़ी को नील, गोबरधन गिरधारी,
गंगा जी को पूल टूटे, गोबरधन गिरधारी,
तू न टूटी दील, गोबरधन गिरधारी।
पाणी भरी कुई, गोबरधन गिरधारी,
तोता जी की याद औंवी, गोबरधन गिरधारी,
नी थामेंदी रूई, गोबरधन गिरधारी।

०

[ ( फाख्ता का घोसला गोबरधन गिरधारी, )
अपने सुमधुर अधरों से प्रिय, गोबरधन गिरधारी।
रौनक लादे, गोबरधन गिरधारी।
( भैंस की दौंली, गोबरधन गिरधारी )
रात के सपने में मैंने देखा, गोबरधन गिरधारी,
तुम्हारी बांह मेरे सिरहाने थी, गोबरधन गिरधारी।
( मलेऊ मँडराये, गोबरधन गिरधारी )
जब कभी मैना नहीं दीखती, गोबरधन गिरधारी,
तो मुझे पृथ्वी पर प्रलय होता लगता है, गोबरधन गिरधारी।
( सूत के तागे, गोबरधन गिरधारी )
हृदय अपनी जगह पर नहीं रहता, गोबरधन गिरधारी।
( अंगिया का नील, गोबरधन गिरधारी )
चाहे गंगा का पुल टूट जाये, गोबरधन गिरधारी,
किन्तु मेरे दिल तू न टूटना गोबरधन गिरधारी।
( कुँएं से पानी भरा, गोबरधन गिरधारी )
जब मुझे तोता जी की याद आती है, गोबरधन गिरधारी,
तो मैं रुदन नहीं थाम सकती, गोबरधन गिरधारी। ]

## लामण

### १७

सुजिया इजिया तेरी थी लाड को दियो,
तैं पैं बिसरो मुइके पाथरो जियो।
शाणों भादरो पाइ कुरेड़िय मेंट,
कदि आ मैत, कदिय आँखिय बेंट।
शावणे खाडुवा मरने ऊनै बारा,
संगी मिल जियरो दुश लागी गैंणी तारा।
काली बादुली लुमा लुमी लेश,
कालरो मन बावरो फिन देश।
शेयर छपके रिख बागरो दाड़ो,
कुसुक्तू शावरो भोर नै छोड़ै कामदी आड़ो।

०

[ हे माँ, तूने मुझे लाड़-प्यार से पाला था,
तूने भी मुझे बिसार दिया, तू भी पत्थर हृदय-वाली है।
सावन-भादों के बादल छा गये हैं,
मैं कब मायके जाऊँगी, कब आँखें तुम्हें भेंट पायेंगी ?
ऊन के भार से भेंड़ा सावन में मर रहा है,
अगर प्रिय, तुम मिल जाओ तो दिन में ही मुझे,
आकाश में तारे दीखने लगेंगे।
काली बदली के रोये बिखरे हैं,
या तो मैं मर जाऊँगी, या बावली बनकर देश-देश फिरूँगी।
शेर उछाल मारता है, रीछ दहाड़ता है,
बुरी ससुराल में मैं काम पर हड्डियाँ तोड़ती हूँ। ]

## बाजूबन्द

१८

कोठारी का गांजा,
अफू गैल्या परदेश, घर डाल बाँजा।
ध्यू खाये छकीक,
बाली दिल त्वै मा दिने ने नी जाणे रखीक।
मोटो बट्यो रसा,
तूमारी खुद की सुवा या च मेरी दसा।
परोठो दूद को,
बिना भौती मैं भी मरयूँ तुमारी खूद को।
साग लाई सौंदो,
कै मा लाग रूखौ कै मा लाण भौंदो।
वण काटै घास,
त्वै सुवा की याद औंदे कलेजी को नास।
खैणी त कंडारो,
कोरी-कोरी खाँदो सुवा, माया को मुँडारो।
करी त सिंगार
बालो दिल ऐसो बुझे जैसो कि अंगार।
काटी जालो घास,
मन मेरी मरियूँ छ, शरील उदास।
हलाया त आम,
ओंठड्यूं कू पाणी सूखे ओडार-सी घाम।
बणाई त लेई
तेरा बाना विष खौलू मरण न देई।

बाखरा की खाल,
म लिख्वारी होंदू चिठी देन्दू स्वौल।
लाठी लायो रंदा,
पंछी होंदी उडी औंदी, में मासू को बंदा।
साकीनो सुजायो,
बावरो पराण सुवा, बैंठीक बुझायो।
डाली को हरील,
बुझौणी बुझैल सुवा, बूझद शरील।
डाली को हिंदोल,
रात दिन मैंकू सुवा तेरो हि दंदोल।
सौदा चवनी को,
सौ साठ गेणुवा होन्दा उजालो ज्वनी को।
बाखरी को फेकू,
बैखून दुन्या छ भरीं, मन को एकू।
देवी को तखत,
मैं तेरी जोगीण सुवा तू मेरो भगत!
छकी ख्याये ध्यूऊ,
तेरो मेरो सुवा माछी पाणी ज्यू!
मैत को कलेऊ,
क पापीन फंट्याये जोड़ी को मलेऊ!

o

[ (कोठार के खाने)
मेरा साथी परदेश गया है, घर को उजाड़ कर गया।
(छक कर घी खाया)
मैंने यह बाल-हृदय तुझे दिया था, तूने रखना न जाना!
(मोटी रस्सी बनायी)
तुम्हारी याद में प्रिय, मेरी यह दशा है।
(सब्जी बनायी)
किससे रूखी-सूखी कहूँ, किससे मन की बात लगाऊँ?
(वन में घास काटा)
तेरी याद आती है तो हृदय का नाश होता है।

[ ( कंडारी खोदा )
प्रेम का सैरदर्द कुरेद-कुरेद कर लाता है।
( श्रृंगार किया )
मेरा बाल-हृदय अंगार की तरह बुझ गया है।
( घास काटा )
मेरा मन मर चुका है, मेरे प्राण उदास हैं।
( आम हिलाये )
ओंठों का पानी सूख गया है जैसी गुफा की धूप।
( लेयी बनायी )
तेरे लिए विष खाऊँगी, पर तू मरने न देना।
( बकरी की खाल )
मैं लिखना जानती तो तुम्हें चिट्ठी लिखती, संदेश भेजती।
( छड़ी पर रंदा लगाया )
चिड़िया होती तो मैं तुम्हारे पास उड़ जाती पर मैं तो माँस पिंड हूँ।
( साकिना धोया )
प्रिय इस बावल हृदय को कई बार बैठ कर समझाया है।
( वृक्ष की हरियाली, )
कई तरह से हृदय को समझा लिया पर यह मानता ही नहीं।
( पेड़ पर हिंडोला )
मुझे रात-दिन तेरी ही चिन्ताएँ हैं।
( चवन्नी का सौदा )
आकाश पर अगणित तारे हैं, पर आलोक चन्द्रमा का ही होता है।
( बकरी का हृदय )
दुनिया पुरुषों से भरी है पर हृदय का आराध्य एक ही होता है।
( देवी का सिंहासन )
प्रिय, मैं तेरी जोगन हूँ, और तू मेरा भक्त।
( छक कर घी खाया )
प्रिय, तेरा मेरा मछली और पानी का-सा हृदय है।
( मायके का कलेवा, )
हा, किस पापी ने जोड़ी के हंस को टोली से अलग किया है ? ]

## गेंदा

१६

[ गेंदा अपने पति के साथ टिहरी बजार में रहा करती थी। अचानक वह बीमार पड़ी और मृत्यु निकट आती-सी दीखने लगी। इस गीत में उसी पतिप्राणा युवती की अन्तिम भावनाएं व्यक्त हुई हैं। ]

बन्दूक की कोठी स्वामी, बन्दूक की कोठी की,
तुम कना खाला स्वामी, बै का हात की रोटी की।
चौंलू कूटी घण गेंदा, चौलू कूटे घाण की,
त्वई बिना मैन गेंदा, घर कनू जाण की।

लोण भरे दोण स्वामी, लोण भरे दोण की,
सब खैंड कर्या स्वामी, कायरो नी होण की।

मायाली मुखड़ी स्वामी, मायाली मुखड़ी की,
कुरोध नी लाणो स्वामी, चिरेन्दी जिकुड़ी की।

कोदा की लगड़ी गेंदा, कोदा की लगड़ी की,
कनी चूकी मैकू गेंदा, तुमारी दगड़ी की।

तेल को कसीब गेंदा तेल को कसीब की,
कनो रूप रंग छयो, क्या करीगे नसीब की।

काटी जालो घास स्वामी, काटी जालो घास की,
तुम जान मेरा स्वामी, मेरी ब्वै का पास की।

गुलेरी का गार स्वामी, गुलेरी का गार की,
माँ जी माँ दियान स्वामी, मेरो रैबार की।

मोतियों की खान मांजी, मोतियों की खान की,
भुली मेरी द्यान माँजी, स्वामी मेरा दान की।

कांड़ों की बाड़ माँ जी, कांड़ों की बाड़ की,
भुली मेरी बणली मां जी, मेरा नौनों का लाड की।

थाली राल्या मेवा माता, थाली राल्या मेवा की,
मेरी भुली करली माता, स्वामी जी की सेवा की।

लोण भरे दोण माता, लोण भरे दोण की,
स्वामी जनो मयाल्दु माता, कैन नी होण की।

काटी जालो घास स्वामी, काटी जालो घास की,
मैं मरी गयूँ स्वामी, नी करणी आस की।

चली जालो कोस स्वामी, चली जालो कोस की,
माफ करी द्यान स्वामी, मेरा सब दोस की।

## श्री देव सुमन

२०

[ श्री देव सुमन टिहरी गढवाल के कांग्रेसी नेता थे, जो सामंतशाही के विरुद्ध संघर्ष करते हुए ८४ दिन की भूख हड़ताल के पश्चात् देश के लिए बलिवेदी पर चढ़े । ]

सड़की को सूत सुमन सड़की को सूत ले,
टीरी माँ पैदा ह्वैगे सुमन, सुमन सपूत ले ।
गढ़ माता को प्यारों सुमन, सुमन सपूत ले ।
अखोड़ू को कीच सुमन, अखोड़ू की कीच,
ढंडक शुरू ह्वैगे सुमन, खाई का बीच ।
घाघरी को फेर सुमन, घाघरी को फेर,
गढ़माता की जिकुड़ी सुमन, पैनो लागे तीर ले ।
गढ़माता की वीर सुमन, पैनो लागे तीर ले,
बजायो त धण सुमन, बजायो त धण
मरि जाण बल सुमन, घर नी रण ।
नौलखो हार सुमन, नौलखो हार,
त्वैन शुरू करयाल सुमन, आजादी परचार ।
गांधीजी का चेला सुमन, आजादी परचार,
काटी जालो कूरो सुमन, काटी जालो कूरो,
यो सुमन ढंडकी ह्वैगे, होई जाणो सूरो,
कपड़ा को गज सुमन, झंडा देन्द सज ।
घास काटे सुमन, घास काटे च्वान,
तेरा साथी छन सुमन इसकूली ज्वान ।

देवता का भोग सुमन, देवता को भोग,
तेरा साथी छन सुमन, गौं गौं का लोग।
बाखुरी को कान सुमन, बाखरी को कान,
सुफल होइगे सुमन, तेरो स्य बलिदान।
गढ़माता की वीर सुमन, तेरो स्यो बलिदान!

०

[ ( सड़क नापने की डोरी सुमन, सड़क नापने की डोरी )
टिहरी में सुमन सपूत पैदा हो गया।
गढ़माता का प्यारा सुमन पैदा हो गया।
( अखरोट का कीचड़ सुमन, अखरोट का कीचड़ )
सुमन, रवाई के लोगों में असंतोष शुरू हो गया है।
( घाघरे का फेर सुमन, घाघरे का फेर )
तिलाड़ी के मैदान में गढ़माता के हृदय परदेख कैसा तीर लगा है।
गढ़माता क बीर सुमन, कैसा पैना तीर लगा है।
( घन बजाया सुमन, घन बजाया )
चाहे मर जांय सुमन, पर घर नहीं बैठना है।
( नौलखा हार सुमन, नौलखा हार )
तूने आजादी के विचारों का प्रचार किया सुमन।
गांधी जी के चेले सुमन तूने आजादी का प्रचार किया है।
( घास काटा गया सुमन, घास काटा गया )
यह सुमन क्रान्तिकारी बन गया है, तुम भी शूर बनो।
( कपड़े का गज सुमन, कपड़े का गज )
सुमन, आंगन के बीच कांग्रेसी झंडा कैसी शोभा देता है।
( पहाड़ पर घास काटा सुमन, पहाड़ पर घास काटा )
स्कूल के लड़के सुमन, तेरे साथी बनें।
( देवता का भोग सुमन, देवता का भोग )
गांव-गांव लोग सुमन, तेरे साथी बनें।
( बकरी के कान सुमन, बकरी के कान )
तेरा बलिदान सुमन सफल हुआ।
गढ़माता क वीर सुमन तेरा बलिदान सफल हुआ। ]

२१

[ जीवन मरता नहीं वह धारा के प्रवाह रूप में निरंतर चलता रहता है। पेड़ का एक भाग कभी सूख जाता है, किन्तु दूसरे से नयी कौंपलें निकलने लगती हैं। इसी तरह जीवन को मृत न समझिए, मौत उसकी एक शाखा को कुम्हला सकती है, पर दूसरी शाखा उसी क्षण मुकुलित हो उठती है। इसीलिए, मरता हुआ मनुष्य मौत से भी जीवन ( पर जनम ) का अपना हिस्सा मांग कर जाता है। ]

सुकी बलु डाड़ी,
हरु लगलो फांगो,
मारयो बल मणसात,
तें जुग को बाटो मागो।

०

[ सूखता है तरु कहीं,
कहीं हरी टहनी निकलती है।
मनुष्य मरता है पर जिन्दगी—
दूसरे जन्म का भी हिस्सा माँग कर चलती है। ]

२२

[ चूल्ली पियारो चुलियाणो,
तारू से पियारी गैण,
दिशा पियारी तेकी होन्दी,
जैकी पीठी की बैण।
छमरोट फुलेल नीम्बू,
फूले भंकोले जाई।
पेट क मिल जड़ि ले,
न मिल पीठ को भाई।

०

चुल्हे को आग प्यारी होती है,
तारों से आकाश प्यारा लगता है।
दिशा उसकी प्यारी होती है,
जिसकी पीठ की बहिन हो।
छमरोंट में नीम्बू फूले,
भंकोली में जई फूली,
गर्भ में पुत्र मिल भी जाता है,
पर पीठ का भाई नहीं मिलता। ]

# कुमायूँनी लोक-गीत

संकलनकर्त्ता

श्री मोहनचन्द्र उप्रेती

श्री दुर्गादत्त पन्त

श्री नित्यानंद पाण्डेय

# गीतानुक्रमणी

# झोड़ा

१

[ यह गीत अधिकतर मेलों के अवसर पर गाया जाता है अल्मोड़े के प्राय: सभी भागों में प्रचलित है, इसकी धुन और लय अत्यधिक लोकप्रिय है। ]

बेड़ू पाको बारा माशा, हो नरैण का फल पाको चैत मेरी छैला।
रूणा भूंणा दिन आया हो नरैण पुजा मेरा मैत मेरी छैला ॥
रौ की रौतेली लै हो नरैण माछो मारो गीड़ा मेरी छैला।
त्यारा खूटा कान बुड़ौ हो नरैण म्यारा खूटा पीड़ा मेरी छैला ॥
सवाई को बाल हो नरैण सवाई को बाल मेरी छैला।
मेरो हिया भरी औंछ हो नरैण जसो नैनीताला मेरी छैला ॥
बाकेरे की बसी हो नरैण बाकेरे की बसी मेरी छैला।
देखाँ है छै पारा डाना रो नरैण ब्याणा तारा जसी मेरी छैला ॥
लड़ी मरी के हो लो हो नरैण लड़ाई छ धोखा मेरी छैला।
हरी भरी रई चैंछ हो नरैण धरती की कोख मेरी छैला ॥

[ बेड़ू का फल बारह महीने पकता है पर काफल ( एक दूसरा फल जिसका रंग लाल होता है ) केवल चैत के महीने में ही पकता है। ग्रीष्म ऋतु के अलसाये हुए दिन आ गये हैं, मेरे प्रियतम मुझे मेरे मायके पहुँचा दो। रौतेली नाम की स्त्री ने नदी में मछली पकड़ी, मायके की बात, क्यों कहती है ? क्या तुझे नहीं मालूम कि जब तेरे पैर में कभी कांटा चुभता है तो दर्द उसका मुझे भी होता है। मेरी छैला, (प्रियतमे) तेरे प्रेम से मेरा हृदय इस तरह छलकता रहता है जैसे बरसात में नैनीताल का ताल। जब तू मेरे सामने आती है मुझे ऐसा लगता है मानो भोर का तारा उदय हो गया है। ओ मेरी छैला ! लड़ने-झगड़ने से कोई लाभ नहीं—लड़ाई-झगड़ा सब धोखा है, हम सब की यही कामना है कि धरती की गोद हमेशा हरी-भरी फलती-फूलती रहे। ]

(अल्मोड़ा और रानीखेत)

## २

[यह एक विरह गीत है और किसी भी समय गाया जा सकता है। इसे गाने के लिए किसी विशेष अवसर की आवश्यकता नहीं। ]

पारा भिड़ा को छै भागी सूर सूर
मुरली बाजिगे।
पारा भिड़ा को छै शुवा रूण झूंण
बिणुली बाजिगे।
पड़ी गो बरफ शुवा पड़ी गो बरफ
पंछी हुन्यू उड़ी उन्यूँ
मै तेरी तरफ भागी फूर फूर
मुरली बाजिगे ॥ पारा भिड़ा ॥
तेल बाता जली गयो
यो दिया निमाँणौ
तू न्है गये परदेश,
मैले कथ जांणौ भागी सूर सूर
मुरली बाजिगे ॥ पारा ॥

०

[ प्रियतम परदेश में है और चारों ओर बरफ गिरी हुई है, दूर कोई बांसुरी बजा रहा है, कहीं से बिणई ( एक वाद्य ) की धुन भी आ रही है। ऐसे अवसर पर मैं यही सोचती हूँ कि यदि मेरे पंख होते तो मैं तेरे पास उड़ कर चली आती। दिये का तेल और बाती जल चुकी है, तुम तो परदेश चले गये, अब मझे कहाँ जाना है ? ]

(अल्मोड़ा और रानीखेत)

# चांचरी

३

[ यह गीत मेलों में गाया जाता है। इसे सूर्योदय के समय गाते हैं। यह गीत अल्मोड़ा जिले की दानपुर तथा कमस्यार पट्टियों में अधिक प्रचलित है और वहाँ के स्त्री-पुरुष सम्मिलित रूप से इसे गाते हैं। इसमें एक फूल का जिसे 'माशी का फूल' कहते हैं, गुणगान किया गया है—यह फूल पवित्रता और सौंदर्य का प्रतीक है और कहा जाता है कि बड़ी कठिनाइयों के बाद ही यह फूल मनुष्य को उपलब्ध हो सकता है—केवल इष्टदेव को ही चढ़ाया जाता है। वातस्व में यह एक काल्पनिक फूल है जिसकी कल्पना कई रंगों और कई रूपों में की गयी है। ]

कैं धुरी फुललो माशी को फूल,
कैं देवा चढ़लो माशी को फूल।
वी ऊँचा हिमाल माशी को फूल,
शिव पारवतै चढ़लो माशी को फूल।

कै रंग को होलो माशी को फूल,
हरियां रंग को माशी को फूल।
पिंगलो वरण माशी को फूल,
सबूं को पियारो माशी को फूल।
कैलाश चढ़लो माशी को फूल,
शिववर भुरेंण माशी को फूल।
नलिगा बजैंण माशी को फूल,
वी देवा चढ़लो माशी को फूल।
खुतुक हँसलो माशी को फूल,
ठुमुक नाचलो माशी को फूल।
कै दवा चढ़लो माशी को फूल।
धौली नाग कशरि बाग माशी को फूल,
वी देवा चढ़ूँलो माशी को फूल।
कै धूरी फूललो माशी को फूल,
शिखर फूललो माशी को फूल।
हाटै की कालिका माशी को फूल,
कुमूँ की मालिका माशी को फूल।
वी देवा चढ़ूँलो माशी को फूल,
भर दैणा है जाये माशी को फूल।
सबों की तरफ माशी को फूल,
कोटै की माई माशी को फूल।
नन्दादेवी माई माशी को फूल,
माशी को फूल नैर को धूप।
तू दैण है जाये माशी को फूल,
सबों की तरफ माशी को फूल।

(दानपुर)

[माशी का फूल कौन से पर्वत शिखर पर खिलेगा ? माशी का फूल किस देवता को चढ़ाया जायगा ? माशी का फूल हिमालय के ऊँचे शिखरों में खिलता है। माशी का फूल शिव और पार्वती को चढ़ाया जाता है।

माशी का फूल किस रंग का होता है ?
माशी का फूल हरे रंग का होता है,
माशी के फूल का वर्ण पीला होता है।
माशी का फूल सब को प्रिय है,
माशी का फूल कैलाश में चढ़ाया जायगा।
माशी का फूल भुरैंण और नलिंग देवता को चढ़ेगा,
माशी का फूल खिलखिला कर हँसेगा।
माशी का फूल प्रसन्न होकर नृत्य करेगा,
माशी का फूल कौन से देवता को चढ़ेगा।
माशी का फूल कौलीनाग और फणनाग देवता को चढ़ेगा,
माशी का फूल किस पर्वत में खिलेगा।
माशी का फूल शिखर पर्वत में खिलेगा,
माशी का फूल गंगोलीहाट की कालिका देवी को चढ़ेगा।
माशी का फूल काली कुमाऊँ की देवी को चढ़ेगा,
माशी का फूल सभी के लिए शुभ हो,
माशी का फूल कोटकी देवी और नन्दा देवी को चढ़ेगा।
माशी का फूल और नैक की धूप, सभी के लिए शुभ हो।]

४

[ यह 'चांचरी' अधिकतर अल्मोड़े जिले के शोर पिथौरागढ़ इलाके में और गंगोली हाट में प्रचलित है। अल्मोड़े जिले के इन भागों से काफी संख्या में लोग फौज में जाते रहे हैं। इस गीत में बहिन अपने भाई हयातसिंह पर, जो फौज को वापस लौट रहा है, अपने हृदय के उद्गार प्रकट करती है। इस गीत को गाने का कोई निश्चित अवसर नहीं है। ]

**बहिन ( जिसका नाम गौरा है )**

हयात सिंगा लपटैना
तिलै धारो बोला दादू लपटैना,
तुमड़ी का झाला बाटू लपटैना।
आंजुका जाइयां बटी लपटैना,
घर कब आला दादू लपटैना।

भाई ( हयात सिंग )—

बाकरै की खुटी भुलू गंवारा
तब घर औंलो भुलू गंवारा।
जब मिलली छुटी भुलू गंवारा,
घा काटो घसीला भुलू गंवारा।
मेरी अवै होली भुलू गंवारा,
साल भरी पछीला भुलू गंवारा।

बहिन—

काटी हानी कांस दादू लपटैना,
लौटी फिरी औने रया लपटैना।
पैं चैत को माश दादू लपटैना,
लिसौटिया गड़ दादू लपटैना।
भाई म्यारा यक तुमी लपटैना,
लौ ज्यूँ हैगी बुड़ दादू लपटैना।

भाई—

चूकछौ चूकम भुलू गंवारा।
कसिक थामीछ भुलू गंवारा,
सरकारी हुकम भुलू गंवारा।

बहिन—

पाणी लागी तीस दादू लपटैना,
बंची रया अमर रैया लपटैना।
लाख सै बरिश दादू लपटैना,
बांसुली का बन दादू लपटैना।
औनै रया जानै रया लपटैना,
मैं भुलिया झन दादू लपटैना।

भाई—

बांसुली का बन भुलू गंवारा
मैं जाइयां बटी भुलू गंवारा,
दुखी हैंयै झन भुलू गंवारा

( गंगोली )

[ **बहिन**—अरे भाई हयातसिंह, ओ लेफ्टनैन्ट भइया, तुम आज जा रहे हो, अब घर कब वापस आओगे ?

**भाई**—मेरी प्यारी बहिन गौरा, मैं घर अब तभी आ सकता हूँ जब मुझे छुट्टी मिलेगी। मैं समझता हूँ, एक साल के बाद ही मैं घर आ सकूँगा।

**बहिन**—कांस के पेड़ कट गये हैं। ओ मेरे ददा ( बड़े भाई ) चैत के महीने में मुझसे मिलने अवश्य आना। मेरे तुम्हीं तो एक भाई हो और पिता जी अब बूढ़े हो गये हैं। न जानें कब चल दें।

**भाई**—पर मेरी प्यारी बहिन तूही बता सरकारी हुक्म को कैसे रोका जा सकता है ?

**बहिन**—ओ मेरे ददा ( बड़े भाई ) पानी की प्यास लगी है। मेरी यही कामना है कि तुम एक लाख वर्ष तक जिन्दा रहो। बांस के बन चारों ओर हैं। मैं यही चाहती हूँ कि तुम आते-जाते रहो और मुझे न भूलो। इससे अधिक और मैं कुछ नहीं चाहती।

**भाई**—हाँ, बांस के बन चारों ओर हैं मैं अब जा रहा हूँ। मेरी एक ही इच्छा है कि तू मेरी अनुपस्थिति में, मेरे कारण दुखी मत होना। ]

५

[ यह चांचरी कुमायूँ की तारीफ में गायी जाती है और इसका प्रचलन स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद ही हुआ है । इसका सृजन अल्मोड़ा जिले के प्रसिद्ध लोक-गायक ठाकुर मोहनसिंह जी ने किया है जो जिला अल्मोड़े की रीठागाड़ पट्टी, ग्राम नौगांव में रहते हैं आपकी अवस्था इस समय करीब ४२ साल की होगी । ]

ऋतु औनैं रौल, भँवर उड़ाला बलि,
कुमाऊँ मुलुक, भँवर उड़ाला बलि ।।
गहतुग बड़ौ, भँवर उड़ाला बलि,
हाथ खुटा पहाड़ा भँवर उड़ाला बलि ।
शिर अलमाड़ा भँवर उड़ाला बलि ।।

दै खायो पात में भँवर उड़ला बलि,
के भलो मानीछ भँवर उड़ाला बलि।
जुन्याली रात में भँवर उड़ाला बलि ।।
ह्वै जा मेरो भाया भँवर उड़ाला बलि,
यो गैली पातल भँवर उड़ाला बलि ।
पंछी बाँशनाया भँवर उड़ाला बलि,
देवदारु का बन भँवर उड़ाला बलि ।
यों कसा देखीनी भँवर उड़ाला बलि,
तू दुःखी हो यै झन भँवर उड़ाला बलि ।
थोरी लैनी थन भँवर उड़ाला बलि,
सुणौ भाई बन्दौ भँवर उड़ाला बलि ।
मन हारिया झन भँवर उड़ाला बलि,
तुमड़ी को झालो भँवर उड़ाला बलि ।
बची रया आई, भँवर उड़ाला बलि,
बड़ौ दिन आलो, भवर उड़ाला बलि ।
कविता की लेख भँवर उड़ाला बलि,
सब भाई बन्दौ भँवर उड़ाला बलि ।
मिली रया एक भँवर उड़ाला बलि ।।

(बारामंडल पट्टी)

o

[ ऋतुओं का आगमन होता रहेगा और कुमायूँ में भँवर उड़ते रहेंगे। कुमायूँ के विभिन्न पहाड़ यदि उसके हाथ पैर हैं तो अल्मोड़ा उसका मस्तक है। पत्ते में दही कितना सुन्दर लगता है और खाने में भी कितना मीठा होता है। कमायूँ की जुन्याली रातें ( चांदनी रातें ) कितनी सुन्दर लगती हैं ? तुम सब मेरे भाई हो। जरा सुनो तो, डालों से, घने पत्तों से पक्षियों के 'सुमधुर बोल' कितने कर्णप्रिय लग रहे हैं ? देवदारु के बन के बन कुमायूँ में फैले हैं। उनकी शोभा कितनी निराली हैं ? ऐसी सुन्दर छटा में तुम दुःखी मत होना। मेरे प्यारे भाइयो तुम हिम्मत मत हारना, तुम क्यों घबड़ाते हो ? धैर्य रक्खो। एक दिन तुम्हारा भी दिन आवेगा मुझे केवल एक ही सन्देश तुम्हें देना है कि तुम आपस में मिलजुल कर रहो तभी तुम्हारा कल्याण होगा। ]

## न्योली

६

[ ये गीत अधिकतर वनों में घास और लकड़ी काटते समय गाये जाते ह। इनमें प्रेम और विरह की प्रधानता रहती है। ये एकल्य गीत हैं और कोई वाद्य-यंत्र का प्रयोग भी इनमें नहीं किया जाता है। न्योली—गीत वैसे तो अल्मोड़ा नैनीताल में सभी स्थानों में गाये जाते हैं पर अल्मोड़ा जिले के ओर-पिथोरागढ़ के इलाके में और अस्कोट के इलाके में, जो नैपाल की सरहद में है, इनका अधिक प्रचार है। प्रत्येक गीत दोहा, के ही रूप में रहता है। ]

१—बरखा लागी अरखा गरखा, पाख दन्यारी च्वींछ।
मेरो सुवा परदेशा जाग जाग में रुवींछ॥
२—सुर सुरो बयाला पड़ो, बयाला का गावै में।
के हूँछ फिकर करी, जे हो लो भागै में॥
३—काटन्या काटन्या पौली आयो चौमाश का वन।
बगन्या पानी थाथी जांछ नै थामीन मन॥

४—धार में देवी को थान, दूधै लै नवायो ।
तेरो जूठो मैं नी खांनी, माया लै खवायो ॥
५—भूटा सिगरि मखमलै की, खल्दी लबदौन की ।
आधु माया मेरि घरीयै, आधु पलटनै की ॥
६—पाणी में पनन्यूला छूटो, बाजे लै थमायो ।
कां को शुवा कां ए पड़ो, माया लै घुमायो ॥
७—सैन्याला की भरपाटी में, जोतिया की जाँती ।
तेरि माया लै बेड़ी दिन, सरपै की भाँती ॥
८—उकाली को भोट्या घोड़ो, मैदान को हाथी ।
दिन दिन बाटुई लैछे, धन मेरी छाती ॥
९—भैंसी नौ छ रुमली ठुमली, गै नौछ काँजरी ।
स्यारा म्यारा बैठियां ठौर, फूलै ली हाँजरी ॥
१०—बाटा गाड़ा चिणा धाना, चिणां की झाँकुरी ।
ईजू की नराई लागी, भाई की काँकुरी ॥
११—नैनताला छतीस धारा पाणी की तुड़का ।
समझो जाये बैठियां ठौर, रूवै जाये धुड़का ॥
( पिथौरागढ़ )

[ १—चारों ओर घोर वर्षा हो रही है, मकान की छत से पानी टप-टप चू रहा है। इसी तरह मेरा प्रियतम भी दूर परदेश में जगह-जगह आँसू टपकाता होगा ।

२—तेज हवा चल रही है जिससे केले के चाक हिल रहे हैं । बेकार फिक्र करने से क्या लाभ । जो भाग्य में बदा है वह तो होगा ही ।

२—बर्षा ऋतु का बन बारबार काटे जाने पर भी पुनः पल्लवित हो जाता है । इसी तरह, बारबार रोके जाने पर भी मन को नहीं रोका जा सकता है । बहते हुए पानी को भी रोका जा सकता है—पर मन को नहीं ।

४—पहाड़ की 'धार' पर याने ऊँचाई पर देवी का मन्दिर है जिसे दूध से नहलाया जाता है । मैं तेरा जूठन कभी नहीं खाता पर 'माया' अर्थात् प्रेम के कारण मुझे उसे खाना पड़ रहा है ।

५—भूटा ( एक प्रकार की वास्कट ) मखमल की बनी है और उसकी जेब लबदान कपड़े की बनी है । तू फौज में वापस जा रहा है । पर अपना

सारा प्रेम फौज को ही मत दे देना आधा फौज को देना और आधा मेरे लिए रखना ।

६—उड़ती हुई चिड़िया पानी में गिर रही थी बीच ही में बाज पक्षी ने उसे पकड़ लिया, अजीब बात है, माया अर्थात् प्रेम के कारण कुछ का कुछ हो जाता है ।

७—'सैन्याला' लकड़ी से बनायी हुई 'भरपाटी' में (भरपाटी कमरे के अन्दर छत में जड़े हुए एक छोटे से गोदाम को कहते हैं ) जाँडी रक्खी हुई हैं ( जोड़ी लोहे की बनी हुई एक अँगीठी को कहते हैं ) । तेरे प्रेम ने मुझे इस तरह कस रक्खा है जैसे सांप किसी को कस दे ।

८—चढ़ाई में भोट का ही घोड़ा काम देता है और मैदान में हाथी । तेरी याद में हर रोज मुझे हिचकियां आती हैं, धन्य है मेरा सीना जो उन्हें बर्दाश्त कर ले रहा है ।

९—भैंसों का नाम 'रुमली' और 'ठुमली' है और गाय का नाम 'काँजरी' है । जहाँ पर हम दोनों बैठा करते हैं वहाँ हाजरी के फूल खिलेंगे ।

१०—गाड़ ( खेत ) में चारों ओर धान के वृक्ष उगे हुए हैं और उनके बीच में रास्ता है । खेत की दीवारों से घास की झाड़ियां लटक रही है । मुझे मां की तो नराई लग रही है और भाई की 'काकुरी' ( 'मकाई' और 'काकुरी' ये दोनो शब्द किसी की याद के लिए उपयोग में लाये जाते हैं— यहां पर नराई मां के लिए और 'काकुरी' भाई के लिए काम में लाये गये हैं ) दोनों की याद मूझे आ रही है पर दोनों की याद एक दूसरे से भिन्न हैं ।

[illegible]—नैनीताल में पानी की छत्तीसों धाराएँ हैं । पर फिर भी पानी का अभाव हैं । हम तुम एक-दूसरे को इतना चाहते हैं पर फिर भी एक नहीं हो सकते । हम एक दूसरे से अलग हो रहे हैं । पर जिस पत्थर पर हम बैठा करते थे उसमें हमारे हृदय की धड़कन शेष रह जायगी ।

( भाव यह है कि जब भी, उन्हें एक दूसरे की याद आयेगी वे उस पत्थर पर आकर अपनी उन धड़कनों को सुन सकेंगे जो वे उन पुराने मीठे दिनों में सुना करते थे ) । ]

७

## सांझ का गीत

[ इस गीत को स्त्रियाँ घर के शुभ कार्य में गाती हैं । यह गीत दिया जलाने का गीत है और शगुन-गीत के बाद गाया जाता है । ]

साँझ पड़ी संझवाली
पाया चलि ऐन
आसपास मोत्यूँ हार बीच चलिन गंग
लछिमी पूछन छिन स्वामी आपणा नारायण
कीनूँ घरी आनन्द बधाई
कीनूँ घरी सुलछीणि रात्रि
दियड़ा तैन जाग हो श्री गली रात्री
जाग हो दियड़ा ईनू घरी रात्रि
जाग हो दियड़ा सुलछीणि रात्रि
रामिचन्द्र घर लछिमनू घर साँझ को दीयो जगायो
सुहागीलि सीता-देहि बहुराणी जनम ऐ वान्ति

इन बहुवन की शोभ्रण कोख
दियड़ा नैन जाग हो श्रीगली रात्रि
जाग हो दियड़ा ईनू घरी रात्रि, सुलछीणि रात्रि
अगर चन्दन को दीयड़ा कापुर सारी बाती
जाग हो दियड़ा ईनू घरी रात्रि

(अलमोड़ा नैनीताल)

o

[ सांझ हो गयी है। संझवाली अब चल कर आ गयी हैं। उनके आस-पास मोतियों के हार हैं और बीच में गंगा बह रही है। देवी लक्ष्मी अपने स्वामी नारायण से पूछती हैं, "यह किन लोगों के घर आज आनन्द हो रहा है ? कहाँ यह बधाई हो रही है ? किन घरों की रात आज अच्छे लक्षणों से परिपूर्ण है ?"

जिन घरों में शुभ कार्य है वहाँ दीपक जगे। सारी रात यह दीपक जगे। इस सुलक्षणों से परिपूर्ण रात्रि में दीपक जगे। राम और लक्ष्मण घर ही में हैं। साँझ का दीपक जगाया। सुहागिन सीता आजन्म सौभाग्यवती हो। उनके पुत्रों का कल्याण हो। इन सभी बहुओं की कोख भरी-पूरी हो। हे दीपक ! तुम सारी रात्रि इनके घर जलना। इस शुभ रात्रि में तुम जगमगाना। अगर चन्दन का दीपक है और उसमें कपूर की बाती है। हे दीपक इनके घर तुम सारी रात जगमगाओ। ]

८

## संझवाली

[ यह कमायूँ का बहुत प्राचीन गीत है। इसे संध्या के समय गाया जाता है। इसे पुरुष ही गाते हैं। यह हर अवसर पर नहीं गाया जाता। इसे 'जागरों की संझावाली' भी कहा जाता है, क्योंकि जब भी गाँवों में 'जागर' लगते हैं ( 'जागर' उस 'पूजा' को कहते हैं जिसे किसी स्थानीय देवी या देवता को खुश करने के लिए किया जाता है )। नृत्य और गीत के साथ गाँव के किसी व्यक्ति विशेष में वह देवता अवतरित हो जाता है और नगोड़ा, थाली इत्यादि वाद्य यंत्रों से उसको नचाते हैं। गाँव में यदि किसी को 'भूत' लगा हो तो इस विधि से उस भूत प्रेत को भगाया जाता है, तो उन्हें प्रारम्भ करने के पूर्व ही इसे गाते हैं। यह गीत अल्मोड़ा जिले के प्रायः सभी स्थानों में, प्रचलित है। इस गीत में कुछ अंश छोड़ दिये गये हैं। ]

पूरबै को दिन पश्चिम न्है गोछ
दिन नरैण हरी अच्छप हैई गयो
ओ ऊंचा हिंमाल मांजा
पियलो घाम भयो
गैला गैला पातलों बै
संजय झूली गेछ
शिरी समुदा बटी
संजय झूली ऐछ
बिष्णु लोका मांजा आब
संजय झूली ऐछ
गैली नामा लोका बटी
संजय झूली झूली ऐछ
राम की अयोध्या बटी
संजय झूवली ऐछ

कृष्णा की द्वारिका बटी
संजय भूली ऐछ
शिव की कैलाशा शम्भो
संजय भूली ऐछ
किसकिंधा पहाड़ा बटी
संजय भूली ऐछ
धौलागिरी पर्वत है
संजय भूली एछ
सोमेरु पर्वत भुली
संजय भूली ऐछ
इन्द्रा लोका मांजा ग्राब
संजय भूवली ऐछ
ब्रह्मा लोका मांजा भुली
संजय भूली ऐछ
तीना लोका मांजा ग्राब
संजय भूली ऐछ
चौदा भवन हरी
संजय भूली ऐछ
मृत्यु का मंडल मांजा
संजय भूली ऐछ

... ... ....

पड़नी संजया मांजा
के काम करला
पड़नी संजया मांजा
दीपक जगाला
शाली का ग्राम की
पूजन करला
पड़नी संजया मांजा
यों काम करला
पड़नी संजया मांजा

बालक के बोल्यूनी
सुभाग बोलाला हरी
झकड़ो नै करना
पड़नी संजया मांजा
झाड़ो नै झाड़ना
तनौं घरनौ मांजा आबा
लक्ष्मी झाड़ी जेंछ
पड़नी संजया मांजा
दिशाण नै लगौना
तनौं घरौं मांजा आबा
सदा रोगी रौनी हो
पड़नी संजया मांजा
लूणा नै बांटना
तनौं घरनौं को आबा
धरमा बांटी जांछ
पड़नी संजया म
चाखो नै लगूना
तनौं घरनौं की आबा
तिरिया रोगी रैंछ
पड़नी संजया मांजा
झकड़ो नै करना
तनौं घरनौन मांजा
कालौ को वास हूँछ
पड़नी संजया मांजा
दीपक जगाला
भगवानौ नाम आबा
पूजनै करला
पड़नी संजया मांजा
काठो नै काटना
तनौं घरौं मांजा आबै

बालक रोगी रूँछ
पड़नी संजया मांजा
ज्योड़ नैं बाँटना
तनौं घरों मांजा आबा
गाई नी रचनी
पड़नी संजया मांजा
छांस नी फानना
तनौं घरों मांजामुली
धिनाई नैं रचनी

... ... ...

जनों घरों होलो
ओ दान धरम
तनों घरों जाली
आबा देवी लक्ष्मी
जनों घरौ मांजा होलो
हँसन पुरुख
तनों घरों जाये
देवी तुम लछमी
जनों घरों मांजा होली
सुलच्छिणा नारी
जनों घरों मांजा होली
दूध दिंणी गाय
दूध दिंणी गाय
सुवेवा सम्पती
तनों घरौं मांजा जाली
देवी लछिमा
जनौं घरौं में हूँछ सदा
भगवानौ की पूजा
तनौं घरौं में जाली
देवी लछिमा

जनौं घरों में
दान न्हैती धरम न्हैती
तनौं घरोंमें जाली बैंणा संजया
जनौं घरों में सदा
भूठी सदा चोरी हूँछ
तनौं घरों में जाली
बैंणा संजया

... ... ...

देवी लछिमी देवी
दीपक जगाली
इन्द्रलोका मांजा देवी
जगायो दीपका
तती को दीपका जागो
मृत्यु का मंडला
भुमि का भुम्याव नाम को
दीपक जगाछ

... ... ...

तेंतीस कोट द्याप्तानै को
दीपक जागो

०

[ पूर्व का दिन अब पश्चिम को चला गया है । हे हरी, हे नारायण, अब दिन डूब रहा है । हिमालय पर्वत के ऊँचे शिखरों की धूप अब पीले रंग की हो गयी है । पेड़ों के घने समूहों में घने पत्तों में संध्या भूल गयी है । बड़े-बड़े महासागरों से संध्या भूलती हुई चली आ रही है । विष्णु-लोक में संध्या भूली हुई है । पाताल-लोक से भी संध्या भूलती हुई चली आ रही है । राम की अयोध्या से संध्या भूलती हुई आ रही है । कृष्ण की द्वारिका से संध्या भूलती हुई आ रही है । शिव की कैलाश में संध्या भूल रही है । किसकिंधा पर्वत से भी संध्या भूलती हुई आ रही है, धौलागिरी पर्वत से संध्या भूलती हुई आ रही है । सुमेरु पर्वत से संध्या भूलती हुई आ रही है । इन्द्रलोक में, ब्रह्मलोक में,

तीनों लोकों में संध्या भूल गयी है, चौदह भुवनों में भी संध्या भूल गयी है। मृत्युमंडल ( मृत्यु-लोक ) में भी अब संध्या भूल रही है।

संध्या के आगमन के समय क्या काम किये जाते हैं? सबसे पहिले दीपक जगाते हैं और शालीग्राम देवता की पूजा करते हैं। साँझ पड़ती समय छोटे बालक को खुश रखते हैं, अच्छे सुन्दर शब्द बोलते हैं, झगड़ा नहीं करते। साँझ पड़ती समय झाड़ू नहीं लगाते नहीं तो 'लक्ष्मी' भी झाड़ी जाती है।

साँझ पड़ती समय बिस्तर नहीं लगाते, नहीं तो उस घर में हमेशा रोग का वास रहता है। साँझ पड़ती समय नमक नहीं बाँटते हैं क्योंकि नमक के साथ धर्म भी बँट जाता है। साँझ पड़ती समय चक्की नहीं पीसते क्योंकि इस समय चक्की पीसने से घर की स्त्री रोगी हो जाती है। साँझ के आगमन के समय झगड़ा नहीं करते, क्योंकि जहाँ इस समय झगड़ा होता है, वहाँ काल का वाश रहता है साँझ पड़ती समय दीपक जगाते हैं, भगवान के नाम का पूजन करते हैं, साँझ पड़ती समय लकड़ी नहीं काटते, क्योंकि जिन घरों में इस समय लकड़ी काटी जाती है उन घरों में बालक रोगी हो जाते हैं। साँझ पड़ती समय रस्सी नहीं बटी जाती क्योंकि रस्सी बटने से गाय भैंस दूध देना बन्द कर देती हैं, इस समय छांस भी नहीं फेटी जाती क्योंकि इससे भी गाय भैंस दूध नहीं देतीं।

जिन घरों में दान और धर्म होता है, उन घरों में देवी लक्ष्मी जायँगी। जिन घरों में हँसता हुआ पुरुष होगा उन घरों में देवी लक्ष्मी तुम जाना। जिन घरों में अच्छे लक्षणों से विभूषित नारी होगी, दूध देने वाली गाय होगी, सत्य से अर्जित सम्पत्ति होगी, वहीं देवी लक्ष्मी जायगी। जिन घरों में हमेशा भगवान् की पूजा होती है वहीं देवी लक्ष्मी जायगी। जिन घरों में दान नहीं है, धर्म नहीं है, हमेशा कपट रहता है वहाँ बहिन संजया जायगी। जिन घरों में हमेशा झूठ बोली जाती है, हमेशा चोरी इत्यादि से सम्पत्ति जोड़ी जाती है, वहाँ बहिन संजया जायगी।

देवी लक्ष्मी अब दीपक जगायेगी। पहिला दीपक इन्द्रलोक में जगाया। वहाँ के दीपक को जगाकर मृत्यु-मंडल अर्थात् मृत्युलोक का दीपक जगाया, फिर भूमि के देवता का दीपक जगाया।

इसी प्रकार अनेक देवी देवताओं का दीपक जगाया, पूरे तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का दीपक जगाया।

## लोरी गीत

१

[ यह कुमायूं की बहुत प्राचीन लोरी है—इसे अधिकतर नैनीताल जिले के मुक्तेश्वर और उसके आसपास के ग्रामों में गाया जाता है। इसे घर की कोई भी स्त्री बच्चे को सुलाने के लिए गा लेती है। ]

झूली ले झूली ले भावा झूली ले,
परबि को पिंग दयों लौ।
पश्चिम की हावा,
झूली ले भावा, झूली ले।
तेरी ईजू़र पलुरिया घास,
जाई रै छ।
तेरा लीजिया भावा,
चुचि भरी लाली।
चड़ी मारी लाली,

चुचि खापै ले लै भावा, झूली रे ।
चड़ी खेल लगालै भावा होली ले ;
चुंगरौ टौड़लै भावा ।
खातड़ी फाड़लै ,
तेरी छतर राजगद्दी ।
बड़ी जावी होली ले ,
कुमवी को जौव खालै ।
अजुवा को पाणी ,
गुदड़ी में सोई रै ले ।
होली ले भावा होली ले ॥

( नैनीताल )

०

[ तुझे पूरब दिशा की ओर से थपकी दूंगी और पश्चिम दिशा की हवा तुझे दूंगी । तू अपने खटोले में झूलता जा । तेरी मां 'पलुरिया' घास (एक प्रकार की घास ) लेने जंगल में गयी है, ऐ बालक ! तेरे लिए अपने स्तनों में दूध भर लायेगी, वहाँ से चिड़िया मार कर लायेगी । ओ बालक ! तू उसके स्तनों को अपने मुंह में लेगा और चिड़िया से खेलेगा । झूलता जा, झूलता जा बड़े होने पर तू 'चुंगरो' तोड़ेगा ( अच्छा किसान बनेगा ) अनेक ओढ़ने और बिछौने फाड़ेगा—तेरी राजगद्दी, तेरा छत्र बहुत बड़ा होगा ( तू खूब नाम पैदा करेगा )—तू झूलता जा । 'कुमवी' का 'जौल' खावेगा 'अजुवा' का पानी पियेगा और अपनी 'गुदड़ी' में सोता रहेगा । ऐ बालक ! तू झूलता जा, झूलता जा ।]

# हुड़किया-बौल

१०

[ यह कुमायूँ का बहुत प्राचीन और बहुत प्रसिद्ध श्रम-गीत है जिसे केवल धान के वृक्षों को लगाते समय, जिसे 'रोपाई' कहते हैं और 'मडुवा' के खेतों को गोंड़ते समय जिसे 'गोड़ाई' कहते हैं, गाया जाता है। यह गीत खेतों में काम करने वाले स्त्री-पुरुषों को उत्साहित करने के लिए गाये जाते हैं और इनमें पुराने वीरों की गाथाएँ गायी जाती हैं। नीचे दिया हुआ गीत 'हुड़किया-बौल' का वह भाग है जिसे धरती-माता की आराधना में 'बौल' शुरू करने से पहिले गाया जाता है। यह गीत कुमायूँ के करीब करीब सभी स्थानों में प्रचलित है। 'बौल' शब्द के माने कठिन काम से है। ]

शेवो दी बिदा हो,
धरती मातो।
माता जै की भूमि लागो बौला वे,
धरती मातो।
दै यारो वी की भूमि होलो,
जिमी भरी अन्ना वे।
धरती मातो।
गोठा गाई पेटा भरी।
घास देला हो धरती मातो,
तै की भूमि मां जा रे।
बड़ी खुशी हैछ रे धरती मातो,
माता तै का जिमी बटी।

अन दान हुँछ रे धरती मातो,
सत को कमाया हो धरती मातो।
दै मातो लागो ब्रह्मा वे,
पेटा भरी भूख हो धरती मातो,
माता तै को अन्न जालो हो धरती मातो,
दै माता साधू सेवा पे लागओरे धरती मातो।
माता तै की भूमि मांजा दो धरती मातो,
मरदा सबै सुखी होला हो धरती माता।
यारो बौला काँ कै मिललो रे धरती मातो,
खिरखन भोरजन थाल हो धरती माता।
वालख मिललो हो धरती माता,
दै यारो वीं की भूमि होली।
सयणै की माना हो धरती माता,
वी की भूमि माजा रे धरती मातो।
भिखारी कें भीख मिल,
मुख माँगी रे धरती मातो।
वी की गड़ी मड़ी मांजा रे धरती मातो,
मरदा होला मला मला,
जागियो रे धरती माता।
वी की जिमी भूमी में धरती मातो,
व्योय का वरपना हो धरती मातो।
लो वी भूमि का सतै ले हो धरती मातो।
राजा परजा सबै सुखी रौला रे धरती मातो।
दें मरदा त की भूमि मांजा,
सदा खुशी रौ ली रे धरती मातो।
मरदा तैकी भूमि मांजा रे धरती मातो,
भला भला देवा हो धरती मातो।
माता वासतक लहे ला हो धरती मातो,

(अलमोड़ा)

[ हे धरती माता ! न धूप ही हो और न 'बारिष' ताकि हम काम कर सकें। हे माता ! जिसकी भूमि में यह गीत गाया जायगा उसकी भूमि से प्रशस्त अन्न उपजेगा, गाय और अन्य पशुओं को पेट भर घास भी मिलेगी। आज उसकी भूमि में बड़ी खुशी हो रही है। हे माता ! उसकी भूमि से पैदा हुए अन्न के दान इत्यादि होंगे। वह सत्य की कमाई है। हे माता ! ब्रह्मा को पेट भर भूख लग रही है। हे माता ! उस किसान का अन्न साधुओं की सेवा में लगेगा। और उसके गाँव में सभी मनुष्य सुखी रहेंगे। हे धरती माता ! यह 'बौल' ( श्रम ) सबसे पहिले किसको मिलेगा ? खीर और भोजन से भरे हुए थाल किसको प्राप्त होंगे ? ये पहिले बालक को मिलेंगे। जिसकी भूमि में यह 'बौल' लगा हुआ है उसकी भूमि में सत्य की प्रतिष्ठा होगी। भिखारी को मुंह माँगी भीख मिलेगी उसकी भूमि में यज्ञादि होंगे खूब जनेऊ और व्याह होंगे, उसकी भूमि के सत्य से राजा और प्रजा सभी सुखी रहेंगे। हे धरती माता ! उसकी भूमि में हमेशा खुशी का राज्य रहेगा। हे धरती माता ! उसकी भूमि में बड़े २ देवता अवतार लेते रहेंगे। ]

## बारामाशी

### ११

[ यह गीत केवल चैत्र के महीने में, नये वर्ष के आगमन के साथ ही गाया जाता है और इसे गाने वालों की एक विशेष जाति है जिन्हें वहाँ की भाषा में 'हुड़कियां' या 'बादी' कहा जाता है । केवल उसी जाति के लोग इसे गाते हैं और वे लोग घर घर जाकर चैत्र के पूरे महीने में इसे सुनाते हैं । ये पेशेवर गाने वाले हैं जिनकी स्थिति अब गिरती जा रही है । ]

फुलैत्रो बिंदिया, फूलै बुरूँशी ।
सबै फूल फूलीगो चैतोई माशा ,
बैसाखा माशा भुँवा पति ब्याता ।
सिरै को अंचला उड़ि उड़ि जालो ,
जेठई माशा तपकी गे धूपा ,
हुरुकै दै बिजना ठंढी सरूपा ।
आसौड़ धरतरी करिले शृंगारा ,
गिरादिमा ऐगो मेघ बहारा ।
सावन माशा गरजी गोयो मेघ ,
बरसना लागा सागरे तोला ।
भादोई भवन भयो घन घोरा ,
पिहु-पिहु बोले बनकाई मोरा ।
असोज माशा कुँवार कवायो ,
पंचनामा देवा करीलो औतारा ।
कातिक माशा अघनी कवाई ,
घर घर दीपक जगै दिबाई ।

मंगशीर माशा शितमा ऋतु आई ,
सौड़ सुवेद को सेज बनाओ ।
पुसैई माशा पड़लो तुस्यारो ,
हियड़ो कम्पलो अगनी अपारा ।
माघई माशा धरमा ऋतु आई ,
घीऊँ खिचड़ी लै बरमा जिवाया ।
फागुना माशा बाधी गई चीरा ,
चोया चंदनी को पैरी ले अबीरा ।

(अल्मोड़ा)

०

[ बिंदिया और बूरूँशी के लाल फूल खिले हैं । चैत के महीने में सभी फूल खिलते हैं । बैसाख के महीने में बड़ी तेज हवा चलती है जिससे सिर का आंचल बार-बार उड़-उड़ जाता है । ज्येष्ठ का महीना तेज धूप अपने साथ लाता हैं । पंखा झल कर शीतल वायु के झोंकों से शान्त कर । आषाढ़ के महीने में धरती अपना श्रृंगार शुरू करती है । धरती फलती-फूलती है और आसमान में मेघों की बहार छायी रहती है । सावन के महीने में जोर से मेघ गरजते हैं और आसमान से सागर ( जोर का पानी ) बरसता है । भादों के महीने में भी घनघोर बादलों से आसमान आच्छादित रहता है और बन में मोर बोलते हैं । आश्विन में देवता प्रकट होते हैं और पंचनाम देवता अवतार लेते हैं । कार्तिक के महीन में दिवाली का पर्व होता हैं और हर घर में दीपक जलाते हैं । मार्गशीर्ष के महीने से शीतल ऋतु का आगमन होने लगता है और लोग रुई के बने हुए ओढ़ने और बिछौनो से अपनी सेज बनाते हैं । पूस के महीने में कड़ा पाला पड़ता है जिससे हृदय काँपता है और जिसकी सर्दी से बचने के लिए अपार अग्नि की आवश्यकता होती है । माघ के महीने में धर्म-कर्म की ऋतु का आगमन होता है और घी तथा खिचड़ी ( चावल और दाल मिला हुआ ) से ब्राह्मणों को जीवित रखते हैं । फागुन के महीने में होली का पर्व होता है, चीर-बाँधी जाती है और चोया चंदन तथा अबीर से शरीर को सजाया जाता हैं । ]

## ऋतु रैण

### १२

[ यह गीत भी केवल चैत्र के ही महीने में 'हुड़कियों' या 'लादियों' ( पेशेवर गानेवालों ) द्वारा गाया जाता है और भेंटली' की प्रथा से सम्बन्धित है। इस प्रथा के अनुसार चैत्र के महीने में हर भाई अपनी बहिन से मिलने जाता है और उसे कई वस्तुएँ ( सामर्थ्य के अनुसार ) भेंट करता है । भेंट करने से 'भेटौली' नाम इस प्रथा का पड़ा है। यह कुमायूं का बहुत प्राचीन गीत है और उस परिस्थिति का चित्रण करता है जब बहुत छोटी उम्र में लड़की की शादी हो जाती थी और सड़कें इत्यादि न होने के कारण कई सालों तक वह न मायके आ सकती थी और न भाई ही उससे मिलने जा सकता था, इसके अलावा उस पर सास और ननद द्वारा तरह-तरह के अत्याचार होते थे—प्रस्तुत गीत में एक भाई बहुत कोशिशों के बाद अपनी बहिन के पास पहुँचता है ओर उसे मां के पास लाना चाहता है पर उसे वहीं ज़हर देकर मार देते हैं । जहर देकर मारने वाला अंश गीत में नहीं गाया जाता। बहिन से भेंट होने तक का अंश गीत में गाते हैं। और जाति के लोग इसे नहीं गाते हैं पर सुनते सब हैं। भाई-बहन के प्रेम की यह करुण कहानी बरबस सभी सुनने वालों को रुला देती है । ]

जो काली आंशा क्वेलड़ी न्यो लड़ी बांशैली वे ,<br>
ए अच्छा गोरी रणमणा ऋतु भया वे ।<br>
ए बांश भया कफुवा ओ मैती का देशा वे ,<br>
इजू मेरी सुणली भै भेटोई लगाली वे ।

देराणी जेठांणी को आली बालो ऐ जीला वे,
म्यरा भैले वे क्या ऐ बेर लै छ वे।
ऊँलो बैंणा ऊँछ ओ पछिनी ह्र्या लिवे,
त्वेसूँ बैंणा अंगिया ओ सिणूण लै छ वे।
त्वेसूँ बैंणा पिछौड़ी ओ बणुण लै छ वे,
ओ अंगिया सिणूंणा लागा ए दाइ बारै माशा वे।
ए पिछौड़ी बणूंणा लागा ए दाइ छैई माशा वे।
ए बारो म्हैणा का बैंणा ओ बारै अंगिया वे,
औरा ल्यूंलो पाटैं को ओ चूनड़ी साड़ी वे।
बत्यैं दिया ईजू मेरी ओ वैणी को देशा वे,
को दिशा वे होली वे ओ बैनवा हमारी वे,
नां छा तेरी वेणा ए ना तू वी को भै।
ओ तू नावाला सादो ओ नामड़ो जनम है,
है नामड़ो नी हूनौ इजू ओ चिजन काकड़ो वे।
मनखियां जायो ओ नामड़ो कां देखो वे,
हिया पंछी गयो ईजू मैं ले जड़ी बूटी खैंछी वे।
तब भये रे बालो वे तु सन्तती बालो वे,
माजी खाधों ईजू तू वे ओ जड़ी बूटी वे।
ए पीठी को पछिन ओ भयल होली वे,
ए जब तेरी वेंणी को व्या हुण रचीण वे।
तब छि यै बालो तू ओ चंवरी बालो वे,
पर्कै दिया इजू मेरी लाडू की कनौ ली वे।
भोला जानू ओ इजा ए बैंणी का देशा,
ए तुमरी बैनवा सादो ओ चौ गंगा पारा वे।
को बाला सादो ते ओ बाटुली देखालो,
को बाला सादो ते ओ गंगोली तरालो।
आंखिन को जूं लो इजू मैं वाटुली देखूं लो वे,
जांगिन को जूं लो मैं गंगोली वारूंलो वे,
ए उतुड़ी को उठलो ए शिलंडन चौरडी वे,
शिलंडन चौरड़ी ए बैठक ल्ही हालो वे।

को दिशा होली भागि वे वैनवे हमारी वे,
उतड़ी को उठली ओ पुरुवैं का छाजा वे।
पुरुवैं का छाजा ए बैठक लही हालो,
ए भौजी वे भायाला भौजी तुमू बोलूनी वे।
तुमरी अन्वारि को पौहुंण ए रौल।
ततुक दो छौंण ने दे तू ननंदे हमारी,
आपणौ अलुवैं को वे मैं बानें झन दे।
ए तुमरा शबदा छिना भौजी बबा ज्यू की ढ्वैं,
तुमरी अन्वारि को पौहुंणौ ऐ रौछ।
ए उतढ़ी की उठली पुरुवैं का छाजा वे,
साचीनैं को हमको भाया लें ऐ रौछ।
टो का दिणा वैणा वे तू बिसरी जाली,
गोदी भैठी वैनवा ओ आंसू वैं ढावैं ली वे।
नाना रोधीं नाना रोधीं तू बैना हमारी,
भोला जों लों ओ वैंणा ए मैती का देशा वे।
ए टूटिया दातुलि को वे घास वे नी हौन,
मायड़ी मरी यौ को मैत वे मी हौन वे।
ए पाणी की तीमा इजू छांसैं लैं नी जानी,
इजू की नराई वे बौज्यू लैं नी जानी।
ए डाली में को कफुवा पुछड़ी हिला लो वे,
बिना भै की बैंनवां ओ आंसवैं ढावैं ली।
ऋतु ऐगीं हेरी फेरी यो गरमा ऋतु वे,
मरीग्ये मनखा ए पलटी नी ऊँनौ।
ज्यूना भागी जियला नौं ऋतु सुँणाला वे,
मरी या मनखा ए पलटी नी औ ना।
जो मागी जियला ए नौं ऋतु सुँणला वे,
यो दिना यो माशा ए लुग जुग भेटिया वे।

(अलमोड़ा)

काली कोयल और नेवली चिड़ियाँ अब गाने लगी हैं। हे गोरी ! अब दिल को उदास करने वाली ऋतु—ग्रीष्म ऋतु आ गयी है । ऐ कफुवा ! ( एक चिड़िया का नाम ) तू मेरी मा के देश में जाकर क्यों नहीं बोलता ! वहाँ बोलेगा तो मेरी मां सुनेगी और उसे याद आयेगी कि चैत्र का महीना आ गया है। उसे मेरी भी याद आयेगी और वह मेरे भाई को मुझसे मिलने भेजेगी। मेरी जेठ और देवरानी के पास उनके भाइयों द्वारा भेजी हुई भेंट कब की पहुँच चुकी है। तब मेरा भाई क्यों देर कर रहा है ? आता हूँ बहिन, आता हूँ पर शायद हरेले के बाद। तेरे लिए अँगिया सिला रहा हूँ । बहिन तेरे लिए पिछौड़ा ( ओढ़नी ) सिला रहा हूँ। अँगिया सिलाने में बारह महीने लगे और ओढ़नी सिलाने में छ महीने। बार महीनों के लिए बार अँगियां सिलानी पड़ीं इनके अलावा तेरे लिए साड़ी भी लाऊँगा। हे मां ! मुझे बता दे मेरी बहिन किस जगह ब्याही हुई है ? कौन सी दिशा वह रहती है ? तेरी न कोई बहिन है और न तू किसी का भाई है । ऐ सादो ( उसका नाम ) तू 'नामड़' ही पैदा हुआ है अर्थात्—तेरे आगे पीछे और कोई नहीं हुआ । मेरी मा, तू कैसी बात करती है ? 'नामड़' तो फल-फूल भी नहीं होते ? फिर मनुष्य जो 'नामड़' हो, कहाँ अभी तक देखा गया है ? ऐ मूर्ख बालक मैंने जड़ी-बूटी खाई थी तभी तू हुआ, नहीं तो मैं ऐसी ही रहती। मां ! यदि ऐसा है तो फिर एक बार जड़ी-बूटी खा कर दिखा, मेरा छोटा भाई हो जायगा। अच्छा तू नहीं मानेगा, तो सुन ! जब तेरी बहिन की शादी होना तय हुआ, उस समय तू 'चंवरी' बालक था—अर्थात् गोद का बालक था। ऐ मां ! अब देर मत कर, जल्दी एक कंडी भर लड्डू पका दे मैं कल ही अपनी बहिन से मिलने जाता हूँ। ऐ सादो ! मूर्ख मत बनो। तुम्हारी बहिन चार नदियों के उस पार है। ऐ सादो ! तुझे कौन रास्ता दिखायेगा ? तुझे कौन गंगोली नदी पार करायेगा। ऐ मां, मेरी आँखें मुझे रास्ता दिखायेंगी और मेरी जाँघें मुझे नदी पार करवायेंगी । वहाँ से वह उठा और शिलंड़ा चौरड़ी ( एक स्थान का नाम ) पहुँचा। शिलंड़ा चौरड़ी में वह बैठ गया वहाँ पर बटोहियों से उसने पूछा 'मेरी बहिन किस दिशा की ओर होगी ? वहाँ से वह उठा और अपनी बहिन के घर के पास, उसके पूर्व की ओर बैठ गया। उसकी ननद ने कहा भाभी तुम्हारा भाई तुम्हें बुलाने आया है। तुम्हारी ही सूरत का

पाहुना आया हुआ है। "ओ मेरी ननद, क्यों ऐसी चोट मेरे कलेजे में तू मार रही है ? अपने 'अलुवा' (अलुवा उस खानेके सामान को कहते हैं। जिसे पका कर भाई बहिन को भेंट में देता है ) में से मुझे कुछ मत देना।" "ए भाभी तुम कुछ भी कहो, तुम्हारी ही सूरत का पाहुना बाहर आया हुआ है।" वहाँ से वह उठी और अपने घर के पूर्व की ओर के कमरे में गयी। उसने देखा, सचमुच उसकी ही सूरत का व्यक्ति वहाँ आया है, वह फौरन समझ गयी कि वही उसका भाई है और सब कुछ भूल कर उससे जाकर लिपट गयी और उसकी आँखों से लगातार आँसू झरने लगे। "बहिन तू इस प्रकार मत रो, ओ मेरी प्यारी बहिन, कल ही हम 'मैती का देश' ( मां के देश ) को चले जायँगे।

टूटी हुई दराती से घास इकठ्ठा नहीं की जा सकती। मां के बिना मायके का कोई अर्थ नहीं है। पानी की प्यास छाँस पीकर नहीं बुझ सकती और मां की नराई बाप से दुर नहीं होती अर्थात् बाप का प्रेम मां के प्रेम का स्थान नहीं ले सकता। पेड़ की डाल पर बैठा हुआ कफुवा पक्षी जब अपनी पूंछ हिला कर चैत्र के आने का सन्देश देता है तो बिना भाई की बहिन आंसू लुढ़काती है। घूम फिर कर फिर ग्रीष्म ऋतु आ गयी है पर जो मनुष्य मर जाता है वह लौट कर वापस नहीं आता। नयी ऋतु का सन्देश केवल वही लोग सुन सकते हैं जो जिन्दा हैं। हमारा आशीर्वाद है कि आप अमर रहें, ताकि अनन्त काल तक इस महीने और इन दिनों में अपने सम्बन्धियों और प्रियजनों से मिलते रहें। ]

१३

यो आयो चैतो का महीना ,
ईजू मेरी रोली ।
मेरी ईजूँ की बांधी लटी ,
छै महीना में खोली ॥
गांठ गोरू गल घण्टा ,
बाजन्छा टिनटिना ।
माया लागी बारा मासा ,
बाटुली दिन दिना ॥
बेडु पाको बारा मासा ,
काफल पाको जेठा ।
हम तौ परदेश ईजा ,
बसी हूं छ भेंटा ॥

[ चैत्र का महीना आ गया है । मेरी मां रोयेगी अपनी मां की बांधी हुई लट ६ महीने में खुलेगी । गाय गोठ 'कमरे' में बँधी हुई है । गले में घंटियां टिनटिन बज रही हैं । मां की माया बारहों महीने लगती है । बाटुली 'याद' आये दिन लग रही है । बेडु बारहों महीने पकता है । काफल जेठ में, मैं परदेश में हूँ । माँ से भेंट कैसे होगी । ]

## पँवारा—(अजुवा बफौला)

१४

[ कुमायूं में 'आल्हा-ऊदल' की तरह अनेक वीरों के पँवारे प्रचलित हैं जिनमें अजुवा-बफौला का पँवारा बहुत प्रसिद्ध है। इन वीरों को वहां 'पैग' कहा जाता रहा है। इनकी कहानियों को 'हुड़किया-बौल' में गाते हैं ताकि खेतों में काम करते समय किसानों में जोश उत्पन्न किया जा सके।

प्रस्तुत पंक्तियां अजुवा-बफौला के पँवारे में से ली गयी हैं। ]

छियो काली कुमूं मांजा ओ भारती चना,
चनो तेको राजा छियो रे भारती चना।

... ... ...

राजा त्वे कणी नकी दाशा ऐ गेछ हो भारती चना,
मालो राजा बादी हाछ रे भारती चना।
मेरो राजा लुटी जांछ रे भारती चना,
चनो ढल ढल रूवींछ हो भारती चना।
मेरो दुख को फेड़लो हो देवना भाया।।
देवानो लागी ग्या बोलांण हो देवाना भाया,
राजा धैस्जन धर रे भारती चना।

राजो बफौली का कोटा रे भारती चना,
पैंग छ बफौली का कोटा हो भारती चना।
छ वे अजुवा बफौला रे भारती चना,
छ वे जंगलै का शेरा वां बफौली पैगा।
पैगो बादी बेर लौछ वो बफौला पैगा,
राजो तैकणीं बौलौनी रे भारती चना।

× × ×

राजो मालन शादल ओ बफौला पैगा,
त्यरो दुःख फिटी जालो वो भारती चना।

o

[ काली-कुमाऊँ में भारती चन्द नामक राजा था। ऐ भारती चन्द ! उस समय तेरा राज्य था।

× × ×

राजा तुझे बुरी दशा ने घेर लिया और तेरे राज्य में मालों का अधिकार हो गया। आज मेरा राजा लूट लिया गया है। भारती चन्द विवशता में आंसू बहाता है और अपने 'देबानों' ( मंत्रियों ) से पूछता है "अब मेरा दुःख कौन दूर करेगा ?" देवान बोलने लगे 'हे राजा धैर्य रक्खो हे भारती चन्द, धैर्य धारण करो। बफौली-कोट में एक पैग (वीर) रहता है। हे भारती चन्द ! उस पैग का नाम अजुवा बफौला है। हे भारती चन्द ! वह पैग अद्‌भुत शक्तिशाली है वह जंगल से शेरों को पकड़ लाता है और उन्हें बाँध कर अपने घर रखता है। हे राजा ! हम उसी पैग को बुलायेंगे"।

× × ×

हे राजा ! उस बफौला पैग ने सभी मालों को ठीक कर दिया। हे भारती चन्द ! अब तेरा दुःख दूर हो गया। ]

## १५

[ कुमायूं में स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले मंगल-गीतों में इस गीत का प्रमुख स्थान है। हर शुभ-कार्य के प्रारम्भ में यह गीत गाया जाता है। ]

शकूना दे शकूना दे।
काज ए अति नीका शकूना बोल।
दाईण बाजन शंख शब्द, दैणी नीर
भरियो कलेश।
अति नीका सो रंगीलो।
पाटल अंचलि कमल को फूल,
सोई फूल मोला बान्त।
गणेश, रामीचन्द्र, लछीमन।
जीवा जनम आद्या अमरू होई
सो ही पाटूँ पैरीं रैन,
सिद्धी, बुद्धी, सीता देही बहू राणी।
आई बान्ती पुत्र वान्ती हो!

( अल्मोड़ा, नैनीताल )

०

[ शगुन दो, शगुन दो। यह अत्यन्त शुभ-कार्य है, शगुन गाओ। दाहिनी ओर शंख बजता है। नीचे दाहिनी ओर कलश भरो। अत्यन्त सुहावना रंगीला वस्त्र है, उस रंगीले वस्त्र से बने हुए अंचल में कमल का सुन्दर पुष्प है। उसी पुष्प को ले आवो। गणेश, राम, लक्ष्मण आजन्म अमर हों, उनके द्वारा लाये हुए वस्त्र को पहिन रखा है, उनके अमर रहने पर ( गणेश राम, लक्ष्मण का नाम लेकर स्त्रियां यह कामना करती हैं कि उनके घर के पुरुष भी अमर हों ) पत्नियों का सोहाग भी बचा रहेगा। सिद्धी, बुद्धी ( गणेश की पत्नी ) और सीता सौभाग्यवती हों, पुत्रवती हों। ]

## निमंत्रण-गीत

१६

[ कुमायूं में गाये जाने वाले मंगल-गीतों में इस गीत का एक विशेष स्थान है । उपनयन-संस्कार के समय तथा विवाह के समय घर की स्त्रियां इसे गाती हैं । शुवा ( शुक् ) को बुलाकर, उसे नगर में भेजा जाता है ताकि वह सभी बेटियों को उस शुभ कार्य में आने का निमंत्रण दे आये ।]

शुवा रे शुवा, बण खंडी शुवा ,
हरियो तेरो गात पिहलो तेरो ठून ।
लाल तेरी खाप, रतङयारी आँखी ,
नजर तेरी बाँकी ।
दे शुवा नगरि हो न्यूंत दिआ ,

नौं नी पछ्याड़न्यूं गौं नी पछ्याड़न्यूं ।
कै घर कै बेटी न्यूत दीऊँ ?
हस्तिनापूर गौं छ, सुभद्रा देहि नौ छ ,
उनरा पुरुष कै अर्जुन नौ छ ।
बी घर वी नार न्यूत ए ,
आघे अघवाड़ी, पीछे फुलवाड़ी ।
हाथ में बेला, गोदी में चेला ,
अ बेटी खिलकनि मैत ए ।

( अल्मोड़ा नैनीताल )

o

[ ए शुवा, ओ वन में रहने वाले शुवा ! तेरा गात हरा है, तेरी ठून ( चोंच ) पीली है, खाप ( मुँह ) तेरी लाल है और आँखें रत्ती के दानों के समान सुन्दर हैं। तेरी नजर बांकी है। तू नगर में जाकर सभी बेटियों को निमंत्रण दे आ।

मैं किसी का नाम नहीं जानता और न किसी का गाँव ही जानता हूँ। किस घर में जाऊँ ? किस बेटी को निमंत्रण दे आऊँ ?

अरे, हस्तिनापुर गाँव है और सुभद्रा देवी नाम है और उनके पुरुष का नाम अर्जुन है, उसी घर में जाकर उसी बेटी को निमंत्रण दे आ। उनके घर के आगे आंगन है और पीछे फुलवाड़ी है। वहीं जाकर निमंत्रण दे आना ! उनके हाथ में बेला होगी और गोद में बालक होगा, वहीं निमंत्रण दे आना।

आओ बेटी ! हँसते खेलते अब पीहर को आवो। ]

## १७

रुक्मा रुक्माणा शुवा
रुक्मा रुक्माणा हा हा हा ।
काटी हाली धान शुवा ,
खुखुरी की म्यान भागी ।
खुखुरी की म्यान ,
तेरी जाली घरी कुड़ी, रुक्मा रुक्माणा शुवा
मेरि जाली ज्याना हा हा हा ।
काफल रसिया शुवा ,
काफल रसिया ।
ऐसो भागी को छै म्यारा ,
हियौना बसिया ।
त्वीले मेरो मन देखो, रुक्मा रुक्माणा शुवा ,
नौ जागा पसिया हा हा हा ।
नैनितालौ उज्यारो भयो ,
बिजुली तारे लै ।
मेरी मन बुझै दिये ,
चिट्ठी का सारै लै ,
के हूंछ फिकर करी ।
रुक्मा रुक्माणा शुवा ,
जै होलो भागों में हा हा हा ।

०

[ धान कट गये हैं । खुखुरी म्यान में है । तेरा तो केवल घर-बार छुटेगा; परन्तु मेरी जान चली जायगी ।

काफलों में रस भरा है । ऐसा तू कौन है जो मेरे हृदय में बसा हुआ है ।

तूने मेरा मन देखा है जो नौ स्थान पर चोट खाया हुआ है ।

नैनीताल में बिजली से प्रकाश हो गया है । पत्र भेजते रहना ताकि मुझे शक्ति मिलती रहे । फिक्र करने से क्या लाभ, भाग्य में जो होना होगा वह तो होगा ही । ]

१८

शौकरे की नानी परू रूम छूमा ,
शौकरे की नानी परू रूम छम ।
मुठी भरी च्यूड़ ,
तन मेरो रामगढ़
मन मेरो प्यूड़, परू छूम ।
शौकरे.........

पाखँ की दन्यारा ,
भूली जौंलो दाँतपाटी ,
नैं भुलूँ अन्वारा, परू छूम,
शौकरे.........

०

[ शौक की लड़की शृंगार करती है । वह कहतीं है—
मेरा शरीर तो रामगढ़ में है परन्तु मेरा हृदय प्यूड़ा स्थान में अर्थात् जहाँ उसका प्रेमी है वहाँ है ।
तेरी याद मुझे हमेशा रहेगी, तेरी दाँतों की पंक्तियों में भूल भी जाऊँगी परन्तु तेरी छवि ( अन्वारी ) नहीं भूल सकती हूँ ।]

———०———

# परिशिष्ट

## भोजपुरी के लोकगीत

| | | |
|---|---|---|
| भिनसार | — | सवेरा, प्रातःकाल |
| सुन्नर | — | सुन्दर |
| बभना | — | ब्राह्मण |
| पतरा | — | पत्रा, पंचांग, पतला |
| घवदिया | — | घौंद, गुच्छा |
| होरिलवा | — | नवजात शिशु |
| जमीरिया | — | निबुआ |
| खाखर | — | खोखला, रिक्त |
| बकसब हो | — | क्षमा करो |
| पतरेंगवा | — | दुबला-पतला, क्षीणकाय |
| डहरिया | — | मार्ग |
| गोड़ | — | पैर |
| कोरवाँ | — | क्रोड़ में, गोद में |
| बेनिया | — | पंखा |
| धनिया | — | स्त्री |
| फूल लोढ़ना | — | फूल तोड़ना |
| लोर | — | आँसू |
| खिड़रिच | — | खंजन, वह पक्षी जो जाड़े के दिनों में अकसर मैदानों में दिखाई पड़ता है। |
| कीरियवा | — | कसम, क्रिया |
| गदेलवा | — | लड़का |
| कहलका | — | कथन, कहा हुआ |
| बेंदुली | — | सुन्दर टिकुली |

| | | |
|---|---|---|
| बज्जर केवरिया | — | दृढ़ता से बन्द दरवाजा |
| पयजनियां | — | पायल, पैजनी |
| सोहर | — | सन्तानोत्पत्ति और मांगलिक अवसरों पर गाया जानेवाला गीत। |
| भोर | — | प्रातःकाल, विवाह के अवसर पर ३-४ दिनों पूर्व से ही प्रातःकाल स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला गीत। |
| संझा | — | सायंकाल, मांगलिक अवसरों पर सांझ के समय ( स्त्रियों द्वारा ) गाया जानेवाला गीत। |
| कजली | — | वर्षा-ऋतु का लोकगीत। इसे कहीं स्त्रियाँ, कहीं पुरुष और कहीं दोनों वर्ग समवेत होकर भी गाते हैं। |
| फगुवा | — | फागुन ( होली ) के मास का गीत |
| जँतसार | — | आटे की चक्की का स्थान । चक्की चलाते समय स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला गीत। |
| निरगुन | — | विराग या शान्ति का उपदेश व्यक्त करनेवाले गीत, जिन्हें 'आध्यात्मिक' भी कह सकते हैं। |
| सोहनी | — | खेत निराते समय कृषक स्त्रियाँ जो उल्लास के गीत गाती हैं, उन्हें सोहनी या निरवाही कहते हैं। |
| रोपनी | — | धान रोपते समय जो गीत गाया जाता है उसे रोपनी कहते हैं। |

## अवधी के लोकगीत

| | | |
|---|---|---|
| होरिल | — | शिशु, होरिलवा |
| ओठँगाय | — | ढक देना, बन्द करना |
| गटइया | — | गर्दन |
| जूनि | — | संयोग, अवसर, समय |
| चरहा | — | चेहरा, चरागाह |
| जनुकु | — | जैसे, ज्यों |
| अनकना | — | चौंकना |
| हलुकइया | — | हल्का |
| आखत | — | अक्षत, चावल के कण |

| | | |
|---|---|---|
| खरौआं | — | खड़वा (कंगन) |
| गोड़हरा | — | गुड़ की मिठाई |
| जूड़ | — | ठंडा, तृप्त |
| खलुवाँ | — | नीचे |
| परग | — | पग, कदम |
| गोहराना | — | पुकारना |
| लहरा-पटोर | — | लहँगा-ओढ़नी |
| तकसिरिया | — | अपराध |
| लामी-लामी | — | लम्बी-लम्बी |
| डैलरिया | — | डाली |
| छछन | — | छलछन्द |
| पहिरइ | — | पहरने के लिए |
| डोकरिया | — | बूढ़ी स्त्री |
| मोटरी | — | गठरी |
| सामी | — | स्वामी |
| बिड़वा | — | बीड़ा, पान |
| अमलिया | — | अमल, व्यसन |

## कौरवी के लोकगीत

| | | |
|---|---|---|
| केस | — | केश, बाल |
| भन्ना | — | बहिन |
| ओगण | — | अवगुण, दोष |
| थारी | — | तुम्हारी |
| बिडारना | — | बाहर निकालना, भगाना |
| सौंड | — | रजाई |
| लापसी | — | लप्सी, पतला हलुआ |
| कणक | — | कनक, गेहूँ |
| बज्जर किवाड़ | — | बज्र कपाट,दृढ़तासे बन्द द्वार |
| सोकण | — | सौत |
| बलड़िया | — | (बल्लरी) बेल, लता |

| | | |
|---|---|---|
| रुत | — | ऋतु, मौसिम |
| बुढ़ाने | — | एक गोप का नाम |
| लाड़ी | — | स्त्री, विवाह में गाया जानेवाला गीत |
| लौंद | — | कमची, हरी लचकदार पतली डंडी |
| सूँडा-सूड़ | — | जोर की मार |
| कनी | — | कीकड़ का गोंद |
| पीतस | — | पितृश्वसा |
| म्हूँ-मसकोड़े | — | मुंह बनाना |
| नवी | — | नयी |

**सांझी के गीत**—सांझी एक देवी है। क्वार मास की प्रति संध्या को कन्या तथा सधवाएँ अपनी संग-सहेलियों के साथ मिलकर दीवार पर मिट्टी से सांझी की मूर्ति बनाती हैं और उसपर खील-बतासे चढ़ाती और कड़वे तेल के दीपक से आरती करती हैं तथा नव दुर्गा की समाप्ति पर उसे दीवार पर से छुड़ा कर नदी, कूप या सरोवर में मिला देती हैं।

**ख्याल**—यह मुसलमान धोबियों का गीत है। इस पुस्तक में जो ख्याल है, वह प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में दिल्ली की झांकी उपस्थित करता है। गीत से प्रकट है कि साधारण जनता किस भाँति विदेशी शासन से छुटकारा करने के इस प्रयत्न में आत्म-बलिदान की भावना से प्रेरित हुई थी।

**होलियाँ**—ये प्रायः लोक कवियों के रचित छंद हैं, जिनको लोकगीत की निम्न-श्रेणी ही में रक्खा जा सकता है, क्योंकि इनमें हृदय की अमिश्रित ध्वनि नहीं; अपितु मस्तिष्क की वह कारीगरी भी सम्मिलित होती है, जो लोकगीत की हार्दिकता पर आघात करती है।

**मल्होर**—ये कोल्हू के गीत हैं। रात्रि के निस्तब्ध वातावरण में कोल्हू पर काम करने वाले किसान का हृदय रस-सिक्त होकर जब उछाह भरी तान छेड़ता है, तो सारा जंगल गूँज जाता है। मल्होर, वास्तव में 'दोहा' छंद है। इनमें विशेषकर श्रृंगार और साधारणतः नीति, उपदेश तथा ज्ञान के शीतल छींटे मिलते हैं। मेरठ जिले तथा अन्य निकटवर्ती प्रदेश में गन्ना-मिलों की अधिकता हो जाने से अब कोल्हू थोड़ी जगह ही चलाये जाते हैं। अतः लोग मल्होर को भूलते जा रहे हैं।

## ब्रज के लोकगीत

| | | |
|---|---|---|
| गदका | — | डेढ़-दो हाथ का डंडा |
| ऐंपुन | — | घोली हुई हल्दी |
| वज्जुर | — | वज्र |
| कठला | — | कण्ठा |
| कुअटा | — | कुवाँ |

## बुन्देली के लोकगीत

| | | |
|---|---|---|
| वैया | — | ननद के लिए सम्बोधन |
| झझोटे | — | बीच आँगन |
| नौने | — | अच्छे |
| अक्का | — | अर्क वृक्ष |
| बेड़नी | — | बेड़ियों की स्त्री; ग्रामीण वेश्या के लिए सम्बोधन |
| पटोर | — | रेशमी वस्त्र |
| स्वाफी | — | छोटा अँगोछा |
| आजुल | — | अजा, पितामह |
| साजलू | — | समधी |
| काकुल | — | काका |
| बाकुल | — | पिता |
| गजोवरी | — | महल |
| सुचैहों | — | भरदंगा |
| खरूहरे जाय | — | बिकती फिरेगी |
| पुरियन | — | पूड़ियों से |
| लगनिया | — | जमानतदार |
| बासक | — | वासुकि, शेषनाग |
| राजोमछ | — | राजमच्छ |
| अवई | — | अभी |
| उनई | — | उठती |
| रावरन | — | महल |

धुरू — ध्रुव
कलऊ — कलियुग में
माना — कीर्ति
हार — कोटे
चिचिया — गर्दन
कोड़ी — कोढ़ी
छिड़िया — सीढ़ियाँ
मनसें — वहाँ से
हटैं परी — हट करने लगीं
लड़ायति — प्यारी
अनद्मो — नहाना
खेरा — खेर का वृक्ष
बमुरिया — बबूल
सेंती — लाठी, लोहे की छड़ी
उबारो — उठाओ ( बचाओ )
जुनइया — ज्वार
बरातरें — वटवृक्ष
अथैया — बैठक
बारी — छोटी, प्यार का सम्बोधन
ओरियल — ओलती से
घिअरा — बेटी
लोहिया — लोहा जैसी
दहिया — दही
उमाने — नाप की
चुलिया — चोली

**माता के भजन**—ये देवी की मानता (मनौती) के गीत हैं, जो खंजड़ी, ढोलक और मँजीरे पर गाये जाते हैं। देवी के बड़े कथा-मूलक गीत पँवारे कहलाते हैं।

**सुरहिन**—सुरहिन की कथा बहुत प्रचलित है। बुन्देलखण्ड के बाहर अन्य स्थानों में भी यह गीत मिलता है। इसमें पुराणों में वर्णित राजा दिलीप की उस कथा की स्पष्ट छाप है, जिसमें कामधेनु की पुत्री नंदिनी उनकी परीक्षा

लेने के लिए एक दिन मायावी सिंह उत्पन्न करती है और राजा उसकी रक्षा के लिए अपनी देह अर्पण करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। कालिदास के रघुवंश में भी हमें यह कथा मिलती है।

**पँवारा**—यहाँ पँवारा शब्द के सम्बन्ध में यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि बुन्देलखण्ड में पँवारे के नाम से जो लंबे कथा गीत प्रचलित हैं, उनमें भोज और जगद्देव परमार का विशेष वर्णन सुनने को मिलता है। अतएव यह आश्चर्य की बात नहीं कि यह पँवारा-शब्द परमार या पँवार से ही बना हो, जो अब लम्बी कथा के अर्थ में रूढ़ हो गया है।

**नौरता के गीत**—बुन्देलखण्ड में कुंवारी लड़कियाँ नवरात्रि के दिनों में, कुंवार सुदी प्रतिपक्ष से लेकर नवमी तक एक खेल खेलती हैं जो नौरता या सुअटा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि सुअटा नाम का एक दानव था जो कन्याओं का अपहरण किया करता था। उसके अत्याचार से पीड़ित होकर कन्याओं ने दुर्गा की शरण ली और उनका व्रत रखना प्रारंभ किया। इस पर दुर्गा ने प्रसन्न होकर दानव का वध किया। तब से कन्याएँ बराबर यह व्रत मनाती चली आ रही हैं। इसके लिए लड़कियां, नवरात्रि का व्रत प्रारंभ होने के एक दिन पूर्व ही, किसी एक खुले आंगन या चबूतरे को मिट्टी और गोबर से लीप कर उस पर रंग-बिरंगे चौक पूरती हैं। साथ ही दीवार के सहारे मिट्टी का सुन्दर हिमालय पर्वत बनाती हैं। उसके बनाने में रंग-बिरंगी मिट्टी से तो काम लिया ही जाता है, परन्तु उसके साथ ही वह कनेर, कुम्हड़ा और तुरई आदि के पीले फूलों से सजा भी रहता है। पर्वत के ऊपर दायें-बायें चंदा और सूरज स्थापित किये जाते हैं और उसके नीचे दो दीपक गाड़ कर दूध के कुंड बनाये जाते हैं। उनमें दूब के दो छोटे गुच्छे पड़े रहते हैं। हिमालय के ऊपर ही दीवार के सहारे सुअटी की मूर्ति बनी रहती है। यह मूर्ति कुछ स्थानों पर बनायी जाती है और कुछ पर नहीं।

खेलते समय प्रतिदिन सुअटा का आवाहन किया जाता है और उसके लिए गैल लीप दी जाती है। प्रथम चार दिन तो लड़कियाँ दूब और पानी से उसकी पूजा करती हैं। शेष पाँच दिन दूध और कछ के फूल काम में लाये जाते हैं। अंतिम पाँच दिनों तक प्रत्येक लड़की अपनी-अपनी गौर की मूर्ति बना कर लाती हैं। यह पूजन प्रारंभ के सात दिनों तक तो प्रातःकाल और अष्टमी के दिन संध्या समय होता है। उस दिन लड़कियाँ उबाले हुए चने, जिन्हें मसूसा कहते हैं, सुअटा को भोग लगाकर यह कहती हैं कि 'हमारी गौर को पेट

पिरानों सबरे लड़ुआ भसकूं खाती हैं। इसके दूसरे दिन नवमी को विशेष पकवान तथा मलियों से पूजा की जाती है। इन मलियों में खुरमी भरी जाती है।

बालिकाओं के समूह में जो सबसे बड़ी होती है, वह लड़की सुअटा खेलते समय दूब की सहायता से दुग्ध कुंड में से दूध लेकर उपस्थित बालिकाओं में से एक-एक का नाम लेकर उस पर अर्घ्य छोड़ती जाती है। और गीत गाती हैं। इसे कार्य डालना कहते हैं। आठ दिनों बराबर नाना प्रकार के गीत गाये जाते हैं, जो बड़े मधुर और आकर्षक होते हैं। इनमें प्रायः हिमाचल और उनकी पुत्री गौरा का नाम आता है। लड़कियां उनमें स्थान स्थान पर उपस्थित कुमारियों तथा उनके भाइयों के नाम मिला-मिला कर गाती जाती हैं। ये गीत बुन्देलखण्ड के विभिन्न स्थानों में विभिन्न प्रकार से सुनने को मिलते हैं। इनकी कुल संख्या ५० के लगभग होगी। पुस्तक में जो गीत दिये जा रहे हैं उनमें पहला गीत कार्य डालने का है। शेष अन्य अवसर के।

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह खेल दुर्गा पूजा से संबंधित लड़कियों के किसी एक प्राचीन व्रत या अनुष्ठान की परम्परा का द्योतक है और यह नौरता शब्द भी 'नवरात्रि' का ही अपभ्रंश है।

✓ **मामुलिया**—नौरता की तरह मामुलिया भी लड़कियों का एक गीतमय खेल है, जो भादों के महीने में खेला जाता है। इसके लिए बीच आँगन में एक थोड़े से स्थान को गोबर से लीप कर उसमें एक गोल चौक पूरा जाता है और उसके मध्य में बबूल की एक काँटेदार शाखा रोपी जाती है। यह बबूल की शाखा ही मामुलिया कहलाती है इसे आँगन में रोप चुकने के बाद हल्दी और चावल से उसकी पूजा की जाती है और फिर उसके प्रत्येक काँटे में एक-एक फूल खोंस कर उसे नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों से सजाया जाता है। फिर भुने हुए चने, ज्वार के फूले, ककड़ी और फूट का भोग उसे चढ़ाया जाता है। तत्पश्चात् उसकी सात परिक्रमा देकर सब लड़कियाँ उसे उखाड़ कर निकट के किसी जलाशय में विसर्जित करने के लिए ले जाती हैं। इन सब क्रियाओं के समय अलग-अलग गीत गाये जाते हैं।

## गढ़वाली लोकगीत

✓ **सुदेड़ गीत**—ये विरह के गीत हैं। विरह में जब पति की याद आती है तब जो उन भावों को व्यक्त करने के लिए गीत गाये जाते हैं वे सुदेड़ गीत

कहलाते हैं। इन गीतों में गढ़वाली स्त्री की सारी करुणा सिमटी-सिकुड़ी है। समाज की भूल, नाँग ( नग्नता ), सास का दुर्व्यवहार, काम का भार, स्नेह और ममता का अभाव कुल मिलाकर इन परिस्थितियों ने ससुराल की भयंकरता बढ़ायी और इस भयंकरता ने जीवन को घेरे रखा। बाद में जब जीविका के लिए गढ़वाल के लोग बाहर जाने लगे तो इन नारियों को निज पति-वियोग का सामना करना पड़ा। परदेश गये प्रियतम के लिए संदेश, मायके की याद और गतिशील यौवन की अस्थिरता के चित्र इसीलिए गढ़वाली लोकगीतों में बहुत गहरे रंगों में अंकित हुए हैं।

**मांगल**—ये मांगलिक अवसरों पर गाये जानेवाले गीत हैं। इन गीतों में विवाह की सामान्य क्रियाओं का उल्लेख ही नहीं, कन्या की भावना, मातृपक्ष की करुणा तथा श्वशु-पक्ष का उल्लास भी व्यक्त हुआ है। इन गीतों में काव्य की मार्मिक अनुभूतियाँ मिलती हैं।

**जागर**—ये गीत इष्ट देव की भक्ति के व्यक्त स्वरूप हैं, किन्तु इनमें एक तो प्राप्ति की कामना उतनी स्पष्ट नहीं होती। इसके अतिरिक्त जागर गीतों के साथ रात्रि का जागरण ( रतजगा ) और नृत्य आवश्यक है, जबकि स्तुति गीत कभी और किसी भी मांगलिक अवसर पर गाये जा सकते हैं।

**खितरपाल**—क्षेत्रपाल गढ़वाल का भूमि-रक्षक देव है। संकलित गीत में उसे काली और रुद्र का पुत्र बताया गया है।

**हनुमान**—वीरता के देवता के रूप में हनुमान् गढ़वाल में पूजे जाते हैं। जब कभी हनुमान मनुष्य के रूप में नाचता है तो लोहे की कई लड़ियों की चाबुक के आघातों को नंगे शरीर पर साधता है।

**नगेलो**—यह नागेन्द्र भी कहलाता है। नाग-पूजा यहां बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है।

**रेमासी दवतों का फूल**—कैलास पर रेमासी के दिव्य कुसुम खिलते हैं। पार्वती उन्हें पूजा के लिए चुन-चुन कर अपना दुकूल भरती हैं। महादेव को ये कुसुम बहुत भाते हैं।

**ओंजो-झाड़ो**—दवा-दारू के बजाय तंत्र-मंत्र और देवी-देवताओं की मनौती के रोग-निवारण की प्रणाली कई जातियों में पायी जाती है, 'ओंजो झाड़ो' ( झाड़-फूंक ) भी ऐसी ही प्रथा है।

**आछरी**—यह भूतों की भाँति ही अनिष्ट के निवारण के लिए नचायी जाती हैं। आछरी शब्द संभवतः 'आसुरी' का अपभ्रंश है।

✓ **सप्तपदी**—बिवाह में (सात पद की) भाँवर देते हुए गायी जानेवाली यह सप्तपदी पत्नीत्व की ओर अग्रसर होनेवाली कन्या के विभिन्न कारणों और स्थितियों की ओर संकेत करती है ।

**छोलका**—विवाहित जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता मातृत्व में है । विवाह की क्रिया के साथ इसीलिए लड़की के आंचल में फलों का उपहार समर्पित करने की प्रथा है । इसे गोद भरना भी कहते हैं । लक्ष्मी, सावित्री, पार्वती आदि से पुत्रों का वरदान माँगा जाता है । कहीं इस प्रथा को 'अंचला' ( अंचरा ) भी कहा जाता है, जो आँचल का पर्याय है ।

✓ **छोपती**—ये गीत अवगढ़वाल के खाई-जौनपुर क्षेत्र तक ही सीमित हैं । छोपती स्त्री-पुरुषों का मंडल नृत्य होता है । इसमें पहले और तीसरे नर्तक के हाथ दूसरे की कमर के पीछे जुड़े होते हैं और दूसरे तथा चौथे के तीसरे की कमर के पीछे । हाथों की वृत्ताकार श्रृंखला के भीतर नर्तक कंधे से कंधा मिलाकर जुड़े रहते हैं । इस स्थिति में पैरों की दो कदम आगे, एक कदम पीछे की गति के साथ जो नृत्य होता है उसके साथ गाये जानेवाले लोकगीत भी 'छोपती' ही कहलाते हैं ।

छोपती गीत मुख्यत: रूप और प्रणय माधुरी के गीत होते हैं, बारी-बारी से स्त्री और पुरुषों का समूह एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर-प्रत्युत्तर देता जाता है । एक समूह की कही गयी अंतिम पंक्ति को दूसरा समूह दुहरा कर अपनी बात कहता है । इसके अतिरिक्त हर एक छोपती की अपनी एक टेक होती है, जो हर वक्त दुहरायी जाती है और जिसको किसी भी स्थिति में बदला नहीं जाता है ।

✓ **लामण**—ये प्रेमगीत हैं । यों तो बाजूबन्द, छोपती आदि गीतों का विषय भी प्रेम ही है, किन्तु बाजूबन्द और छोपती में संवाद होते हैं । इनमें भी बाजूबन्द बन में गाये जाते हैं और छोपती और लामण विशेष अवसरों पर नृत्य के साथ सम्पन्न होते हैं । शैली, छंद और लय की दृष्टि से भी वे अलग अलग ठहरते हैं । लामण का विषय, यद्यपि छोपती और बाजूबन्द की भाँति प्रेम ही है, किन्तु उसकी शैली, छन्द और लय सर्वथा अपनी है, जिसके कारण लोक-बुद्धि ने उसका एक पृथक् अस्तित्व माना है ।

लामण गीतों में तुक मिलाने के लिए निरर्थक पंक्ति नहीं जोड़ी गयी हैं, वरन् दोनों पंक्तियां कविता की भाँति सार्थक और तुकांत हैं ।

✓ **बासंती**—गढ़वाल के कई भागों में बसंत पंचमी के अवसर पर जौ की

हरियाली बाँटते हुए बसन्त के स्वागत और शोभा के गीत घर-घर में गाये जाते हैं। चैत के महीने भर कुमारी कन्यायें फ्यूँली के फूल चुनकर सुबह सुबह घर की देहलियों पर डाल जाती हैं और बसंत के स्वागत में बासंती गीत गाती है।

**बाजूबन्द**—बाजूबन्द गढ़वाल का प्रसिद्ध लोक-गीत है। वह दो स्त्री-पुरुषों का गीतात्मक प्रम-संवाद है।

**छूड़ा**—ये मूलतः सूक्ति-पूर्ण नीति-गीत हैं। इनमें जीवन के गहरे अनुभवों की अभिव्यक्ति मिलती है। मानवीय आचरण के विविध पक्षों को छूते हुए जीवन के सत्यों की अनुभव-जन्य व्याख्या, वर्जना और व्यावहारिक उपदेश इन गीतों का मुख्य विषय है। इसके साथ ही कहावतों की भाँति किसी भाव को अभिव्यक्ति के कौशल के साथ प्रस्तुत करन की प्रवृत्ति भी इनमें परिलक्षित होती है।

**छूड़े**—वास्तव में, चरवाहों के गीत हैं। गढ़वाल के बहुत से भागों में भेड़ें पाली जाती हैं। खाई जैसे क्षेत्रों में जहाँ भेड़-पालन मुख्य व्यवसाय है, ये छूड़े भेड़-पालकों के जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति करते हैं। इन गीतों में भेड़ों के प्रति ममत्व, भेड़ पालनेवाले के जीवन की कठिनाइयों और वहाँ की प्राकृतिक शोभा के अनेक आकर्षक और मनोरम चित्र मिलते हैं।

---:o:---

## शुद्धि-पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २०९ | २४ | . | हैं। |
| २१० | ९ | श्रीगली | सगली |
| २११ | २ | नैन | तन |
| २११ | २ | श्रीगली | सगली |
| २१४ | १६ | म | मांजा |
| २१८ | ६ | परबि | पूरबि |
| २१८ | ६ | द्यों लौ | द्योंलौ |
| २१८ | ८ | ईजर | ईजूर |
| २१९ | ५ | छतर | छत्तर |
| २१९ | ५ | " | " |
| २१९ | ६ | जावी | जाली |
| २१९ | ६ | होली ले | हो झुलीं ले |
| २१९ | ७ | जौब | जौल |
| २१९ | ८ | अजुबा | अजुबी |
| २२१ | ११ | बालख | बालक |
| २२३ | १० | अंचला | आँचला |
| २२६ | १४ | चिकन | चिचन |
| २३० | १२ | बसी | कसी |